चंद्रकांता की कहानियों में युगबोध

HIN-675 शोध प्रबंध

श्रेयांक: 16

स्नातकोत्तर कला (हिंदी)

की उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध

शोधार्थी

सुविध्या उर्फ लालन सदानंद नाईक

अनुक्रमांक: 22P0140018

PR Number: 201809245

मार्गदर्शक

डॉ. वृषाली मांद्रेकर

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य संकाय

हिंदी अध्ययन शाखा

गोवा विश्वविद्यालय

अप्रैल 2024

परीक्षक: प्रो. वृषाली मांद्रेकर

Seal of the School

DECLARATION BY STUDENT

I hereby declare that the data presented in this Dissertation report entitled, "Chandrakanta ki kahaniyon mein yugbodh" is based on the results of investigations carried out by me in the Discipline of Hindi at Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University under the Supervision of Prof. Vrushali Mandrekar and the same has not been submitted elsewhere for the award of a degree or diploma by me. Further, I understand that Goa University or its authorities will be not be responsible for the correctness of observations/experimental or other findings given the dissertation. I hereby authorize the University authorities to upload this dissertation on the dissertation repository or anywhere else as the UGC regulations demand and make it available to any one as needed.

Suvidhya Alias Lalan Sadanand Naik

22P0140018

Date: 16th April 2024

Place: Goa University

COMPLETION CERTIFICATE

This is to certify that the dissertation report "Chandrakanta ki kahaniyon mein yugbodh" is a bonafide work carried out by Ms. Suvidhya Alias Lalan Sadanand Naik under my supervision in partial fulfilment of the requirements for the award of the degree of Master of Arts in the Discipline of Hindi at the Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University.

Prof. Vrushali Mandrekar

Prof. Anuradha Wagle

Dean. SGSLL, Goa University

School Stamp

Date: 16th April 2024

Place: Goa University

ATMANIRBHAR BHARAT
SWAYAMPURNA GOA

गोंय विद्यापीठ
ताळगांव पठार,
गोंय – ४०३ २०६
फोन : +९१-८६६९६०९०४८

(Accredited by NAAC)

Goa University
Taleigao Plateau, Goa-403 206
Tel : +91-8669609048
Email : registrar@unigoa.ac.in
Website : www.unigoa.ac.in

Ref. No.: GU/LIB/ATTENDANCE CERT./2024/248

Date: 03/05/2024

TO WHOM SO EVER IT MAY CONCERN

This is to certify that Miss Suvidhya a/s Lalan Sadanand Naik a student of Goa University, M.A. (Hindi), visited the Goa University Library for her reference work on the following dates and completed 58 Hours & 6 Minutes of research internship as a part of her M.A. dissertation.

The detailed dates and times she visited are attached herewith.

This certificate has been issued at the written request of Professor Dr. Vrushali Mandrekar

3/5/24

University Librarian
(Dr. Sandesh B. Dessai)

Dr. Sandesh B. Dessai
UNIVERSITY LIBRARIAN
Goa University
Taleigao - Goa.

GOA UNIVERSITY LIBRARY GOA

VISITS TO GOA UNIVERSITY LIBRARY

SR.NO.	DATE	TIMING	TIME SPENT
1.	19/6/23	1:18pm - 1:42pm	24min
2.	27/06/23	9:34am – 11:00am	1 hr 26 min
3.	4/7/23	1:50pm – 2:58pm	1hr 8min
4.	10/7/23	3:48pm – 3:20pm	32min
5.	12/7/23	1:42pm – 3:00pm	1hr 18min
6.	14/7/23	12:58pm – 1:25pm	27min
7.	21/7/23	11:13am – 4:35pm	5hr 22min
8.	25/7/23	3:51pm – 4:58pm	1hr 7min
9.	28/7/23	9:43am – 10:16am	33min
10.	2/8/23	3:27pm – 4:40pm	1hr 13min
11.	9/8/23	9:40am – 9:41am	1 min
12.	16/8/23	11:50am – 12:00pm	10min
13.	17/8/23	4:40pm – 4:43pm	3min
14.	18/8/23	2:25pm – 4:25pm	2hr
15.	25/8/23	9:30am – 9:35am	5min
16.	28/8/23	4:00pm to 4:50pm	50min
17.	2/9/23	12:23pm – 12:50pm	27min
18.	4/9/23	12:35pm - 2:10pm	1hr 35min
19.	7/9/23	11:50am – 4:25pm	4hr 35min
20.	12/9/23	3:20pm – 4:25pm	1hr 5min
21.	27/9/23	10:10am – 11:55am	1hr 45min
22.	6/10/23	11:36am – 11:55am	19min
23.	20/10/23	3:15pm – 3:20pm	5min
24.	23/10/23	2:00pm 3:44pm	1hr 44min
25.	25/10/23	10:25am – 2:15pm	3hr 50min
26.	30/11/23	11:34am – 11:39	5min
27.	14/12/23	1:33pm – 1:55pm	22min
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

40.	23/4/24	4:30pm – 4:47pm	17min
41.	25/4/24	1:00pm – 5:25pm	4hr 25min
	Total hours		**58 Hours 6 Minutes**

Signature of the Guide
(Prof. Dr. Vrushali Mandrekar)

Signature of the University Librarian
Dr. Sandesh B. Dessai

Signature of the Student
Miss Suvidhya a/s Lalan Sadanand Naik

अनुक्रम

अध्याय	विवरण	पृष्ठ संख्या
	Acknowledgements	ii & iv
	अनुक्रम	v-viii
	कृतज्ञता, भूमिका	Ix & xiii
1	प्रथम अध्याय युगबोध स्वरूप एवं विविध आयाम 1.1 अर्थ एवं स्वरुप 1.2 युगबोध के विविध आयाम 1.2.1 सामाजिक बोध 1.2.2 सांस्कृतिक बोध 1.2.3 धार्मिक बोध 1.2.4 आर्थिक बोध 1.2.5 राजनीतिक बोध	Page no.01 to Page no. 19
2	द्वितीय अध्याय चंद्रकांता की कहानियों में सामाजिक, सांस्कृतिक एंव धार्मिक बोध 2.1 सामाजिक बोध 2.1.1 पारिवारिकता	Page no. 20 to Page no. 75

	2.1.2 दांपत्य जीवन 2.1.3 विवाह संबंधित समस्याएं 2.1.4 पितृसत्तात्मक समाज 2.1.5 स्त्री शोषण 2.1.6 मानवीय मूल्यों का विघटन 2.1.7 न्याय व्यवस्था 2.1.8 मानसिक तनाव 2.1.9 पाश्चात्य जीवन के प्रति आकर्षण 2.1.10 मातृत्व की भावना 2.1.11 वृध्दावस्था की पीड़ा 2.2 सांस्कृतिक एवं धार्मिक बोध 2.2.1 भारतीय संस्कृति 2.2.2 अंधविश्वास	
3	तृतीय अध्याय चंद्रकांता की कहानियों में आर्थिक एवं राजनीतिक बोध 3.1 आर्थिक युगबोध 3.1.1 बेरोज़गारी 3.1.2 आर्थिक तंगी 3.1.3 आर्थिक शोषण 3.2 राजनीतिक युगबोध	Page no. 76 to Page no. 101

	3.2.1 आतंकवाद	
4	चतुर्थ अध्याय चंद्रकांता की कहानियों में भाषिक संरचना 4.1 भाषा 4.1.1 शब्द 4.1.1.1 तत्सम शब्द 4.1.1.2 तद्भव शब्द 4.1.1.3 देशज शब्द 4.1.1.4 विदेशी शब्द 4.1.1.5 शब्द-युग्म 4.1.2 मुहावरे, कहावते तथा लोकोत्तियां 4.1.3 सूक्ति प्रयोग 4.1.4 बिम्बात्मकता 4.1.5 प्रतिकात्मकता 4.1.6 व्यंग्यात्मकता 4.2 शैली 4.2.1 वर्णनात्मक शैली 4.2.2 चित्रात्मक शैली 4.2.3 पूर्वदीप्ति शैली 4.2.4 संवादात्मक शैली	Page no. 102 to Page no. 130

	उपसंहार संदर्भ	Page no. 131 to Page no. 136

कृतज्ञता

किसी भी कार्य को संपन्न करने तथा उस कार्य में सफ़लता प्राप्त करने के लिए योग्य मार्गदर्शक की आवश्यकता होती है। उत्तम मार्गदर्शक ही हमें सहीं दिशा की ओर अग्रसर कर सकता है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध जिसका विषय है, 'चंद्रकांता की कहानियों में युगबोध' संभव नहीं हो पाता यदि इस कार्य के लिए मुझे योग्य मार्गदर्शिका नहीं मिली होती। यह लघु शोध प्रबंध शोध निर्देशक डॉ. वृषाली मांद्रेकर जी के मार्गदर्शन में हुआ है। आपके प्रोत्साहन और सहयोग के बिना यह कार्य संभव नहीं था। मैं आपके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ कि इस कार्य में मुझे आपका सहयोग तथा उचित मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। पुस्तकों को ढूँढने, समय-समय पर मार्गदर्शन करने, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने के लिए मैं आपकी आभारी हूँ।

साथ ही हिंदी अध्ययन शाखा के निदेशक डॉ. बिपिन तिवारी जी के प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने इस कार्य को संपन्न करने में मुझे मार्गदर्शन किया। विषय संबंधित कुछ पुस्तके मेरे साथ साझा करने तथा सदैव प्रोत्साहित करने के लिए मैं आपकी आभारी हूँ। उसी प्रकार हिंदी विभाग के अन्य प्राध्यापक आदित्य भांगी, दीपक वरक, ममता वेर्लेकर, श्वेता गोवेकर तथा मनीषा गावस जी ने भी इस कार्य को सफ़ल बनाने में मुझे अपना सहयोग दिया। उन सभी के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

मेरे जीवन के हर पढ़ाव में जिन्होंने मेरा साथ निभाया, पथ-प्रदर्शन किया, मेरी हिम्मत बने रहे तथा मुझ पर विश्वास रखने के लिए, मैं मेरे परिवार का तहे दिल से शुक्रिया अदा करती

हूँ। साथ ही मेरे विद्यार्थी मित्रों, दोस्तों और मेरे शुभचिंतकों के प्रति भी में कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

इसके अतिरिक्त गोवा विश्वविद्यालय ग्रंथालय तथा कृष्णदास शामा ग्रंथालय,पणजी से भी मुझे सहायता प्राप्त हुई। वहां के कर्मचारीयों ने मुझे योग्य सहयोग दिया। साथ ही प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में जिन्होंने भी इस कार्य को सफल बनाने में मेरा सहयोग दिया, उनकी मैं सदैव ऋणी रहूँगी।

x

भूमिका

साहित्य, समाज तथा युग का एक दूसरे से परस्पर संबंध होता है। समाज एवं व्यक्ति साहित्य का केंद्र बिंदु होते हैं, जिसके फलस्वरूप उस समय के युगीन परिवेश से परिचित हो सकते हैं। समाज युगीन परिवेश का आधार स्तंभ है। समाज में व्याप्त विभिन्न परिस्थितियां युग का बोध करवाती हैं । सामाजिक व्यवस्था में रूढ़ियाँ, परंपरा, विचारधारा, संस्कृति आदि सभी का समावेश होता हैं । इनके अनुरूप ही किसी भी काल के युगबोध का अध्ययन किया जा सकता है। साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से संपूर्ण युग का चित्र हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है। अतः साहित्यकार अपने युग के प्रति सदैव सचेत रहता है।

समकालीन लेखिकां कहानीकारों में चन्द्रकांता का नाम चर्चित रहा है। उनका साहित्य उनके समय का सच्चा दस्तावेज है। सामाजिक विसंगतियो को उजागर करना उनका उद्देश्य रहा है। उनकी कहानियाँ उनके समय के समाज का चित्र उभारता है। वे सदैव अपने समाज के प्रति जागृत रही है। उनकी कहानियों में न केवल विभिन्न विषयों की पुष्टि की गई हैं , अपितु भाषिक संरचना से भी वे समृद्ध है। प्रस्तुत लघु प्रबंध में चंद्रकांता की कहानियों में युगबोध का विवेचन, विश्लेषण एवं मूल्यांकन का प्रयास किया गया है। इस अध्ययन को पांच अध्यायओं में विभाजित किया गया है ।

प्रथम अध्याय में युगबोध के स्वरूप एवं विविध आयामों का सैद्धांतिक विवेचन किया गया है। इसके अंतर्गत युगबोध के अर्थ तथा स्वरूप का अध्ययन किया गया है। क्योंकि कहानियों में व्याप्त युगबोध को समझने के लिए सर्वप्रथम युगबोध के अर्थ को समझना आवश्यक है। युगबोध के विभिन्न आयाम जैसे- सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक,

आर्थिक तथा राजनीतिक बोध का भी अध्ययन किया गया है। इनके अर्थ एवं संबंध को विस्तृत रूप से समझा गया है।

द्वितीय अध्याय में चंद्रकांता जी के कहानियों में व्याप्त सामाजिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक बोध का चिंतनपरक विवेचन-विश्लेषण किया गया हैं । सामाजिक बोध के अंतर्गत पारिवारिकता, दाम्पत्य जीवन, मानसिक तनाव, विवाह संबंधित समस्या, पुरुष प्रधान समाज, न्याय व्यवस्था, स्त्री शोषण, विदेशी आकर्षण, मातृत्व की भावना, मानवीय मूल्यों का विघटन, वृद्ध विमर्श तथा पाश्चात्य जीवन के प्रति आकर्षण आदि उपशीर्षकों के अंतर्गत सामाजिक बोध का कथ्यगत विवेचन करते हुए सामाजिक समस्याओं का विस्तृत चित्रण किया हैं । सांस्कृतिक और धार्मिक बोध में भारतीय संस्कृति को दर्शाया है तथा अंधविश्वास पर आधारित रूढ़ियों का चिंतनपरक विवेचन किया गया है ।

तृतीय अध्याय में कहानियों में निहित आर्थिक एवं राजनीतिक बोध का अध्ययन किया गया है। आर्थिक बोध के अंतर्गत बेरोजगारी, आर्थिक तंगी तथा आर्थिक शोषण की समस्या को सोदाहरण स्पष्ट किया गया है। राजनीतिक बोध में बढ़ती आतंकवाद की समस्या का विश्लेषण किया गया है।

चतुर्थ अध्याय चंद्रकांता की भाषिक संरचना से संबंधित है। इसके अंतर्गत भाषा और शैली की दृष्टि से चंद्रकांता की भाषा का अध्ययन किया गया है। भाषा में तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी शब्दों, शब्द- युग्म, मुहावरे, कहावते, लोकोक्तियां, व्यंग्यात्मकता, बिंब विधान तथा सूक्ति प्रयोगों का उदाहरणसहित स्पष्टीकरण दिया गया है। शैली के

अंतर्गत वर्णनात्मक, चित्रात्मक, पूर्वदीप्ति तथा संवादात्मक शैलियों का भी विवेचन किया है।

पंचम अध्याय में उपसंहार के अंतर्गत चंद्रकांता की कहानियों में युगबोध को दृष्टि में रखकर निष्कर्ष की प्रस्तुति की गई है।

मुझे विश्वास है कि प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध चंद्रकांता की कहानियों में युगबोध को समझने में सफ़ल सिद्ध होगा। साथ ही इसके माध्यम से आज की वर्तमान परिस्थितियों के साथ भी सामंजस्य स्थापित होगा। इस लघु शोध कार्य में चंद्रकांता के पांच कहानी संग्रहों में से चयनित कहानियों पर युगबोध की दृष्टि से अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

प्रथम अध्याय

युगबोध: स्वरुप एवं विविध आयाम

1. युगबोधः स्वरुप एवं विविध आयाम

साहित्य में काल तथा समसामयिक परिस्थितियों का परस्पर घनिष्ठ संबंध होता हैं। जिसके आधार पर ही रचनाकार साहित्य का सृजन करता है। सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक तथा राजनीतिक परिवेश के प्रभाव से प्रभावित रचनाकार समसामयिक स्थितियों को केंद्र में रखकर अपनी विचारधारा से साहित्य का सृजन करता हैं। समय सदैव परिवर्तनशील तथा विकासशील रहा है। अतः समय के अनुसार व्यावहारिक तथा वैचारिक दृष्टि से इस युगीन परीवेश में भी परिवर्तन आ जाता है।

1.1 अर्थ एवं स्वरुप

साहित्यकार द्वारा सृजित साहित्य हमे उस विशिष्ट युग के परिवेश का बोध कराता है। उसमें स्थित परिस्थितियां, घटनाएं, विचारधारा, संघर्ष, लोक जीवन, आदि सभी उस युग को समझने के लिए महत्वपूर्ण घटक हैं। जिसके माध्यम से हम उस युग की सफलताओं और असफलताओं को जान लेते हैं। किसी भी साहित्य को समझने के लिए सर्व प्रथम आवश्यक है कि उसके परिवेश को समझा जाए क्योंकि परिवेश को आत्मसात करने के उपरांत ही हम उससे संबंधित अन्य बिंदुओं का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। अतः साहित्य को समझने के लिए युगीन समसामयिक परिस्थितियों का ज्ञान होना आवश्यक होता हैं।

प्रत्येक साहित्य्र अपने युग का दर्पण होता है। 'युग' को अंग्रेजी भाषा में 'era', 'period' कहते हैं, जिसका अर्थ है - इतिहास का एक कालखंड या युग। हिंदी शब्दकोश के अनुसार युग

का अर्थ- "काल तथा समय।"[1] उसे "काल, अवधी या बारह वर्ष का काल भी कहा जा सकता है। पुराण के अनुसार युग काल गणना के विचार से कल्प का चार उपविभागों में से प्रत्येक सत, त्रेता, द्वापर और कली हैं।"[2]

हर एक व्यक्ति का अपना दृष्टिकोण होता है। 'युग' शब्द को विविध अर्थों में ग्रहण कर सकते हैं। "भारतीय विचारकों के मतानुसार सामाजिक दृष्टि से काल को व्यक्त करने की 'कल्प', 'मन्वन्तर' तथा 'युग' महत्वपुर्ण ईकाइयां मानी जाती रही हैं। 'युग' शब्द स्वयं में काल सापेक्ष है क्योंकि परंपरागत मान्यता के अनुसार मनुष्यों का युग देवताओं की एक रात और दिन होता हैं तथा देवताओं का युग प्रजापती का एक अहोरात्र होता है। युग शब्द अपनी व्याप्ति में संपुर्ण मानव संस्कृति का काल सापेक्ष अर्थ देता है।"[3]

युग का 'व्यक्ति, घटना तथा काल' से भी परस्पर संबंध होता हैं। व्यक्ति के महत्वपूर्ण योगदान अथवा उसके द्वारा किसी विशिष्ठ कार्य के आरंभ के कारण युग का नाम व्यक्ति से संबंधित हो सकता है। जैसे साहित्य में भारतेंदू हरिशचंद्र के योगदान के कारण उनके समय को 'भारतेंदु युग' नाम से जाना गया। इसके अन्य उदाहरण जैसे- द्विवेदी युग, शुक्ल युग, आदि। 'घटना' भी युग का एक आधार स्तंभ है। यदि किसी समय में किसी राजनीतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक घटना का व्यापक प्रभाव समाज पर होता है, तो युग को उस घटना के नाम से जाना जाता है, जैसे- रामायण युग, महाभारत युग, आदि। युग काल पर भी आधारित होता है। भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों ने शुरुआत से लेकर अब तक के समय को कालखंड में

विभाजित किया है, जैसे- आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल, आदि। अतः युग इतिहास का वह लंबा कालखंड है, जहां महत्वपूर्ण घटनाओं की व्याप्ति रही हैं।

युग से जुड़ा दूसरा शब्द 'बोध' है। इसे अंग्रेजी भाषा में 'sense', 'cognition', 'tenor', 'knowledge', आदि संदर्भों में जाना जाता हैं। इसका कोशगत अर्थ- ''बोध, ज्ञान, जानकारी, जानना।''[4] 'चेतना' को भी बोध के समान ही प्रयोग में लाया जाता है, क्योंकि दोनों के अर्थों में समानता दिखाई देती हैं। किसी भी स्थिति, उसके कारण और परिणाम को भलिभाति समझना ही बोध कहलाता है। ''बोध स्वयं को और अपने आस-पास के वातावरण को समझने तथा उसकी बातों का मूल्यांकन करने की शक्ति का नाम है।''[5]

मनुष्य प्रकृति से ज़ुडा हुआ है। प्रकृति के सानिध्य में उसे जीवन के महत्वपूर्ण मूल्य प्राप्त होते हैं, जैसे- सेवा, त्याग, प्रेम, ममता, आदि। ''वैज्ञानिक भौतिकवाद के अनुसार मनुष्य प्रकृति की उपज और बोध मस्तिष्क में निहित पदार्थ का गुण है। अतः प्रकृति के अंश का एक गुण है।''[6] समझने या जानने की शक्ति हम में बचपन से ही होती है, किंतु समय के अनुरूप वह विकसित होती रहती है। व्यक्ति के जीवन में बोध महत्वपुर्ण भूमिका निभाता है। उसी के आधार पर व्यक्ति विभिन्न अनुभवों से परिचित हो पाता हैं। विविध विषयों से संबंधित ज्ञान, किसी के प्रति प्रेम, घृणा की भावना तथा कोई भी कार्य या गतिविधी बोध पर ही निर्भर रहती है। अतः 'बोध' शब्द से तात्पर्य किसी विषय, परिस्थिति, विचारधारा को समझना, जानना, आत्मसात करना या ज्ञान प्राप्त करना हैं।

'युग और बोध' इन दोनों शब्दों के मिलाप से ही 'युगबोध' शब्द बनता है। "युगबोध दो शब्दों के संयोग से निष्पन्न वह शब्द युग्म है, जिसे सामान्य बोल चाल की भाषा में समसामयिक परिस्थितियों का परिज्ञान कह सकते हैं।"[7] कोशगत अर्थ के अनुसार- "किसी युग की स्थिति, महत्व और आवश्यकता आदि की जानकारी युगबोध कहलाता है।"[8] नालंदा विशाल शब्द सागर के अनुसार- "इतिहास का कोई ऐसा बड़ा कालखंड जिसमें बराबर एक ही प्रकार के कार्य, घटनाएं आदि होती रहीं हों, युगचेतना या युगबोध कहलाता है।"[9] सामान्यतः युगबोध से युग की परिस्थितियों, मान्यताओं, धारणाओं, विचारों, व्यवस्थाओं आदि का बोध होता हैं। निर्धारित समय अथवा कालखंड की महत्वपुर्ण घटनाओं के संदर्भो में ज्ञान प्राप्त करना तथा समझना 'युगबोध' है। किसी विशिष्ठ काल की अभिव्यक्ति ही 'युगबोध' कहलता है।

समय की हमेशा से ही परिवर्तनशील प्रवृत्ति रही है। इसका मुख्य कारण मानवीय चिंतन तथा धारणाएं हैं। प्रत्येक देश, समाज अथवा धर्म की अपनी मान्यताएं होती हैं, जो युग के विकास के साथ बदलती चली जाती हैं। अतः किसी विशिष्ट युग की अपनी विशेषता होती है। वही उस युग की प्रवृत्ति के रुप में उभरती है। युगबोध संपूर्ण मानव संस्कृति को दर्शाता है। "साहित्य में कई प्रकार की अनुभूतियां, काव्यानुभूति, रसानुभूति, भावानुभूति, विरहानुभूति, सहानुभूति तथा सौन्दर्यानुभूति प्राप्त होती हैं।"[10] इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि साहित्य के कारण ही विभिन्न तरह की अनुभूतियां हमे प्राप्त होती हैं, जो वैचारिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। "युग निर्माण में जन-चिंतन का हाथ रहता है। मनुष्य जब देखता है कि किसी अव्यवस्था से सामाजिक पतन हो रहा है और सभ्यता काल संस्कृति का विकास अवरूद्ध हो रहा है, तब आत्मान्वेषण की ओर

मुड़ता है। आत्मान्वेषण ही आगे चलकर सामाजिक परिवर्तन या सामाजिक उत्थान में परिणत हो जाता है। एक-एक व्यक्ति के परिवर्तित होने से संपूर्ण समाज बदल जाता है। युग के व्यक्ति का यह बदलाव ही नव युग के निर्माण का आधार होता है।"[11] एक युग दूसरे युग के समान नहीं होता अपितु एक-दूसरे से अलग होता है। दोनो में विचारधारा, मान्यता तथा धारणाओं की विषमता रहती हैं। दिनकर जी कहते है- "नया युग प्रारंभ होता है, वह युद्ध के कारण प्रारंभ नही होता, पराजय या विजय के कारण आरंभ नहीं होता, क्रांति के कारण आरंभ नहीं होता, न देश के बदलने से आरंभ होता, नया युग बराबर नये लोगों के जन्म के साथ उदित होता है।"[12] हर एक युग में नई विचारधारा का जन्म होता है। इस विचारधारा को समझने में युग की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक तथा राजनीतिक परिस्थितियां महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इनके माध्यम से किसी भी युगबोध को समझने-परखने की हमारी दृष्टि व्यापक बन जाती है।

1.2 युगबोध के विविध आयाम

साहित्यकार और समाज के विशिष्ट संबंध को उनका साहित्य स्पष्ट करता है। रचनाकार समाज में व्याप्त विभिन्न विषयों को अपने साहित्य का केंद्र बिंदु बनाकर उनके माध्यम से लोगों को समस्याओं से अवगत कराता हैं। साथ ही अपने समय की युगीन समसामायिक परिस्थितियों, उनके महत्व, परिणामों तथा आवश्यकताओं को लोगों के समक्ष उजागर करता हैं। अतः रचनाकार का साहित्य उनके कालखंड के इर्द-गिर्द घुमता रहता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार– "प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित

प्रतिबिम्ब होता है। तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है। आदि से अंत तक इन्हीं चित्तवृत्तियों की परम्परा को परखते हुए साहित्य-परम्परा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही साहित्य का इतिहास कहलाता है। जनता की चित्तवृत्ति बहुत कुछ राजनीतिक, सामाजिक, साम्प्रदायिक तथा धार्मिक परिस्थिति के अनुसार होती है।"[13] युगबोध को विस्तृत रूप से जानने-समझने के लिए उस युग का सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक तथा राजनीतिक परिवेश का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक हैं। इन महत्वपूर्ण तत्वों के माध्यम से युगबोध को संपूर्ण रुप से समझना सरल कार्य बन जाता है।

1.2.1 सामाजिक बोध

मनुष्य के समुह द्वारा निर्मित तथा उद्देश्य रहित संस्था 'समाज' कहलाती है। अंग्रेजी में समाज को 'society' कहते है। 'समाज' शब्द संस्कृत के 'सम्' एवं 'अज' दो शब्दों के योग से बना है। सम् का अर्थ 'इकट्टा या एक साथ' तथा अज का अर्थ 'साथ रहना' है। समाज शब्द से तात्पर्य 'एक साथ रहनेवाला समूह।' वर्धा हिंदी शब्द कोश के अनुसार-"एक स्थान पर रहनेवाले लोगों का वर्ग या समुदाय, किसी विशेष उद्देश्य से स्थापित की गई संस्था या सभा, किसी संप्रदाय के लोगों का समुदाय"[14] समाज कहलाता है।

समाज से संबंधित स्थितियां, व्यक्ति तथा घटनाएं 'सामाजिक' कहलाती हैं। सामाजिक शब्द 'समाज' और 'इक' इन दो शब्दों के योग से बना है, जिसका अर्थ 'समाज से संबंधित' है। वर्धा हिंदी शब्द कोश के अनुसार "समाज से संबंध रखनेवाला, समाज संबंधी, समाज के संपर्क से होनेवाला, सभ्य"[15] सामाजिक कहलाता है। "प्राचीन काल में सभा नामक संस्था से संबंध रखनेवाले को भी सामाजिक कहा जाता था।"[16]

किसी भी युग की सामाजिक स्थिति पर उसके सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवेश का प्रभाव रहता हैं। इनके प्रभाव के अनुरूप ही समाज अपना रूप धारण करता है। समाज में मनुष्य से संबंधित विविध पहलू शामिल होते हैं। स्वातंत्रता से पूर्व काल का युग धर्म, दर्शन, राजाओं और सैनिकों के कार्यों आदि से संचालित रहा। स्वतंत्रता से पूर्व तथा स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज में बदलाव आया है। स्वातंत्र्योत्तर युग में मोहभंग, विभाजन और टूटते हुए मूल्य दिखाई देते हैं।

"यदि मानव प्रकृति को हम मूल रूप से सामाजिक मानते है, जो निश्चित ही कला और साहित्य के विभिन्न उपकरणों द्वारा अभिव्यक्ति, उसकी भावना तथा समाज की देन और अनुभूति भी मूल रूप से सामाजिक हैं। सामाजिक आवेष्टन में ही व्यक्तित्व का निर्माण होता है। व्यक्तित्व के मूल में प्राप्य मानसिक असंतुलन तथा अस्वास्थ इत्यादि हमारी सामाजिक संस्कृति में प्राप्त पारस्परिक विरोधों का प्रतिफलन हैं। यह ठीक है कि व्यक्ति के जीवन के व्यष्टि और समष्टि दोनों ही रुप हैं; परंतु आधार स्वरुप अहं (self) का विकास भी समाज में ही संभव है।"[17] भृष्टाचार, स्वार्थपरकता, असंतोष, आक्रोश, जैसी स्थितीयां उतपन्न हुई। इसके चलते

सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन आ गया। मनुष्य ने हिंसात्मक वृति धारण कर ली, जिससे समाज पर गहरा प्रभाव पड़ गया। सामान्य व्यक्ति तथा परिवार इस परिवर्तन के शिकार बनें। स्वतन्त्रता के पश्चात संयुक्त परिवार की नीव जो सदियों से चली आ रही थी, उसमें फुट पड़ गई। संयुक्त परिवार का स्थान एकल परिवार ने ले लिया। रिश्तों मे भी खटास पैदा हो गई। इस विघटन ने गाँव और शहर में अनेक समस्याओं को जन्म दिया। पुरानी तथा नई पीढी के बीच टकराहट हुई, जिससे जीवन के मूल्य बदल गए। उनके विचारों में जमीन आसमान का फर्क दिखाई देने लगा। पूर्ण व्यवस्था में परिवर्तन आ गया। केवल व्यक्ति के निजी स्वार्थ तक ही समाज सीमित हो गया। रिश्तों में कड़वाहट घुलने के कारण सभी एक दूसरे से दूर हो गए तथा अकेलेपन के शिकार होने के कारण तनाव का माहौल छा गया।

समाज में सबसे दयनीय स्थिति स्त्री की रही है। उसे प्रारम्भ से ही संघर्ष से झुंझना पड़ा। कदम-कदम पर अपने अस्तित्व के लिए वह लढती रही है। “स्वतंत्र भारत के संविधान में नारी-पुरुषों के समान अधिकार मिलना एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाएगी।”[18] स्त्री के अधिकारों के प्रति सजगता शुरू हुई। स्त्री संबंधित शिक्षा, विवाह, नौकरी, आदि स्थान पर स्त्री संबंधित जागरूकता आयी। स्त्री ने प्राचीन युग से लेकर अब तक एक दीर्घ यात्रा की है। महादेवी वर्मा इस संदर्भ में कहती है-“नारी की तुलना उन पक्षियों से की जा सकती है, जो जाल से मुक्त न होकर जाल के साथ ही आकाश में उड़ जाते हैं। बेड़ियां टूटी नहीं, रूढ़ियां छूटी नहीं परंतु उसने मुक्त आकाश का स्पर्श पा लिया है।”[19]

भारतीय संविधान के तहत समाज में निहित धर्म, जाति, वंश, लिंग, आदि के आधार पर मनुष्य में भेदभाव नहीं किया गया हैं। किंतु स्वतंत्रता के बाद समाज में छुआछुत, अस्पृश्यता आदि मान्यताओं का प्रभाव पूर्ण रूप से खत्म नहीं हुआ। व्यक्ति और समाज को सुधारने के लिए कुप्रथाएँ, अंधविश्वास तथा संकुचित धारणाओं से पर्दा उठाया गया। धीरे-धीरे बदलाव भी दिखाई दिया किंतु वैचारिक पैमाने पर अपेक्षित विकास न हो सका। पितृसत्तात्मक समाज आज भी मौजूद है, जहाँ स्त्री के जीवन के फैसले पुरुषों द्वारा लिए जाते हैं। दाम्पत्य जीवन, संयुक्त परिवार तथा आपसी रिश्तें- नातों में बिखराव की स्थिति उत्पन्न हो गई। स्त्री की स्थिति में सुधार अवश्य हुआ लेकिन विचारगत और व्यवहारगत दृष्टि से अधिक परिवर्तन दिखाई नहीं दिया।

आज के वर्तमान समय में भी इन समस्याओं का प्रभाव पूर्ण रूप से समाप्त नहीं हुआ है। मनुष्य स्वार्थी और अस्तित्वहीन होता चला जा रहा है। इस सामाजिक यथार्थ को आधुनिक युग के रचनाकारों ने लोगों के समक्ष उजागर करने का महत्वपूर्ण दायित्व निभाया हैं।

1.2.2 सांस्कृतिक बोध

संस्कृति और समाज का एक-दूसरे से घनिष्ठ संबंध हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक का सफ़र हम समाज में रहते हुए तय करते हैं। इस दौरान हम समाज में चल रही मान्यताओं, रीति रिवाजों, परंपराओं, मर्यादाओं, विभिन्न व्यवस्थाओं तथा त्योहारों से परिचित होते हैं। सामान्य रूप से

इसी को संस्कृति कहते है। संस्कृति को अंग्रेजी भाषा में 'culture' कहते है अर्थात – किसी विशेष समाज, देश आदि के रीति-रिवाज, विचार, विश्वास, उत्पादन हैं। " 'संस्कृति' शब्द की निर्मिति संस्कृत भाषा के दो शब्दों 'सम' और 'कृति' से हुई है। उसका मूल 'कृ' धातु में है जिसका अर्थ है- 'मूल क्रिया'। संस्कृत व्याकरण के अनुसार-" 'कृ' धातु में 'सम' उपसर्ग लगाकर भूषण अर्थ में 'सुट्' प्रत्यय होने से संस्कृति शब्द बनता है। इस प्रकार संस्कृति का अर्थ हुआ-शुद्ध किया हुआ, परिष्कृत एवं परिमार्जित करना। 'संस्कृति' शब्द का अर्थ वे सभी मानवीय विचार चेष्टाएँ, कर्म आदि हैं जो उसके धार्मिक, आध्यात्मिक, लौकिक, राजनैतिक क्रिया-कलापों के कारण परम्परा का रूप धारण कर लेते हैं।"[20] वर्धा हिंदी शब्द कोश जी अनुसार संस्कृति का अर्थ- "वस्तु आदि को संस्कृत रूप देने की क्रिया या भाव, परिमार्जित करना, शुद्ध या साफ करना, परंपरा से चली आ रही आचार-विचार, रहन-सहन एवं जीवन पद्धति, संस्कार, अलंकृत करना, सजाना, सभ्यता"[21] से है। डॉ. गुलाबराय के शब्दों में " 'संस्कृति' शब्द का संबंध संस्कार से है जिसका अर्थ है संशोधन करना, उत्तम बनाना, परिष्कार करना। संस्कार व्यक्ति के भी होते है और जाति के भी। जातीय संस्कारों को ही 'संस्कृति' कहते है।"[22] मनुष्य तथा परिवेश जो संस्कृति से संबंधित होता है, उसे 'सांस्कृतिक' कहा जाता है।

संस्कृति का समाज से परस्पर संबंध रहा है क्योंकि वह समाज में ही उत्पन्न होती है। "साहित्य, कला, दर्शन और धर्म से जो मूल्यवान सामग्री हमें मिल सकती हैं उसे नये जीवन के लिए ग्रहण करना, यही सांस्कृतिक कार्य को उचित दिशा और सच्ची उपयोगिता है।"[23] संस्कृति के अनुरूप ही समाज का निर्माण होता है। समय हमेशा ही परिवर्तनशील रहा है।

समाज में घटित बदलाव के अनुरुप युगीन परिस्थितियाँ भी बदलती हैं। अतः संस्कृति प्राचीनता और नवीनता को आत्मसात करते हुए विकास की ओर अग्रसर होती है। सांस्कृतिक बोध से इन सभी बातों का ज्ञान हमे प्राप्त होता हैं।

"उन्नीसवीं शताब्दी से प्रारंभ होने वाले पुनर्जागरण तथा बीसवी शताब्दी के स्वतंत्रता आंदोलन के मध्य भारतीय निरंतर अपने पिछडेपन एवं गरीबी का अहसास कराते हुए भी अतीत को गौरवपूर्ण परंपरा के उत्तराधिकार के प्रति सचेष्ट रहा है।"[24] गांधी द्वारा मानवतावाद, विश्वबंधुत्व, सत्याग्रह, आदि देश की परंपराओं से ग्रहीत तथा विकसित हुआ हैं। स्वतंत्रता के पश्चात नेहरू ने अंतरराष्ट्रियता तथा विश्वनागरिकता का सहारा लिया, जिसमें पश्चिमीकरण भारतीय संस्कृति का अंग बन गया। पश्चिमी आचार-विचार, रहन-सहन, खान-पान, आदि ने भारत में स्थित मध्यवर्गीय जीवन को प्रभावित किया।

आजादी के बाद मनुष्यों के विचारों में परिवर्तन हुआ। वैज्ञानिक उपलब्धियों से जुड़ने के कारण पश्चिमी संस्कृति को स्वीकार किया। पुरानी पिढी तथा नई पीढी के विचारों में टकराहट दिखाई देने लगी। भारतीय संस्कृति आधुनिकता की ओर अग्रसर होती जा रही है। "बूढ़े हिंदुस्तान को सजा-संवार कर दुल्हन बनाया जा रहा है। विवाह की जोर-शोर से तैयारियां हो रही हैं। अमेरिका से मेकअप मैन आया है, फ्रांस से हेयर ड्रेसर आया है, जर्मनी से बावर्ची आया है, ब्रिटेन से उधार का फर्नीचर आया हैं। घर के पुराने सामान को एक तरफ समेट कर बंद किया जा रहा है।"[25] आज की नई पीढ़ि भारत को विदेशी चाल- ढाल में ढकेल रही है। इस परिवर्तन के कारण उनके नैतिक मूल्य पतन की ओर बढ रहे हैं तथा प्राचीन संस्कृति जो भारत की

पहचान है, वह नष्ट होती जा रही है। स्वातंत्र्योत्तर युग की कहानियों में संस्कृति संबंधित परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है।

1.2.3 धार्मिक बोध

'धर्म' मानव द्वारा निर्मित है। उसका अर्थ व्यापक और विस्तृत है। वर्धा हिंदी शब्द कोश के अनुसार 'किसी व्यक्ति के लिए निश्चित किया गया कार्य व्यापार, कर्तव्य, किसी वस्तु या व्यक्ति में रहनेवाली उसकी मूल वृत्ति, प्रकृति स्वभाव, गुण, प्रवृत्ति'[26] आदि धर्म हैं। ईश्वर, परलोक आदि के संबंध में विशेष प्रकार का विश्वास और उपासना पद्धति 'धर्म' कहलाती है। डॉ. हुकुमचंद राजपाल के अनुसार "धर्म कोई ईश्वरीय मत या विश्वास नहीं और न वह किसी अलौकिक सामाजिक शक्ति से संबंधित है। वह तो केवल मनुष्य के नैतिक कर्तव्य की ओर संकेत मात्र करता है।"[27] धर्म से संबंधित स्थितियां, आस्था रखनेवाला, धर्मशील, आदि को 'धार्मिक' कहा जाता हैं।

समाज और धर्म भी एक-दूसर से जुडे हैं। सामाजिक परिवर्तन के साथ धार्मिक प्रवृत्तियां भी बदलती हैं। मानवता ही समाज का मूल धर्म है। किंतु लोगों के विचारों के अनुरूप इसका अर्थ बदल जाता है। चेतना ही एक महत्वपूर्ण घटक है, जिसके माध्यम से धार्मिक स्वरुप में परिवर्तन आ सकता है। इसे हम युगबोध के जरिए समझ सकते हैं।

वर्तमान समय में समाज वैज्ञानिकता से प्रभावित हो रहा है। मानवता लुप्त होती जा रही है। धर्म का स्वरूप जो आज दृष्टिगोचर हो रहा है, वह पूर्ण रुप से अंधविश्वास है। वह भयानक स्वरूप धारण कर रहा है। अत: आज पूरे देश में धार्मिक प्रदर्शन तथा आतंक फैला हुआ है।

साहित्यकार अंधविश्वास में जूंझते समाज को जागृत कर, उन्हें इनके प्रति सचेत करना चाहता है। धार्मिक युगबोध मनुष्य को अपने उपयुक्त कर्तव्यों का बोध करवाता है। उन्हें मानवता के धर्म की ओर ले जाना चाहता है। मानवता आज के समाज की अहम् संपत्ति है, जिसे रचनाकार आध्यात्मिक मूल्यों द्वारा पुन: जीवित करना चाहता है।

1.2.4 आर्थिक युगबोध

समाज हमेशा आर्थिक परिस्थिति से प्रभावित रहा है। 'अर्थ' सामान्यतः अर्थ व्यवस्था से संबंधित है। युगीन परिवेश में आते बदलाव का एक कारण अर्थ व्यवस्था रही है। 'अर्थ' शब्द 'अर्' और 'थ' शब्द से बना है, जिसका अर्थ 'धन' है। वर्धा हिंदी शब्दकोश के अनुसार 'अर्थ'- "अभिप्राय, मतलब, किसी बात या शब्द की व्याख्या, धन संपत्ति उपयोग लाभ, दिलचस्पी"[28] से है। 'अर्थ' से तात्पर्य- "इंद्रियों के विषय-रूप, रस, गंध, शब्द और स्पर्श"[29] हैं। सामान्यतः अर्थ से संबंधित स्थिति को 'आर्थिक' स्थिति कहते है।

समाज और अर्थ व्यवस्था का परस्पर संबंध रहा है। लोगों को जातियों में विभाजित करने का श्रेय अर्थ व्यवस्था को जाता है। गरीब लोगों को निम्न जाति और श्रीमंत लोगों को उच्च्च जाति के श्रेणी में रखा गया। जो लोग न अधिक गरीब और न अधिक श्रीमंत थे, उन्हें मध्य

जाति में रखा गया। इस प्रकार लोगों को मुख्य तीन वर्गों में विभाजित किया गया। आर्थिक व्यवस्था के अनुसार लोगों के काम भी निर्धारित किए गए। उच्च वर्ग के लोग स्वयं को शक्तिशाली तथा निम्न वर्ग को लाचार समझते और उन पर अपना हुकुम चलाते थे। अतः लोगों के बीच यह बड़े-छोटे का भाव आर्थिक व्यवस्था ने उत्पन्न किया है।

अर्थव्यवस्था ने ही लोगों के बीच भेद-भाव, मन-मुटाव उत्पन्न किया है। इससे राजनीतिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियां भी प्रभावित हुई। मजबूत आर्थिक स्थिति देश को विकास की ओर अग्रसर करती है। हमारे देश को स्वावलंबी बनाने में इसका महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

आज मानवीय मूल्य पीछे छूट रहे हैं और उसके स्थान पर धन अपनी जगह स्थिर बनाए है। केवल पूँजीपति वर्ग ही अपने साम्राज्य का विस्तार कर रहे हैं, तो दूसरी तरफ़ गरीब वर्ग और गरीब बनता चला जा रहा है। आजादी के बहुत सालों बाद भी कुछ वर्ग ऐसे हैं, जिन्हें दो वक्त के खाने के लिए जी तोड़ मेहनत करनी पड़ती हैं। समय के साथ परिस्थितियां बदलती गई, किंतु अर्थ व्यवस्था ने केवल शोषित वर्ग को ही अधिक आघात पहुंचाया। आर्थिक स्थिति से पीड़ित लोगों की व्यथा, कुंठा, दु:ख, आदि दयनीय भावों को कहानीकारों ने अभिव्यक्ति दी हैं। प्रत्येक युग के कहानीकार ने अपने समय की आर्थिक परिस्थितियों को लोगों के समक्ष उजागर करने का प्रयास किया है।

1.2.5 राजनीतिक बोध

राजनीति समाज का महत्वपूर्ण घटक है। " 'राज' एवं 'नीति' दो शब्दों के योग से राजनीति शब्द बना है।[30] 'राज' शब्द से तात्पर्य 'राज्य' तथा 'नीति' का अर्थ नियम है। अर्थात राज्य को संचलित करनेवाला नियम राजनीति है। महादेवी वर्मा के अनुसार- "उस विद्या या शास्त्र को राजनीति मानते है, जो राज्य के सांगोपांग विवेचन करता है, जिसमें राज्य के विभिन्न अंगों और प्रकारों, उसके संगठन तथा कार्य संबंधित सिंद्धांतो का अध्ययन किया जाता हैं।"[31]

समाज में मनुष्य के जीवन को व्यवस्थित रूप से सरल करने के लिए राजनीतिक चेतना का उदय हुआ है। इसकी शुरुआत घर के मुखिया से लेकर राजा तथा प्रधानमंत्री के रूप में हुई। लेकिन जब इसका आरंभ हुआ था, तब लोगों के पास अपने विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता नही थी। किंतु आज के समय में लोग अपने विचारों को स्वतन्त्र रूप से प्रस्तुत कर सकते हैं। प्रारंभ से लेकर अब तक राजनैतिक परिस्थितियों में परस्पर बदलाव देखने के लिए मिलते है। डॉ. विद्यानिवास मिश्र ने लिखा है कि-"राजनीति समझ के बिना साहित्य जीवंत नहीं होता उसी प्रकार राजनेता साहित्य को बीच-बीच में न देखे, न पढ़े तो वह कुछ छोटा आदमी, कुछ बौना आदमी होकर ही रह जायेगा।"[32]

आज लोकतंत्र की प्रणाली के कारण लोग अपनी इच्छा के अनुसार नेताओं को चुनकर ला सकते हैं। स्वयं द्वारा चयनित नेता के कार्य से यदि वे खुश नहीं है, तो वे उनका विरोध करने में भी आज सक्षम है। लेकिन इस बदलाव के साथ राजनीतिक व्यवस्था में खेदजनक परिवर्तन भी हुआ है। नेता आम जनता की भावनाओं से खेलते हैं। उनका विश्वास जीतने के लिए खोखले

आश्वासन देत हैं और विजयी होने पर इन आश्वासनों पर पानी गिरा देते हैं। यदि कोई व्यक्ति उनके खिलाफ़ आवाज उठाने का प्रयास करें तो, उन्हें पैसे देकर या धमकाकर चुप करा देते हैं। आज राजनीतिक परिस्थिति ने भयंकर रूप धारण कर लिया है। समाज में दंगे-फसाद होने के पीछे अधिकतर इन नेताओं का ही हाथ रहता है। उनके लिए हम कठपुतली हैं और वे जैसा चाहे हमें नचा सकते हैं। इनकी इसी कटुनीति को रचनाकारों ने अपनी कहानियों के माध्यम से अपने समय के शासन, राजनीतिक परिस्थितियां, नेता द्वारा किए भ्रष्टाचार आदि को लोगों के समक्ष रखकर उन्हें निरंतर जागृत करने का प्रयास किया है।

साहित्य अपने युग का साक्ष्य होता है। उसमें निहित सभी परिस्थितियों का अध्ययन करना ही युगबोध हैं। साहित्य के विषय को गहनता से समझने के लिए युगबोध का ज्ञान होना आवश्यक होता हैं।। किसी युग को बाह्य और आंतरिक रूप से समझने के लिए सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और राजनीतिक परिवेश महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनके माध्यम से युग में घटित घटना, उसका कारण तथा परिणाम सभी का बोध हमें हो जाता हैं। यह परिस्थितियां एक दूसरे से जुड़ी हुई होती हैं। अतः यह एक दूसरे को परस्पर प्रभावित करती रहती हैं।

संदर्भ

1. बाहरी, डा. हरदेव, शिक्षार्थी हिंदी शब्दकोश, पृ.683
2. सक्सेना, सं. राम प्रकाश, वर्धा हिंदी शब्दकोश, पृ. 2477
3. सिंह, डॉ. मंजुलता, हिंदी कहानी में युगबोध, पृ.1
4. प्रसाद, कालिका (संपा.). बृहत हिंदी कोश, पृ.1120
5. त्रिपाठी, डॉ. रामप्रसाद, विश्व हिंदी कोश, पृ. 282
6. शर्मा, डॉ. रामविलास, आस्था और सौंदर्य, पृ. 4
7. वर्मा, रामचंद्र, हिंदी मानक कोश, खंड-4, पृ. 144
8. सक्सेना, राम प्रकाश, वर्धा हिंदी शब्दकोश, 2001, पृ. 2477
9. नवलजी, नालंदा विशाल शब्द सागर, पृ. 1142
10. वर्मा, धीरेंद्र, हिंदी साहित्य कोश, पृ. 31
11. राधाकृष्णन, सत्य की खोज, पृ. 63
12. सिंह, दिनकर, रामधारी, साहित्यमुखी, पृ.38।
13. शुक्ल, रामचंद्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ.-3
14. सक्सेना, राम प्रकाश, वर्धा हिंदी शब्दकोश, पृ.2902
15. वही, पृ.2961
16. वही, पृ. 2961
17. क्षेमचंद सुमन, साहित्य विवेचना, पृ.15।

18. सिंह. मंजुलता, हिंदी कहानी में युगबोध, पृ. 8

19. वर्मा, महादेवी, मेरे प्रिय संभाषण, पृ. 65

20. चतुर्वेदी कुमार संतोष, भारतीय संस्कृति, पृ. 1

21. सक्सेना, राम प्रकाश, वर्धा हिंदी शब्द कोश, पृ.2853

22. डॉ. गुलाबराय, भारतीय संस्कृति, पृ. 03

23. अग्रवाल, डॉ. वासुदेवशरण, कला और संस्कृति, 2020, पृ.1

24. सिंह, डॉ. मंजुलता, हिंदी कहानी में युगबोध, पृ.15

25. विमल, प्रसाद, गंगा, आधुनिक हिंदी कहानी, पृ. 131

26. सक्सेना, राम प्रकाश, वर्धा हिंदी शब्दकोश, पृ.1505

27. राजपाल, डॉ. हुकुमचंद, आधुनिक काव्य में जीवन मूल्य, पृ. 23

28. सक्सेना, राम प्रकाश, वर्धा हिंदी शब्दकोश, पृ. 201

29. वही, पृ. 201

30. बाहरी, डॉ. हरदेव, राजपाल हिंदी शब्दकोश, पृ. 697

31. शर्मा, डॉ. महादेव प्रसाद. राजनीति के सिद्धांत, पृ.1

32. डॉ. विद्या निवास, मिश्र, साहित्य का खुला आकाश, पृ. 67-68

द्वितीय अध्याय

चंद्रकांता की कहानियों में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक बोध

2. चंद्रकांता की कहानियों में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक बोध

किसी भी साहित्य में समाज केंद्र बिंदु होता है। जिसके माध्यम से साहित्य का जन्म होता है। धर्म एवं संस्कृति समाज के महत्वपूर्ण अंग हैं। इन दोनों के समन्वय से समाज की निर्मिति होती है। वे समाज को वह शक्ति प्रदान करते हैं, जिससे समाज का विस्तार होता है। इनके मिलाप से ही समाज की जड़े मजबूत बनती हैं। अतः समाज, धर्म एवं संस्कृति का एक दूसरे से परस्पर संबंध होता हैं।

2.1 सामाजिक बोध

मनुष्य दवारा निर्मित संस्था 'समाज' कहलाती है। जिसका उद्देश्य समाज की रक्षा, हित तथा विकास हैं। यह उद्देश्य व्यक्तिगत स्तर पर न होकर सार्वजनिक होता है। शांति, एकता तथा सोहार्द समाज के आधार तत्व हैं, जिनका पालन करना आवश्यक होता है। मानव का विकास समाज में रहकर ही होता है | महादेवी वर्मा के अनुसार- "समाज ऐसे व्यक्तियों का समुह है जिससे स्वार्थी की सार्वजनिक रक्षा के लिए अपने विषम आचरणों में साम्य उत्पन्न करनेवाले कुछ सामान्य नियमों से शासित होने का समझौता कर लिया है।"[1] समाज में मनुष्य को एक-दूसरे से तादाम्य स्थापित करना होता है, तभी वे मिलजुलकर रह सकते हैं। साहित्य और समाज एक दूसरे के पूरक होते हैं। साहित्य वह दीपक है, जो समाज को उज्वल भविष्य की ओर प्रेरित

करता है। उसे प्रगति के पथ पर अग्रसर करता है। साहित्य में निहित समाज उस काल के युगीन परिवेश से भी परिचित करवाता है। इस संदर्भ में डॉ. कमला प्रसाद पाण्डेय का कथन हैं- "विश्व के किसी भी साहित्य का जन्म उस देश की सामाजिक आवश्यक्ता का प्रतिफल है। साहित्य के इतिहास के विभिन्न युग, युग विशेष के ही संदर्भ हैं। हिंदी साहित्य के इतिहास में आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल एवं आधुनिक काल साहित्य के युग हैं। इन सभी युगों की प्रेरणाभूमि समाज है।"[2] साहित्य समाज का आत्मा है, उसके बिना साहित्य का सृजन सटीक रूप से संभव नहीं है।

साहित्य अपने समय तथा समाज का साक्ष्य होता है। समाज का संपूर्ण प्रतिबिंब साहित्य में दृष्टिगोचर होता है। समाज में व्याप्त सामाजिक समस्याओं का सकारात्मक तथा नकारात्मक परिणाम हमारे समक्ष उभरता हैं। समाज की परिवर्तनशीलता उसकी सर्वश्रेष्ठ प्रवृत्ति है। समय के बीतते पड़ाव के साथ, सामाजिक परिस्थितियों में भी परिवर्तन आ जाता हैं। जिसका प्रभाव जनता की चित्तवृत्ति पर पड़ता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार – "प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है। तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है।"[3] अतः विचारधाराओं में बदलाव आ जाने से साहित्य का स्वरूप भी बदल जाता है। साहित्य में व्यक्ति एवं समाज को प्रभावित करने की अपार क्षमता होती है। इसका द्योतक साहित्यकार होता है। वह अपने युगीन -परिस्थितियों से प्रभावित होकर अपने साहित्य के द्वारा समाज को दिशा प्रदान करता है। यह उसकी सामाजिक बोध के प्रति

आत्मीयता है। सामाजिक बोध समाज में निहित समस्याओं का प्रतिफलन हैं। इससे सामाजिक विसंगतियों को दूर किया जा सकता हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में चंद्रकांता की कहानियों में समाहित सामाजिक बोध का विवेचन किया गया है।

2.1.1 पारिवारिकता

समाज की सर्वश्रेष्ठ इकाई 'परिवार' है। इसके माध्यम से व्यक्ति और समाज का समन्वय होता है। यह वहीं मुल सूत्र है, जिससे मनुष्य का व्यक्तित्व विकसित होता है। अँग्रेजी में परिवार शब्द के लिए 'फॅमिली' शब्द का प्रयोग होता है। नालंदा विशाल शब्द सागर के अनुसार – "संज्ञा पु.(सं) 1.आवरण, परिच्छेद, 2.म्यान, तलवार की ग्वौल, 3. किसी राजा या रईस के साथ उसको लेकर चलनेवाले लोग, परिषद, 4. घर के लोग, कुटुंब, कुनबा, 5. खानदान, वंश, 6. एक ही तरह की वस्तुओं का वर्ग, कुल, जाति"[4] को परिवार की संज्ञा दी गई है। परिवार को मराठी में 'कुटुंब' कहते है, जहां पति-पत्नी, उनकी संताने, बुजुर्ग सब मिलजुलकर रहते हैं। परिवार के सदस्यों के स्नेह-संबंधों के कारण पारिवारिक व्यवस्था दृढ बनी रहती है। इस संदर्भ में मृदुला सिन्हा का कथन है- "परिवार एक अवधारणा मात्र नहीं, बल्कि अनुभूति है। जिसे बनाने, संवारने और संभालने में मस्तिष्क की कम हदय की अधिक आवश्यकता होती है।"[5] परिवार में एक-दूसरे के प्रति प्रेम होना आवश्यक होता है। इससे रिश्तें मज़बुत बनते हैं।

भारत में 'वसुधैव कुटुंबकम्' की परंपरा रही है। सर्वप्रथम परिवार ही व्यक्ति को एकता के सूत्र में बांधकर रखता है तथा प्राथमिक जीवन की शिक्षा प्रदान करता है। यह बालमन पर सु-संस्कार स्थापित करने का उगम स्थान है। यहाँ से ही मनुष्य की पहचान होती है। परिवार में

व्यक्ति स्वयं को सुरक्षित महसूस करता है। "जहाँ परिवेश और व्यक्ति परिवार से तथा परिवेश, व्यक्ति और परिवार से जुड़ा रहता है, वहाँ व्यक्ति का परिवार और परिवेश से जुड़ा होना समाज सापेक्ष्य है।"[6] परिवार का प्रतिवेश उसके विकास में महत्वपुर्ण भूमिका निभाता है। उसका प्रभाव निश्चित ही परिवार के माहौल पर होता है।

भारतीय परंपरा में संयुक्त कुटुंब प्रणाली को विशेष महत्व दिया गया है। किंतु यह भारतीय समाज का कल था। संयुक्त परिवार की जड़े कमज़ोर पड रही है। वृध्दों की अवहेलना, बनावटीपन, बच्चों द्वारा परिवार की उपेक्षा, रिश्तों में तनाव, आदि ने परिवार की एकता पर प्रहार किया है। सबको साथ लेकर चलनेवाला परिवार आज टुकड़ों में बिखर रहा है। यह वर्तमान युग की यथार्थपरक दयनीय स्थिति है। चंद्रकांता ने अपनी कहानियों के माध्यम से आज की पारिवारिक तथाकथित स्थितियों का विस्तृत विवरण किया हैं। वर्तमान में व्याप्त पारिवारिक व्यवस्था का सच्चा दस्तावेज प्रस्तुत किया है। नौकरी की तलाश में युवापीढ़ी विदेश जाने के लिए उन्मुक्त होती है, किंतु इस प्रकरण में वे अपने परिवार को पीछे छोड़ देते हैं। विदेश में पहुंचकर उनकी मानसिकता एवं व्यवहार में बदलाव आ जाता है। उनका परिवार के सदस्यों से रिश्ता धीरे-धीरे कमजोर पड़ने लगता है।

'विभक्त' कहानी में शरद की विदेश जाने के पूर्व की उत्सुकता और लौटने के बाद की निराशा उसे सभी रिश्तों से विभक्त कर देती है। बड़े अंतराल के बाद जब वह अपनी पत्नी के साथ घर वापस लौटता है, तो रिश्तों में वह मिठास शेष नहीं रहती। परिवार में अनबन की स्थिति उत्पन्न होने लगती है। परिवार तथा शरद और उसके पत्नी के विचारों में जनरेशन गैप

दिखाई देने लगता है। वे अपना परिवार छोड़कर वापस यु. एस. ए. चले जाते हैं। इस प्रकार परिवार के सदस्य जब विदेश चले जाते है, तो उनके विचारों में परिवर्तन आ जाता है तथा यह परिवर्तन पारिवारिकता को समाप्त कर देता है। अपने परिवार के प्रति उनका मोह, लगाव, अपनापन, सब पल भर में ख़त्म जाता हैं। 'खून के रेशे' कहानी में बड़े पापा अपनी पत्नी की मृत्य के पश्चात फिर से पुनर्विवाह नहीं करते। वह अकेले ही बच्चों का पालन-पोषण करते हैं। पुनर्विवाह न करने के पीछे का कारण उनके बच्चे थें।। वे नहीं चाहते थे कि नई पत्नी के आने से उनके बच्चों के साथ कोई दुर्व्यवहार हो। किंतु वृद्धावस्था में उनके पुत्र ही उनकी उपेक्षा करने लगते हैं। जब वह अपने मजले पुत्र, जो बंबई की एक फर्म में इंजिनियर होकर अमेरिका चला गया है, उसे भारत लौटने का आग्रह करते है, तो वह कहता है- " वहाँ क्या रखा है मेरे लिए, जिसके लालच में दौड कर आऊँ ? मकान में तो दो कमरे भी मेरे हिस्से नहीं आएंगें। अपने रिश्तेदारों और मित्रों को फटेहाल देखकर आपको जरूर तरस आया, लेकिन अपने बच्चों के लिए आपने कुछ नहीं किया"[7] बचपन में जो पिता के साथ पुत्र का संबंध होता है, वह बदलते वक्त के साथ धीरे-धीरे टूट जाता है। जिससे उनका परिवार बिखर जाता है। इतने सालों तक जिस परिवार को अपने खून-पसीने से सींचा, वह पलभर में बिखराव की दहलीज पर आकर खड़ा हो गया। मानसिक स्तर पर यह परिवर्तन परिवारों में दिवार खड़ी कर देता है, जो दिखाई तो नहीं देती किंतु वक्त के साथ गहरी होती चली जाती हैं।

वृद्ध अवस्था में अपनी संतान ही माता-पिता के लिए अपना पूरा परिवार होती है। परिवार की नींव उन्हीं पर निर्भर रहती है। लेकिन जब संताने अपनी माँ को छोड़, विदेश चली

जाते हैं तथा वहीं अपना जीवन व्यतित करती हैं, तो परिवार टूट जाता है। परिवार के प्रति सहृदयता, प्रेम, आत्मियता का भाव धीरे-धीरे समाप्त हो जाता हैं। 'मोह' कहानी की दास्तां कुछ इसी प्रकार है। रिश्तो में दुराव आ जाने के बाद, वह अटूट धागा कमज़ोर होकर एक दिन टूट जाता है। यही कारण है कि परिवार में विभाजन हो रहे हैं। इसके फलस्वरूप एकल परिवार का निर्माण हो रहा है। आधुनिक युग में पारिवारिकता का निर्वाह करना अंसभव हो गया है। भाई- बहन के रिश्ते में जो लगाव, प्रेम, भाईचारा था, वह भी लुप्त होता जा रहा हैं। लोग अपने जीवन में इतने व्यस्त हो गए है कि अपने सगे-संबंधियों को भी भूल गए हैं। उनके बीच पनपता आत्मियता का भाव पूर्ण रूप से ख़त्म हो गया है | इस मशीनी युग में नई पीढ़ी स्वयं के रिश्तेदारों से तक परिचित नहीं हैं। उनके मध्य वह प्रेम की भावना उमड़ती ही नहीं, जो रिश्तों में एक-दूसरे के प्रति होनी चाहिए।

'एक युद्ध और कहानी' में बहन शादी के बहुत सालों बाद भाई के गांव आ जाती है। उसके मन में अपने परिवार के प्रति अपार आकांक्षाएं होती हैं। लेकिन जब वह भाई के घर पहुंचती है, तो वह सारी इच्छाएँ उध्वस्त हो जाती हैं। सभी रिश्ते बनावटी से प्रतीत होते हैं। प्रेम भाव जो मेघा अपने साथ लेकर आई थी, वह पलभर में नष्ट हो जाता है। आतिथ्य सुख उठाने की इच्छा विवशता में परिवर्तित हो जाती है। नंदी मेघा को कहती है- "आतिथ्य सुख की बातें अब ऐतिहासिक हो गयी है, मौसी। तुम्हारे वक्त की बात अब बासी पड़ गयी। तब लोगों के पास फालतू समय था। आज तो हम जैसे नौकरीपेशा लोग घर के बच्चों को भी बराबर ध्यान नहीं दे पातें, तुम अतिथियों की बात कर रही हो। ऐसी भागमभाग मची रहती है कि सुबह सात

बजे घर छोडों तो शाम छ: तक घर की दुनिया से एकदम कट जाते हैं। पीछे कुछ भी हो जाय, घर लौटने तक खबर नहीं रहती।"[8] यह सुनकर मेघा का मन भर आता है। उसके प्रति भाई द्वारा पराएपन का व्यवहार उससे सहन नहीं होता और वह वापस घर लौट जाती है। उसकी सारी आकांक्षाए मिटठी में मिल जाती हैं। आज भाई-बहन के प्यार में वो बात नहीं रही है, जो पहले थी। विवाह के पश्चात सब-कुछ बदल जाता है। एक-दूसरे के प्रति जो प्रेम था, वह नफ़रत तथा ईर्ष्या में बदल जाता हैं।

'फिलहाल' कहानी में भी रिश्तों में उत्पन्न खटास को चित्रित किया गया है। आरती अकेली अपनी माँ तथा बहन का पालन-पोषण करती है। वहां दूसरी ओर भाई अपने एकल परिवार के साथ आनंदमय जीवन व्यतित करता है। आरती तीस वर्ष की होने के बावजूद भी उसकी शादी नहीं हुई थी। वह अपनी माँ-बहन की देखभाल करने में ही व्यस्त थी।| शादी के बाद परिवार में दरार पड़ जाती है और भाई शहर में अपनी पत्नी-बच्चों के साथ रहने लगता है। अपनी माँ-बहन के प्रति उसका लगाव समाप्त हो जाता है। वे उसे बोझ लगने लगती हैं, जिससे उनका परिवार बिखर जाता है। जब बहन का विवाह तय हो जाता है, तो भाई उदास हो जाता है कि अब माँ-बहन के पालन-पोषण का दायित्व उसे निभाना होगा। वह इतना स्वार्थी हो गया था, कि उसे अपनी बहन का विवाह होना भी गवारा नहीं था। इतने साल वह अकेली घर संभालती आयी थी, तब उसके भाई ने केवल उस पर तरस खाया। न आर्थिक रुप से मदद की न मानसिक रूप से सहारा दिया। विवाह के पश्चात अक्सर परिवार के माहौल में परिवर्तन आ

जाता है। बेटा अपनी माँ का नहीं रहता केवल अपनी पत्नी का पती बनकर रह जाता है। अधिकतर एकल परिवार इसका ही परिणाम है।

'पत्थरों के राग' इस कहानी में भी सोनल बड़ी बहन होने के कारण परिवार के दायित्वों के प्रति प्रतिबद्ध है। उसे परिवार का निर्वाह करने के लिए अपनी इच्छा-आकांक्षाओं को मारना पड़ता हैं। यह उसकी विवशता है। घर में अन्य सदस्य होने के बावजूद सभी जिम्मेदारीयां उसी पर रहती हैं। यह स्थिति सोनल की है। "पैत्तीस पार कर रही है। आर्थिक रूप से स्वतंत्र है। छोटे भाई-बहन की शादी करा चुकी। दस तरह के लोगों से मिलना है। घर-भर का दायित्व संभालती है।"[9] घर-परिवार में जब जिम्मेदारी अकेले व्यक्ति के कंधे पर दी जाती है, तो वह कंधे कमजोर पड़ जाते है। जब परिवार में सब मिलकर ज़िम्मेदारियां उठाते है, तो उसका बोझ कम हो जाता है तथा एकता बनी रहती है। इस कहानी में केवल आरती अपने परिवार की चिंता में डूबी रहती है। अन्य सदस्य आराम से अपना जीवन व्यतित कर रहे हैं। इससे यह प्रतीत होता है कि परिवार के सदस्यों में निहित आत्मियता का भाव नष्ट हो गया है। कोई किसी के बारे में सोचना नहीं चाहता, केवल अपने व्यक्तिगत चिंताओं में ही व्यस्त हैं।

'चुनमुन चिरैया' कहानी में बोस अपने पारिवारिक आनंद से वंछित है। सिध्दार्थ के परिवार को देखकर उसे अपने परिवार की याद आती है। वह कहते है- "समुद्र पर नौकरी करनेवालों की नियति ही घर-परिवार से दूर रहने की है। पैसा कमाना काफी है। घर पर ठाठ-बाट भी रहता है, पर उसके लिए भारी किमत चुकानी पड़ती है। बेहद अपनों के संग साथ की मिल-बैठकर खट्टे-मीठे लम्हे शेयर करने की बलि देनी पड़ती है। हाथ लगता है कुछ, तो बहुत कुछ

अकेलेपन के साथ!"[10] वे अपने परिवार से मिलने के लिए तरसते हैं। इस कहानी में बोस की पारिवारिक सुख के प्रति लालसा व्यक्त की गई है। बहुत से लोग नौकरी के चक्कर में अपने परिवार से दूर रहते है। उनके हालात उन्हें अपनों से दूर कर देते हैं।

'शेष होता साम्राज्य' में माँ के अपने घर के प्रति मोह को चित्रित किया गया है। बहू-बेटा माँ को पिताजी के निधन के बाद अपने साथ शहर ले जाना चाहते थे। लेकिन माँ अपने घर को छोड़कर नहीं जाना चाहती थी। उम्र भर की पारिवारिक स्मृतियों का वास उस घर में था। माँ में पारिवारिकता की भावना अंतर्निहित है। उन्होंने सभी चचेरे भाईयों को प्रेम के बंधन में बांधकर रखा था। उनमें उदात्ता की भावना के साथ पारिवारिक स्नेह एवं अपनों के प्रति विश्वास झलकता हैं। जब वे अपने मकान-दुकान की हिस्सेदारी चचरे भाईयों के नाम पर कर दिया, तब उनके बुजुर्ग उन्हें अपना अधिकार त्यागने के लिए मना करते हैं। तब माँ कहती है, "जब विजय -रतन मेरे अपने हैं, कमला- विमला मेरी बहने हैं, तब इन ईट-चूने के दीवारों के साथ बंधकर क्या करू? मुझे इस लकडी-चुने के साम्राज्य के बदले साँस लेता जीता-जागता संसार चाहिए, भाई बन्दों का प्यार चाहिए।"[11]

त्योहार पारिवारिक मिलन का माध्यम है। इन उत्सवों के कारण सभी रिश्तेदार एकजूट होते हैं। "नौवे दशक की दोस्ती' में, मधुरिमा को त्योहारों के प्रति बहुत लगाव था। दिपावली का त्योहार उसके लिए खुशियां लेकर आता है। "दिपावली की छुट्टियों में बच्चे आये तो मधुरिमा अपने भरे-पूरे संसार में लौट आयी। बाल-बच्चों की चहक से घिरी उसे लगा कि वह घने पत्तों वाले चिनार के साये में सुस्ता रही है। उसने प्रोग्राम बनाऐ। आज सेना लेकर जाएंगे,

कल सूरज कुण्ड का प्रोग्राम बनेगा। बडकल में बोटिंग करेंगे... बेचारे बच्चे घर आते ही कितना है?"[12] इससे प्रतित होता है कि मधुरिमा को त्योहार इसलिए प्रिय है क्योंकि त्योहार के अवसर पर सभी रिश्तेदार घर आते हैं। सभी से मिलना हो पाता हैं। मधुरिमा अपने परिवार के सदस्यों को जोड़कर रखना चाहती है। परिवार में कुछ ऐसे सदस्य अवश्य होते हैं, जो परिवार को जोड़कर रखना चाहते हैं। अपनों के साथ समय बिताना पसंद करते हैं। किंतु वर्तमान में इन लोगों की संख्या घटती जा रही हैं। ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि चंद्रकाता ने अपनी कहानियों में परिवार के महत्व को रेखांकित करते हुए, परिवार में व्याप्त स्नेह, प्रेम तथा आत्मियता की भावनाओं का विवेचन किया हैं। साथ ही संयुक्त परिवार जो एकल परिवार में बदल रहे हैं, उनकी स्थितियों को भी उभारा हैं। पारिवारिक समस्या, संवेदना, पारिवारिक प्रेम की अभिलाषा, परिवार की उपेक्षा, आदि सभी महत्त्वपूर्ण विषयों पर प्रकाश डाला गया हैं। आधुनिक युग में संयुक्त परिवार एक मजबूत ढाल के समान है, किन्तु आपसी अनबन, पाश्चात्य संस्कृति के प्रति आकर्षण के कारण वे एकल परिवार में परिवर्तित हो रहे हैं।

2.1.2 दांपत्य जीवन

'दांपत्य' परिवार का अभिन्न अंग है। दांपत्य से तात्पर्य विवाहित पति-पत्नी का जोडा है । इनके द्वारा ही परिवार का विकास निश्चित है। पति-पत्नी के मध्य विश्वसनीय संबंध जो कर्तव्य और पवित्रता पर आधारित होता है, उसे ही दांपत्य जीवन कहा जाता है। दम्पति शब्द का अर्थ है- "लग्न सम्बन्ध, दम्पति भाव, पति-पत्नी के बीच दाम्पत्य का प्रेम व्यवहार।"[13]

पति-पत्नी दोनों मिलकर परिवार को अटूट बंधन में बांधते हैं। वे परिवार को विकसित करने का माध्यम बनते हैं। भारतीय समाज में पति-पत्नी को परिवार का आधार स्तंभ माना जाता है। परिवार की नींव उनके ही हाथों में समाहित होती हैं। दंपत्ति के सुखमय जीवन के लिए पति-पत्नी में पारस्परिक प्रेम, अबोध विश्वास तथा समर्पण का भाव आवश्यक होता हैं। जिससे परिवार में सुख-समृध्दि का वास होता है।

पति-पत्नी दोनों एक दूसरे के पुरक होते है। "जिस प्रकार पति पर पति-पत्नी संतान और परिवार की रक्षा का भार होता हैं, उसी प्रकार पत्नी पर भी पति और समस्त परिवार की रक्षा का भार होता हैं। और वह यह कार्य घर की आतंरिक व्यवस्था को सुदृढ़ करके करती है।"[14] दोनों के तादाम्य से ही परिवार में सूख-शांति का माहौल स्थापित होता है। समाज में पति-पत्नी को आदर्शपरक दृष्टि से देखा जाता है। परंतु बदलते समय के साथ दांपत्य जीवन में भी तनाव की परिस्थितियां उत्पन्न हो रही हैं। पति-पत्नी में मनमुटाव के कारण उनमें अनबन और झगड़े बड़ रहे हैं । इससे परिवार की नीव हिल रही है। रिश्तों में खटास उत्पन्न हो रही हैं। चंद्रकांता ने अपनी कहानियों में सफल तथा असफल दांपत्य जीवन के दोनों पक्षों का मार्मिक विवेचन किया हैं।

'आत्मबोध' कहानी में निहाल और रानी के सुखी दंपत्ति जीवन को चित्रित किया गया है। वे दोनो एक-दूसरे से अपार प्रेम करते हैं। निहाल भाई के अस्वस्थ होने पर उनकी पत्नी रानी को चिंता होने लगती है। वह डॉक्टर की सलाह लेने की जिक्र करती है। निहाल अपनी पत्नी की चिंता देखकर कहते है-" अरी पगली, कुछ नहीं होता मुझे। तू काहे को फिक्र कर रही है ?

क्या होगा जट-यमले को भला है? पचपन पार कर गया। कोई खम आ गया है जिस्म में? जैसा ही नहीं हूं , जैसा ब्याहकर लाया था तुझे।"[15] नेहाल को पता था, कि पत्नी की छेड़खानी करने से उसके मुख पर हास्य उमड़ पड़ता है। इसलिए अस्वस्थ होने के बावजूद अपनी पत्नी को प्रसन्न रखना चाहते है। यही वह प्रेम है, जो दांपत्य जीवन में उल्लास भर देता है। आपसी प्रेम भाव, सामंजस्य, उदारता ही विवाहिक जीवन को सफल बनाती हैं।

'जंगली-जलेबी' कहानी में गणेशी और लक्ष्मी का दांपत्य जीवन वर्णित है। गणेशी की आर्थिक परिस्थिति अच्छी नहीं थी। दो वक्त का भोजन जुटाना भी मुश्किल था। लक्ष्मी गणेशी से भरपूर प्रेम करती थी। लक्ष्मी का व्यवहार गणेशी की दांपत्य जीवन को संतुष्ट बना देता है। "लक्षमी गणेशी की जोरू है। सूख व भी देती है भरपूर । मेम साहब ने सही नाम दिया- जंगली जलेबी! मीठी फलियों सी मीठी, बाँहों में घनेरी छाँह! गणेशी इसे छोड भी तो नहीं सकता।"[16] कभी-कभी पति-पत्नी के बीच के कुछ क्षण जीवन भर का आनंद दे जाते हैं, जो अविस्मरणीय होते हैं। कामकाजी स्री-पुरुष होने के कारण वे दोनों एक-दूसरे को समय नहीं दे पाते, जिससे रिश्तों में अनबन शुरु होने लगती है। इसलिए कुछ लोग दंपत्ति सुख से वंछित रह जाते हैं। 'नानी तुम' कहानी की स्थिति भी कुछ ऐसी ही है। प्रिया और प्रभाकर दोनों दंपत्ति है। वे सुखमय जीवन व्यतित कर रहे होते हैं। परंतु चिंटू के जन्म के पश्चात दोनों चिंतित रहने लगते हैं। चिंटु जन्म से ही हदय रोगी था। अपने कामकाजी जीवन में व्यस्त रहने तथा चिंटू की चिंता सताने से उनके दांपत्य जीवन में तनाव का माहौल छा जाता है। "पति-पत्नी की स्वाभाविक सी नोंक झोक कब इतनी कडवी हो गयी कि दोनों एक-दूसरे को दुश्मन् समझने लगे, मालूम ही न पड़ा।

अपने-अपने काम से लौटकर दोनों घर में बंद हो जाते है। प्रभाकर भी अकारण तुबकने लगता। शायद इसी से घर में चिंटू की चीख-चिल्लाहट के अलावा कोई खास आवाज सुनाई देना भी लगभग बंद हो गयी। प्रभाकर का स्पर्श भी प्रिया को खीज और गुस्से से भरने लगा, लगता प्रभाकर उसे जरुरत भर की चीज समझता है।"[17] पति-पत्नी के रिश्ते में एक-दूसरे को समय देना तथा भावनाओं को समझना बहुत आवश्यक होता हैं। लेकिन आज लोग अपना सारा समय काम पर ही बिताते हैं। उन्हें अपनों के लिए समय निकालने की ज़रुरत महसूस नहीं होती। जिस कारण दांपत्य जीवन बिखरकर रह जाता है।

'कैक्टस' कहानी में सावी का दांपत्य जीवन समृद्ध था। लेकिन फिर भी पति तथा दो संतानों के होते हुए, वह अपने प्रेमी से संबंध स्थापित करती है। उनका संबंध इतना गहरा बन जाता है कि वह अपने प्रेमी के द्वारा गर्भवती बन जाती है। इस घटना से वह स्वयं को अपराधी मानने लगती है और आत्महत्या कर लेती है। जब सावी को अपने अपराध का बोध होता है, तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। उसने स्वयं अपने घर-गृहस्थी को ध्वस्त कर दिया था। वह चाहे तो अपने पति-बच्चों के साथ खुशाल जीवन व्यतित कर सकती थी। किंतु उसी ने स्वयं को उस स्थिति में डाल दिया, जिससे बाहर निकलना संभव नहीं था। इससे यह निश्चित हो जाता है कि विवाहेतर संबंधों की परिणति कभी सुखांत नहीं होती। दांपत्य जीवन विश्वास पर टीका होता है। यदि वह विश्वास टूट जाता है, तो रिश्ता भी बिखर जाता है। आज सच्चा जीवन साथी मिलना कठिन हो गया है।

‘नुराबाई’ कहानी में आर्थिक तंगी के कारण सूफी और नूरा के टूटते दांपत्य जीवन को दर्शाया है। सूफी ने अपने माता-पिता की मर्जी के खिलाफ जाकर ब्याह किया था। दोनों एक-दूसरे से प्रेम करते थे। किंतु बच्चों के जन्म के उपरांत पैसों की तंगी होनी लगी, जिससे सूफी की चिंताएँ बढ़ने लगी। जिससे वह नूरा के साथ बदसलूकी करने लगा। “छः-छः पेटों के गड्ढे भरते सूफी के प्यार का बुखार उतर गया और उसकी दिन-ब-दिन चिडचिडाती – खौखियायी सूरत देख नूरा का नूर झरकर बिला गया।”[18] आर्थिक विषमता के कारण सूफी और नूरा के दांपत्य जीवन में कडवाहट पैदा हो गई। स्पष्ट है कि आधुनिक युग में आर्थिक विषमता, तथा आपसी समझ की कमतरता के कारण दांपत्य जीवन बिखर रहा है। विवाहेतर संबंध दांपत्य विघटन का कारण बनता जा रहा है। स्त्री-पुरुष काम में व्यस्त होने के कारण एक-दूसरे को समय नहीं दे पाते। साथ ही बच्चे की जिम्मेदारी केवल पत्नी पर डालने के कारण, उसे काम एवं बच्चे की देखबाल करने में कठिनाईयाँ उत्पन्न होती हैं। इसलिए पति- पत्नी दोनों को मिलकर बच्चे की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। जिससे जिम्मेदारीयों में संतुलन बनता है और एक-दूसरे के प्रति प्रेम निरंतर रहता है। दांपत्य जीवन को सुखी रखने के लिए परिवार नियोजन की भी आवश्यक होती है। जिससे आर्थिक विषमता की समस्या हल हो सकती है। इस तरह लेखिका ने दांपत्य जीवन की यथार्थपरक स्थिति प्रस्तुत की है।

2.1.3 विवाह संबंधित समस्याएं

विवाह एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक संस्था है। भारतीय समाज में व्यक्ति की शारीरीक सुख को मर्यादाबध्द और संस्कार बध्द करने एवं संतान प्राप्ति के द्वारा वंश परंपरा की रक्षा के लिए

'विवाह' महत्वपूर्ण संस्कार माना गया है। वैदिक साहित्य के अनुसार विवाह का अर्थ- "स्त्री-पुरुष का जीवन अथवा जन्मांतर के लिए एक दूसरे से अनुबन्धित होना है।"[19] विवाह एक पवित्र बंधन है, जिसमें स्त्री और पुरुष जुड़े हुए होते हैं। यहाँ स्त्री-पुरुष के साथ-साथ दो परिवारों का भी संबंध एक-दूसरे से जुड़ता है। महात्मा गांधी के अनुसार " विवाह एक संस्कार है। विवाह का अर्थ नये जीवन में प्रवेश करना है, तो विवाह करनेवाली कन्या परिपक्व होनी चाहिए। अपने जीवन- सहचर पति उन्हें स्वतंत्र रूप से चुना हुआ होना चाहिए और उन्हें अपने इस कार्य के महत्त्व का ज्ञान होना चाहिए। कठपुतली जैसे बालकों को विवाहित कहना और पति के मृत्यु के बाद उस कन्या को विधवा की काली बिंदी लगाना, वह ईश्वर और मनुष्य के सामने अपराध है।"[20] विवाह केवल दो आत्माओं का मिलन ही नहीं अपितु दो बालिक स्त्री-पुरुष के मध्य आपसी समझ का तादाम्य भी है। आज समाज में विवाह से संबंधित विभिन्न समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। आर्थिक विषमता के कारण अविवाहित, अंतर्जातिय विवाह, विवाहेतर संबंध, अनमेल विवाह जैसी समस्याओं की संख्या बहुमात्रा में बढ़ती जा रही हैं। इन समस्याओं का मूल कारण न केवल परंपरा से चली आ रही रुढ़िया हैं अपितु आपसी असमझ भी हैं। चंद्रकांता की कहानियों में उपर्युक्त समस्याओं तथा उसके पीछे छीपी मनोवृत्ति का चित्रण किया गया है।

आज समाज में स्त्री आर्थिक विषमता तथा पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण अविवाहित जीवन गुजार रही है। यह विवाह से संबंधित नई समस्या उत्पन्न हो रही है। विवाह न होने का एक कारण दहेज समस्या है। इस संदर्भ में डॉ. उषा झां कहती है- "यह समस्या हमारे

सभी मानवीय, नैतिक, धार्मिक मूल्यों, प्रेम, स्नेह, विश्वास के अटूट बंधनों को तोड़ती जा रही हैं। मुख्यतः यह समस्या आज की भौतिकवादी उपयोगिता वादी दृष्टि पर ही आधारित है। इन सबके मूलतः कारण है, उपभोक्तावादी दृष्टिकोण, स्वार्थ एवं धन लिप्सा।"[21] विवाह को धन के आधार पर तोला जाता है। 'सच और सच का फासला' कहानी में दहेज की भयावह समस्या के कारण परिवार की चार बहनों में से तीन बहने अविवाहित रह जाती हैं। प्रेमा छोटी बहन होते हुए भी अपने सौंदर्य के कारण सभी को पसंद आती है, परंतु उसकी बड़ी बहने अविवाहित होने के कारण उसका विवाह नहीं हो पाता। 'मेरी माँ कहा करती थी' कहानी में भी दहेज समस्या पर प्रहार किया गया है। "बदलने को तो कहे है लोग जमाना बदल गया, पर दहेज-अहेज के मामले में तो हमने सौ से सव्वा सौ होते देखा जमाने को। लाख कानून सुनाएँ आप हमे, पर हम वही मानेंगे न जाने इस आँखों से देखे। हमारे रिश्तों-नाते में ही लड़कियों को बीस-तीस तोले सोना देने का चलन है आज भी।"[22] दहेज प्रथा परंपरा से चली आ रही है। उसमें परिवर्तन लाने का अब तक प्रामाणिक प्रयत्न नहीं हो रहा है। किंतु यह भी सच है, कि आज स्त्री अपना खर्चा उठाने के लिए सक्षम है। वह आर्थिक विषमता से त्रस्त नहीं है। वह दहेज प्रथा का विरोध करती हुई दिखाई देती है।

पारिवारिक ज़िम्मेंदारियों के कारण भी स्त्रियों के विवाह नहीं हो पातें। 'फिलहाल' कहानी में आरती तीस वर्ष की आयु तक अपनी माँ-बहन की ज़िम्मेदारी ढो रही होती है। वह जय नामक युवक से प्रेम करती है, किंतु माँ और बहन के प्रति कर्तव्य निर्वाह करने के लिए विवाह करने को तत्पर नहीं होती। वह जय से कुछ महीनों का समय मांगती हैं, परंतु आरती की

बात सुन जय अपना निर्णय स्वयं ले लेता है और वहाँ से चला जाता है। स्त्री सदैव परिवार के ज़िम्मेंदारीयों के प्रति स्वयं को समर्पित करती है तथा स्वयं की इच्छाओं का त्याग कर देती है। 'अनार के फूल' कहानी में निरा और नसीर के प्रेम विवाह के कारण उत्पन्न स्थितियों को दर्शाया गया है। जाती-पाती धर्म की सकुंचित दीवारों से उठकर ही प्रेम भाव को समझा जा सकता है। आज भी वर्ण व्यवस्था ने समाज में प्रबल रुप धारण किया हुआ है। जाति-पाती के नाम पर भेद-भाव किया जाता है। इस संदर्भ में मनुष्य की विचारधारा में पर्याप्त परिवर्तन नहीं आया है। लेकिन आज का युवा वर्ग इस रुढ़िवादी परंपरा को तोड़ता हुआ नज़र आता है। युवक-युवती दोनों अंतर्जातिय तथा अंतर्धार्मिक विवाह कर रहे हैं।

'पहाड़ी बारिश' में कुमार और श्री के बीच स्थापित संबंध पर प्रकाश डाला गया है। वे दोनों न तो पति-पत्नी थे, न भाई- बहन। वह एक दूसरे के बचपन के मित्र थें, लेकिन मित्रता से बढ़कर भी कुछ उनके मन में पनप रहा था। श्री विवाहित स्त्री थी और कुमार अविवाहित था। यात्रा के दौरान वे दोनों एक दूसरे के नजदीक आ जाते हैं, किंतु समय पर उनका आदर्श जाग उठता है और वे अपनी सीमा में रहने लगते हैं। आज विवाहित होते हुए भी पुरुष-स्त्री अन्य स्त्री-पुरुष के प्रति आकर्षित होते नज़र आते हैं। वे अपनी भावनाओं पर नियंत्रण नहीं रख पा रहे हैं। 'नानी तुम' कहानी में विवाहेत्तर संबंध को रेखांकित किया गया है। प्रिया की अपने पति प्रभाकर से अनबन हो जाती है। वह बहुत तनाव में रहने लगती है। उस दौरान वह विवाहित करण की ओर आकर्षित होती है। करण की पत्नी नीलम इस बात को भांप लेती है। इस संदर्भ में उसका संवाद भी है- "क्या बात है, आजकल प्रिया को सिर रखने के लिए तुम्हारे कंधों की

खास जरूरत पड़ने लगी है?"[23] पहले जब पति अथवा पत्नी द्वारा अन्य व्यक्ति के साथ संबंध स्थापित करने के बारे में पता चल जाता, तो उस मामले को दबाया जाता था। किंतु आज परिस्थिति बदल गई है। वर्तमान युग में दोनों आर्थिक रुप से सक्षम हैं। इसलिए जब उन्हें अपने जीवन साथी के गैर संबंधों के बारें में पता चलता है, तो वे एक-दूसरे से दूर हो जाते है। वे तलाक ले लेते हैं। इसी कारण आज अधिकतर रिश्तें टूट रहें हैं।

'सच और सच का फासला' कहानी में राजारानी विवाहित होने के बावजूद नबी गुंडे से संबंध स्थापित करती है। उसी नबी गुंडे से उसका घर चलता है। 'जंगली जलेबी' कहानी में लक्ष्मी आर्थिक तंगी के कारण अपने दूर के रिश्तेदार के साथ संबंध बनाती है। इसके एक कारण आर्थिक तंगी भी है। जिसके कारण विवश होकर उन्हें यह करना पड़ता है। 'नौवें दशक की दोस्ती' में भावात्मक प्रेम का निरूपण दिखाया गया है। मधुरिमा विवाहित है। वह सुरेश नामक युवक के प्रति आकर्षित होती है। उसके मन में उसके प्रति भाव जाग उठते हैं। 'पत्थरों की राग कहानी' में भी विवाहेत्तर संबंधों की परिणति है। सोनल की सतीश से भेंट होती है। सतीश विवाहित होता है। दोनों मानसिक दृष्टि से जुड़ते हैं। तत्पश्चात दैहिक संबंध स्थापित होता है। विवाहेत्तर संबंध का एक कारण यौन संबंधों की असंतुष्टी है। जिसके कारण वे अन्य व्यक्ति की ओर आकर्षित होते हैं। 'कैक्टस' कहानी में सावी अपने पति एवं दो संतानों के होते हुए भी अपने प्रेमी से संबंध स्थापित करती है। प्रेमी के द्वारा गर्भवती भी हो जाती है। जब उसे अपने अपराध का बोध होता है, वह आत्महत्या कर लेती है। अतः विवाहेत्तर संबंधों का अंत सदैव दुखद ही होता है। "आज की स्त्री किसी अन्य पुरुष के साथ अल्पकालिक शारीरिक संबंध

स्थापित करने पर दाम्पत्य जीवन के प्रति विश्वासघात नहीं मानती है।"[24] स्त्री अपनी भावनाओं पर नियंत्रण नहीं रख पा रही है, जिसके कारण सही और गलत के बीच का अंतर समझने की क्षमता खो रही हैं। इस प्रकार लेखिका ने विवाह संबंधित विभिन्न समस्याओं को अपनी कहानियों में अभिव्यक्त किया हैं।

2.1.4 पितृसत्तात्मक समाज

पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री को सदैव दोयम दर्जा दिया गया। जब भी स्त्री अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाती है, तो उसे परंपरा से चली आ रही रूढ़ियों के खोखले आदर्शों के नाम पर दबाया जाता है। यदि तब भी वह पीछे नहीं हटी, तो उसके चरित्र पर सवाल खड़े कर दिए जाते हैं। जिससे उसके स्वाभिमान को ठेस पहुंचे और वह कभी विरोध करने की हिम्मत न जुटा सकें। इस संदर्भ में डॉ. जगदीश चतुर्वेदी का कथन है- "पुरुष अपनी अस्मिता का स्वयं निर्माता था, किंतु स्त्री को यह हक नहीं था। स्त्री ने जब अपने हकों की मांग की अपने लिए सार्वजनिक जीवन में स्थान, स्पष्ट अभिव्यक्ति, स्वतंत्र पहचान एवं लिखने की कोशिश की, लज्जा को त्यागकर सहज शैली में व्यवहार करना शुरू किया। पुरुष निर्मित ढांचे, नियमों, मूल्यों एवं रिवाजों से विचलन को बदचलनी का रूप दे दिया गया।"[25] जब भी स्त्री एक क़दम आगे बढ़ाने का प्रयास करती है, तो उसे दस कदम पीछे खींच लिया जाता है। उस पर तरह-तरह के आरोप लगाकर घर की चार दीवारों में कैद किया जाता है।

पुरुष स्वयं को ही दुनिया का निर्माता समझता है। उसकी दृष्टि में स्त्री का कोई अस्तित्व नहीं है। वह केवल पैरों में पहने जूते के समान है। जब इच्छा हुई पहन लिया और कोने में पटक

दिया। स्त्री को हमेशा उसके अधिकार से वंचित रखा गया। किसी भी विषय में उसे अपने विचार प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं थी। केवल पुरुष के हर फैसले का पालन उसे सिर झुकाकर करना था। आधुनिक हिन्दी कहानियों में पुरुष और स्त्री को अलग-अलग दृष्टियों से देखा गया हैं। "पुरुष समाज का न्याय है, स्त्री दया, पुरुष प्रतिशोधमय क्रोध है, स्त्री क्षमा, पुरुष शुष्क कर्त्तव्य है, स्त्री सरस सहानुभूति और पुरुष विद्युत-शक्ति वाला है और स्त्री वर्षा की झड़ी है। एक से शक्ति, उत्पन्न की जा सकती है, बड़े बड़े कार्य किए जा सकते हैं, परन्तु प्यास नहीं बुझाई जा सकती।"[26] स्त्री-पुरुष एक ही धागे के दो किनारें हैं। न कोई छोटा है, न कोई बड़ा। दोनों ही एक-दूसरें को पुरा करते हैं।

प्राचीन काल से लेकर आज भी स्त्री का वही दोयम दर्जा बरकरार है, उस में कोई अंतर नहीं आया है। समय के साथ स्थितियों में परिवर्तन अवश्य आया है, किंतु मानसिक स्तर पर नहीं। आज भी पुरुषों की स्त्री के प्रति धारणा संकुचित ही है। इस पुरुष प्रधान समाज का व्यापक रूप लेखिका की कहानियों में दृष्टिगोचर होता है।

'दहलीज पर न्याय' इस कहानी में महंत तथा अतरसिंह पुरुष प्रधान समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं। महंत एक पुरुष पात्र हैं और जो भी आदेश उसके द्वारा दिया जाता है, उसका पालन पूरा गांव करता है। कोई भी उसके विरुद्ध खड़ा नहीं होता, रुक्की जब उसका विरोध करती है, तब रुक्की को ही पापिन कहलाया जाता है। रुक्की अतरसिंह को रक्षक समझती थी, किंतु वह भक्षक निकलता है। पुरुष के दोगले चरित्र को इस कहानी में प्रस्तुत किया है। 'नूराबाई' कहानी में पुरुष के बढ़ते वर्चस्व पर प्रकाश डाला है। सूफी नूरा को शादी

कर घर ले आता है, किंतु आर्थिक तंगी होने पर उससे जैसा चाहे वैसा व्यवहार करने लगता है। उसे वह अपनी मन की करने नहीं देता। जब सूफी बीमार पड़ गया तो उनकी आर्थिक परिस्थिति अधिक दुर्गम हो गई। तब जद्देशाह नूरा की मदद के बहाने उसका फायदा उठाने के लिए आगे बढ़ता है। तो नूरा उसका विरोध करती है, किंतु स्वयं उसका पति उसे उस नर्क में ढकेल देता है। "इत्ती पाकीजगी मुझे मत दिखा ससुरी! ऐसी कोई हुर की परी नहीं रही तू जो तुझ पर कोई अपना ईमान बिगाड़ दें।"[27] सूफी के इस संवाद से यह प्रतीत होता है कि पुरुष स्त्री को महज एक वस्तु समझता है और उसी के अनुरूप उसके साथ व्यवहार करता है।

'एक अध्याय का अंत' कहानी में पुरुष के स्वार्थी वृत्ति पर प्रकाश डाला है। देवदत्त स्त्री को केवल हासिल करने की वस्तु समझता है। उसकी भावनाओं से उसे कतई फर्क नहीं पड़ता। वह अपने अनुसार स्थितियों को चलाना चाहता है। पितृसत्तात्मक समाज सदैव स्त्री को अपने अनुसार ही व्यवहार करने के लिए बाध्य करता है। लेखिका ने अपनी कहानियों के माध्यम से परिवेश में बढ़ते पुरुष प्रधान समाज के वर्चस्व की ओर संकेत किया है।

2.1.5 स्त्री शोषण

प्राचीन काल से लेकर आज तक स्त्री को केवल भोग की वस्तु समझा गया। वह रूढ़ियाँ तथा परंपरा के नाम पर सदैव पिसती रही है। "परंपरा से स्त्री का कार्यक्षेत्र घर की चार दीवारी तक सीमित रहा है। घर की इज्जत, मान -मर्यादा, नैतिकता, इलौकिक-परलौकिक प्रतिष्ठा सभी का वास स्त्री के शरीर में परंपरा से स्वीकृत है।"[28] घर तक सीमित रहने के कारण उनके विचार भी संकुचित रहें। समाज द्वारा किए गए अत्याचारों को वह चुपचाप झेलती रहती है। अपने घर,

ससुराल, कार्यक्षेत्र हर स्थान पर उसे प्रताड़ित किया गया। यौन शोषण के साथ मानसिक शोषण की भी वह शिकार बनी। लाचारी और कमजोरी का लेबल उस पर लगाया गया। लेखिका ने कहानियों में स्त्री की दयनीय स्थिती को प्रस्तुत किया गया है। साथ ही उस पर हो रहे शारीरिक और मानसिक शोषण का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

'दुर्गी देखेगी छब्बीस जनवरी' कहानी में दिल्ली में हुए राष्ट्रीय कार्यक्रम समाप्त होने के पश्चात लौटती हुई भीड़, स्त्रियों के साथ अपमान स्पद व्यवहार करती है। किसी का दुपट्टा छीन लिया जाता है, तो कोई लड़की चार बदमाशों से घिर जाती है। आसपास के लोग तटस्थ होकर जा रहे हैं, किंतु दुर्गी का पति सोहना उस लड़की को वहाँ से बचा लेता है। "दो छोकरो ने जानबूझकर उसकी ओढ़नी छीन ली थी और भीड़ में उसे कभी पीछे, कभी आगे धकियाते जा रहे थे। वह तो बाहें फैलाकर उसके आगे खड़ा हो गया और जगह निकाल कर उसे बाहर ले आया। इस बीच उसने कई तमाचे खाये। धक्के मुक्कों की तो बात ही नहीं थी। किसी ने उसे लड़की के साथ संबंध जोड़कर दो चार गालियां भी उछाली।"[29] 'नूरबाई' कहानी में नूरा के जीवन की त्रासदी दिखाई गयी है। नूरा का पति सूफी बात-बात पर उस पर हाथ उठाता था। एक दिन तो गर्म चिमटे से उसकी पीठ पर डाग दे दिया। जद्देशाह उसके लिए देवता बन कर आया था, जो उसकी आर्थिक तंगी में मदद कर रहा था। किंतु समय के बीतने पर वह देवता भी राक्षस में बदल जाता है। नूरा अपने स्वाभिमान को बचाने का प्रयास करती है। तब जद्देशाह का संवाद है-"तुने ससुरी समझ क्या लिया है उल्लू? तेरी खसम के लिए दवाई देता फिरूं मैं और तू पाकीजगी का राग अलापती रहे? चार हरफ तू पढ़ी नहीं। कोई कस्बा हाथ में होता तो सी

पिरोकर कुछ कमा लेती। जो घर बर्तन घिसने से तू हांफने लगती है। गुस्सा हेकड़ी उसे सोहते है, जिसके पल्ले पैसा? धेला हो। तू मेरे कहे में रह और बच्चों को बढ़ाकर खांबद की दवा, दारू और बची-खुची ठस्से से गुजर।"[30] जब नूरा की तबियत खराब होती है, तो वह अपनी बेटी को काम पर भेजती है। किंतु सेठ उस बच्ची का शोषण कर लेता है। उन पर हैवानियत इतनी सवार होती है कि वे उम्र का भी लिहाज नहीं करते। आज तो बच्ची से लेकर वृध्द स्त्री का भी शोषण हो रहा हैं। दिन-ब-दिन इनकी संख्या बढ़ती जा रही है।

'शेष दिन' की रत्ना एक प्राइवेट फर्म में अच्छे पद पर कार्यरत है। परंतु उसका पति अन्य विधवा स्त्री से संबंध स्थापित करता है और सदैव वो अपनी पत्नी का अपमान करता है। रत्ना पर अपना वर्चस्व स्थापित करता है। वह केवल उसके साथ शरीर धर्म का निर्वाह करता है। "एक सर्वनाशी जीत के तहत वह रत्ना को हर तरफ असहाय, अपमानित और पीड़ित करके खुद को उंची जगह पर बिठाना चाहता था। मैं कर सकता हूँ। तुम्हारा शरीर मेरा है, तुम्हारे आत्मा मेरी हैं....।"[31] विवाह करने के पश्चात पुरुष को लगने लगता है कि स्त्री पर उसका हक है, वह मनचाहा उसके साथ व्यवहार कर सकता है। 'बावजूद इसके' में नदी के माध्यम से नारी शोषण की ओर संकेत किया गया है। वह असफल प्रेम की व्यथा को झेलती हैं। उसका प्रेमी शरद उससे प्रेम संबंध स्थापित कर विवाह किसी और युवती से कर लेता है। लेकिन फिर भी वो शरद के प्रति अपने प्रेम का निर्वाह करती है। इस दुख को उससे सहा नहीं जाता। उसे रोते हुए देखकर शरद कहता है-"रोने वाली लड़की बूढ़ी और बेबस नजर आती है।"[32] पुरुषों ने स्त्री

को हमेशा कमज़ोर तथा लाचार समझा है। उनकी भावनाओं को समझने का कभी प्रयास ही नहीं किया।

'एक अध्याय का अंत' कहानी नारी शोषण को उकेरती है। देवदत्त विभा का दैहिक शोषण करना चाहता है, परंतु वह अपने अस्तित्व के प्रति जागरूक रहती है। कहानी में यह यथार्थ प्रस्तुत किया गया है कि "...मर्द की फितरत ही ऐसी है कि जब तक उसे औरत हासिल न हो, तो उसके पीछे दुम दबाकर घूमता है और जब वह उसे मिल जाती है, तो अचानक वह औरत घर की मुर्गी दाल बराबर ही नहीं, बल्कि पतली दाल बराबर हो जाती है..."[33] पुरुष केवल स्त्री के शरीर से प्रेम करता है। उसे भोग की वस्तु समझता है और एक बार उसका उपयोग हो गया कि उसकी तरफ मुड़कर भी नहीं देखता। स्त्री महज़ उसके लिए खिलौना है। जब खिलौने से खेलकर जी भर जाता है, तो उसे बाहर फेक दिया जाता है।आज भी स्त्री की बोलीयां लगाई जाती है। उन्हें दुसरे देश ले जाकर बेचा जाता है। 'शेष दिन' में रत्ना की मनोवृत्ति को प्रस्तुत किया गया है। वह नौकरी करती है। उसे अपनी पति से अधिक वेतन, पद, प्रतिष्ठा प्राप्त हैं। फिर भी उसका पति उस पर अन्याय-अत्याचार करता रहता है। स्त्री जीवन में कितनी भी तरक्की कर ले किंतु पुरुष उसकी सराहना नहीं करते। उन्हें उनकी तरक्की चुबने लगती हैं। लेकिन आज के समय में कुछ पुरुष स्त्रियों को साथ में लेकर चलते हैं। 'पायथन' कहानी में स्त्री शोषण की करुणामय व्यथा को व्यक्त किया गया है। प्रेमनाथ अपनी बेटी की इज्जत बचाने हेतु दिल्ली चले आते हैं। परंतु वहाँ राजू बिट्टी को अपने जाल में फंसा लेता है और उसके साथ दैहिक संबंध स्थापित करता है। जब वह विवाह के संबंध में राजू से प्रश्न करती है, तब वह हंसते हुए

कहता है- "इक्किसवी सदी में जाती लड़की बहन जी टाइप वालियों की तरह कुछ एक मुलाकातों में ही शादी की बात करने लगती है! हाउ सेड। मैरिज इज द एंड ऑफ लाइफ, बेबी।"[34] आज पुरुष या स्त्री केवल मौज-मस्ती करते दिखाई देते हैं। उनके लिए रिश्तों के कोई मायने नहीं है। यदि कोई रिश्ता जोड़ने के बारे में बात करता है, तो वे उसे बेवकूफी कहते हैं।

नारी का शोषण तीन स्तरों पर होता है आर्थिक, मानसिक तथा दैहिक। आज भी स्त्री को मुल्यहीन वस्तु के समान देखा जाता है। अरविन्द जैन का कथन है-"पूंजी के स्वर्ग बाजार में औरतों का गोश्त सबसे सस्ता है। 'सैक्स सैरग़ाहों' में 'सैक्स शोज़' या नग्न प्रदर्शन से लेकर हर एक प्रकार की यौन गुलामी के लिए विवश औरत का वध स्थल बनने जा रहे है, ये स्वतंत्र बाजार यौन रोग ही नहीं, यौन हिंसा के आंकड़े भी लगातार बढ़ रहे हैं। पूंजी के इस शर्मनाक खेल में औरत का भोग उपभोग की 'सुन्दर' वस्तु बनाया जा रहा है।"[35] शोषण की समस्या सदियों से चली आ रही है। समय के बदलते दौर के साथ वह भयावह रूप लेने लगी है।

2.1.6 मानवीय मूल्यों का विघटन

समय सदैव परिवर्तनशील रहा है। समय के साथ सामाजिक स्थितियों में भी परिवर्तन आ जाता है। सामान्यतः युगीन परिवेश के मूल्य शाश्वत होते हैं। किंतु बदलते वातावरण के साथ उनमें भी परिवर्तन आ जाता है। समाज अपने मानवीय मूल्यों को पीछे छोड़ता जा रहा है। मानवीय मूल्य जो मानवता का प्रतीक है, वह अपना अस्तित्व खोते जा रहे हैं। प्रामाणिकता, ईमानदारी, सहृदयता, आत्मीयता, संवेदना, दया भाव सब पर भौतिकता का प्रहार छा गया हैं।

मनुष्य स्व का चयन कर स्वार्थी बनता जा रहा है। इस स्व के आड़ में वह अपनी पहचान खो रहा है। द्वेष, घृणा, बदले की भावना, इर्ष्या आदि भाव मनुष्य के चित्त में समाने लगे हैं।

आधुनिक विज्ञान के कारण युवापीढ़ी की सोच में परिवर्तन आ रहा हैं। 'कित्थे जाणा पुत्तर' कहानी में युवा वर्ग के पतन की ओर बढ़ रहे हैं। इस कहानी में बेजी नामक बुजुर्ग है, जो स्वभाव से ही दयालु तथा दिलदार है। वे हमेशा दूसरों की मदद करती है। किंतु ये युवावर्ग को पसंद नहीं आता। इस संदर्भ में कथन है-"नई उम्र की नई फसल, जिसने फिल्मों और टी.वी की दुनिया से आंखें खोली, अपने संस्कारों को जान नहीं पायी। उनके सामने बूढ़ी बेजी एक उम्र बीती बुढ़िया मात्र है जो बिना वजह दूसरों के मामलों में टांग अड़ाती हैं, उसमें ज्यादा कुछ नहीं सो मानेंगे क्या?"[36] आज के युवा समझ नहीं पाते की मदद करना, आत्मीयता दिखाना, सुख: दुःख में साथ देना यह सब हमारे मूल्य हैं। किंतु उन्हें वह दखलंदाजी लगती है।

भारतीय समाज में स्त्री- पुरुष साथ रहने के लिए विवाह की परंपरा को आवश्यक माना गया है। किंतु अब 'लिव इन' का जमाना है। 'एक लड़की शिल्पी' में शिल्पी और अमित एक दूसरे से प्रेम करते थे। उनके बीच शारीरिक संबंध भी स्थापित हो जाता है। जब शिल्पी उससे शादी की बात करती है तो वह कहता है-"शादी को लेकर इतनी भावुक बनकर तुम खुद को औसत की श्रेणी में ला रही हो, शिल्पी। असल बात तो आपसी समझदारी और भागीदारी है। तुम मीडिया कर जिंदगी क्यों चाहते हो?"[37] आज की पीढ़ी आधुनिकता की आड़ में अपने नैतिक मूल्य खो रही हैं। विवाह केवल एक मज़ाक बनकर रह गया है। मौज-मस्ती के ही इर्द-गिर्द उनकी जिंदगी का चक्र घुमता रहता है। आज कल बच्चों पर दुरदर्शन पर दिखाई देनेवाले

दृश्यों का प्रभाव भारी मात्रा में पड़ रहा हैं। जिसके कारण उनकी भाषा तथा व्यवहार में बदलाव दिखाई देता है। 'शरणागत दिनार्थ' कहानी में टी. वी., व्ही. सी. आर के कारण बच्चों के व्यवहार में परिवर्तन आ रहा है। उनमें संस्कार पनप नहीं पा रहे है। बड़ों का आदर भी नहीं करते वरन् बेढंगी से बात करते हैं। "कैसा कलयुग आ गया। जब देखो तब डिशुम-डिशुम और यह कौन सी भाषा बोलने लगे हो बरखुरदार? हर वाक्य में छ: बार साला, शीट और माई फुट। दूँ एक झापड़ पिछाड़ी पर कि एक ही धौल में सही भाषा बोलना सीख जाओ।"[38] आज बच्चें सब-कुछ टी. व्ही. देखकर सिख रहे हैं। वे बड़ो की बातों से कम तथा टी. व्ही. से अधिक प्रभावित हो रहे हैं। इससे उनके नैतिक मूल्य पीछे छूट रहे हैं।।

आज दुनिया में बदले की भावना विक्राल रूप ले रही है। जिससे प्रेम, सहचर, आत्मीयता का भाव नष्ट हो रहा है। इस बदले की भावना में मनुष्य को सही और गलत में फर्क नहीं दिखाई देता। उनपर एक जुनून जैसा सवार होता है। 'हत्यारा' कहानी में नथ्यासिंह बदले की आग में अपने ही भाई के बच्चे की जान ले लेता है। उसे इस अपराध का पछतावा तक नहीं होता। वह अपने अहंकार की आड़ में एक बच्चे की जान ले लेता है। स्त्री को देवी का रूप माना जाता है। परंतु आज समाज में उसके प्रति देखने का दृष्टिकोण बदल गया। पुरुष उसे केवल विलासता भरी नज़र से देखता है। लड़की, स्त्री या बुढी औरत हो, वे उन्हें भोग की वस्तु ही समझते हैं। स्त्री का आदर करना तो वे भूल ही गए है। 'नुराबाई' कहानी में नूरा के साथ- साथ उसकी छोटी बच्ची का भी शारीरिक शोषण किया जाता है। बच्ची के प्रति भी वे सहानुभूति प्रकट नही कर पाते। उनपर हैवानीयत छायी होती है।

कठिन परिश्रम करने से सफ़लता अवश्य प्राप्त होती है। किंतु आज के इस कलयुग में ईमानदारी तथा मेहनत से कुछ हासिल नहीं होता केवल असफलता ही हाथ में आती है। आज परिश्रम की जगह पर जी-हजुरी करना ज्यादा आवश्यक हो गया है। यही यथार्थ 'धाराशायी' कहानी बयाँ करती है। वी. वी. एक कामकाजी स्त्री है, जो बड़े ही मेहनत से अपना का करती है। किंतु उसकी पदोन्नति नहीं होती। हर बार उसके साथ यही होता है। इसमें दिखाया गया है कि जो लोग देव साहब की जी-हजुरी करते हैं, उनकी पदोन्नति की जाती हैं और बाकियों को केवल आश्वासन दिए जाते हैं। आज समाज में मेहनत, ईमानदारी की जगह जी हजुरी तथा पैसों ने ली हुई हैं। जिससे हमारे नैतिक मूल्य लुप्त होते जा रहे हैं। 'सूरज उगने तक' कहानी में भी यही यथार्थपरक स्थिति दिखाई गयी है। विमल एक ईमानदार एवं स्वाभिमानी लड़का है। वह अपना काम मेहनत और लगन से करता था। किंतु उसकी ईमानदारी के कारण उसे नौकरी से निकाला जाता है। उसका दोष सिर्फ इतना था कि वह भ्रष्टाचार का हिस्सा नहीं बनना चाहता था। पूँजीपति लोगों ने उसे काम पर से निकाला ही, पर साथ में कहीं और भी नौकरी मिलने नहीं दी। यह आज की यथार्थपरक स्थिति है, जहाँ स्वार्थ और पैसों की हुकूमत बढ़ रही है और हमारे मूल्य विघटित हो रहे हैं।

माता- पिता को सर्वोच्चम स्थान दिया जाता है। उनके प्रति आदर- सम्मान करना हमारे मूल्य हैं। लेकिन आज की युवापीढी मूल्य हीन बनती जा रही हैं। वे माता- पिता को बोझ समझते हैं। उनका सम्मान करना तो दूर उनके प्रति आत्मीयता का भाव भी नहीं दिखातें। दिन-ब-दिन वे निष्ठुर होते जा रहे हैं। 'खून के रेशे' कहानी में पिता जो अपने बच्चे का पालन- पोषण

करता है, वही पुत्र बाद में उसकी उपेक्षा करने लगता है। आजीवन जिस पिता ने अपने बच्चे की परवरिश की, अपना पूर्ण जीवन उसके लिया गुज़ारा, वही अंत में उनकी अवहेलना करता है। इसी प्रकार की स्थिती 'फिलहाल' कहानी में भी देखने के लिए मिलती है। आज की युवापीढ़ी निष्ठुर होती जा रही हैं। मनुष्य संवेदनहीन बनता जा रहा है। जिन मानवीय मूल्यों को आत्मसात करना चाहिए, उनसे ही वह दूर जा रहा है। जिसके कारण मानवता धीरे-धीरे खत्म हो रही है। यही आज का कटु सत्य है।

1.1.7 न्याय व्यवस्था

भारतीय संविधान के अनुसार यदि किसी मनुष्य के साथ अन्याय होता है, तो वह पूर्ण रूप से न्याय का हकदार होता है। लेकिन हमारे समाज में आम आदमी को न्याय दिलाने के लिए कठिन संघर्ष करना पड़ता है, फिर भी वह न्याय की सीढ़ी तक नहीं पहुँच पाता। न्याय के पथ पर चलते हुए उसे गालियां, धमकियां, धिक्कार, शोषण इन सब से गुजरना पड़ता हैं, तब कहीं जाकर वह न्याय के दरवाजे के पास पहुंचता है। लेकिन वह इतना थक जाता है कि उसके दरवाजा खटखटाने के लिए हाथ नहीं उठते। बहू मात्रा में उसका शोषण होने से वह कमजोर पड़ जाता है और अन्याय के सामने अपने हाथ खड़े कर देता है। समाज में निहित न्याय व्यवस्था भ्रष्ट हो गई है। तर्क- वितर्क का उसपर कोई लाभ नहीं होता। पूंजीपतियों की ही हुकूमत चलती है। गरीब को तो तिनके के समान उठाकर बाहर फेंक दिया जाता है। न्याय की तलाश में गरीब अपने प्राण की आहुति भी दे देता है। लेकिन न्याय व्यवस्था पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। समाज की न्याय देवी अंधी हो गयी है और तब तक अंधी ही रहेगी, जब तक पूँजीपति वर्ग का

शासन जड़ से नहीं उखड़ जाता। परंतु तब तक आम आदमी को इस अत्याचार को धोते हुए जीवन व्यतीत करना पड़ेगा। चन्द्रकांता की कहानियों में निम्न वर्ग के लोग न्याय की अपेक्षा में अपना सर्वस्व लुटा देते हैं, किंतु अंत में उनकी झोली में पराजय ही आती हैं।

'देहलीज पर न्याय' कहानी में एक माँ का अपने बच्चे को न्याय दिलाने की जिजीविषा और संघर्ष देख सकते है। गाँव का महंत रुक्की के बच्चे की बलि चढ़ाने के लिए कहता है। किंतु रुक्की इस बात से इनकार कर देती है। पाँच वर्षो बात उसे संतान का सुख प्राप्त हुआ था, उससे अब वह वंछित नहीं रहना चाहती थी। अपने बच्चे को न्याय दिलाने के लिए वह पुलिस के पास जाती है। किंतु वे कानून के रक्षक उसके ही चरित्र पर सवाल उठाते हैं। उसे ही गुन्हेगार मान लेते है। अंत में रुक्की अतरसिंह के पास न्याय की आशा लिए जाती है, लेकिन वह भी हैवान निकलता है। अंत तक उसे न्याय नहीं मिल पाता अपितु उसका शोषण किया जाता हैं। अंत में वह कहती है-"जेहल फांसी से तुझे जैसे धर्मी -कर्मी ही डरत है शरीफजादे! मैं तो तुम्हारे कानून से डर गई, कत्ल के जुर्म में मुझे फांसी मिल जाती तो शायद मेरा इंसाफ हो जाता है रे पापी, पर मेरे इस कलजुगी कन्हैया के साथ कौन इंसाफ करता?"[39] न्याय के दरवाजे तक आते-आते रुक्की अपना सर्वस्व खो देती है। 'हत्यारा' कहानी में भी सुखवंती को न्याय नहीं मिल पाता। नथ्यासिंह द्वारा उसके बच्चे की हत्या की जाती है। वह उसे न्याय दिलाने के लिए संघर्ष करती रहती है। किंतु उसे न्याय नहीं मिल पाता। पुलिस भी उसका कुछ नहीं बिगाड पाती है।

2.1.8 मानसिक तनाव

समाज में मानसिक तनाव ने गंभीर समस्या का रूप धारण कर लिया है। आज प्रत्येक मनुष्य इस समस्या से जूंझ रहा है। शिशु मन से लेकर बुजुर्गों को भी मानसिक तनाव ने जकड़ रखा है। अधिकतर युवा पीढ़ी इसका शिकार हो रही हैं। विश्व में प्रचंड संख्या में लोग होने के बावजूद भी मनुष्य अकेलेपन का शिकार हो रहा है। आर्थिक तंगी, पारिवारिक समस्या, बेरोजगारी, प्रेम आदि समस्याओं के कारण मानसिक तनाव का प्रमाण बढ़ रहा हैं। लोग मानसिक तनाव के भंवर में फंसते चले जा रहा है। जिससे बाहर निकलना असंभव सा प्रतीत होता है। इसका मूल कारण यही है कि भावनाओं का आदान प्रदान ठीक से नहीं हो पा रहा है। मनुष्य की भावनाएँ संकुचित रहने लगी हैं, जिससे उनका मन अंदर ही अंदर घुटने लगता है। उन्हें किसी से बात करने की इच्छा नहीं होती तथा एकांत में बैठना अधिक पसंद करते हैं। समय के साथ मानसिक तनाव का स्वरूप विस्तृत होता जा रहा है। ये समाज के विकास में बाधा उत्पन्न कर सकता है। चंद्रकांता ने कहानियों में लड़का, लड़की, स्त्री, पुरुष, वृद्ध व्यक्ति सभी जो मानसिक तनाव से गुजर रहे हैं, उनकी स्थिति का गहनता से वर्णन किया गया है।

'सुईयाँ' कहानी में किशोर की मनोवृति को प्रस्तुत किया गया है। किशोर की मां बचपन में ही गुजर गई। माँ के गुजर जाने के बाद परिवार से उपेक्षा के सिवाय कुछ नहीं मिला। पिता, नानी तथा मामी भी उसे मनहूस मानती थी। उसके साथ ठीक से बर्ताव नहीं किया जाता था। इसका उसके मन पर बहुत बुरा प्रभाव पढ़ा। "उसी का साया मनहूस है। ठाकुर जी की भक्त नानी दो- दो इंच आँसू बहाती भी उसी को कोसती रहती। मामी भी यही कहती। उसने भीतर कुरेदन

महसूस की, एक अबुझा प्रश्न चेतना की सतहों पर मंडराने लगा- ' यह मनहूस होना क्या होता है, पापा?"[40] उसके बाल मन पर इसका प्रभाव होता है। वह अकेले ही रोता रहता था। 'सिद्धि का कटरा' कहानी में सिद्धी अपने बच्चे के मृत्यु से मानसिक संतुलन खो बैठती है। सिद्धि एक कामकाजी स्त्री थी। अंधविश्वास के चलते उसके पुत्र की बली दी जाती है। जिसका दुःख वह सह नहीं पाती। उसके दिल-दिमाग पर गहरी चोट लग जाती है। वह तनाव में चली जाती है। जिससे उसका मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है।

'चुनमुन चिरैया' कहानी बाल मनोविज्ञान पर आधारित है। सिद्धार्थ जहाज पर नौकरी के कारण देश- विदेश घूमता रहता है। उसका पुत्र चुनमुन नाना-नानी के पास रहता है। पिता उसके लिए जापान से कपड़े, चॉकलेट तथा खिलौने लाते हैं। लेकिन वह अपने पिता के लिए तरसता है। उस अपने पिता का समय एवं प्रेम चाहिए था। इसका उसकी मानसिक स्तिथि पर बुरा प्रभाव पड़ता है। 'एक अध्याय का अंत' कहानी में विभा की मानसिक स्थिति प्रस्तुत की गई है। वह देवदत्त से प्रेम करती थी। परंतु देवदत्त को केवल उसके शरीर से प्रेम था। वह विभा का शारीरिक शोषण करना चाहता था। किंतु विभा अपने अस्तित्व के प्रति जागरूक थी। वह उसे अपना फ़ायदा उठाने के लिए नहीं देती। जिससे वह उसे छोड़ कर चला जाता हैं। विभा उससे सच्चा प्रेम करती थी। उसके चले जाने से वह मानसिक तनाव से गुजरने लगती है। 'नौवे दशक की दोस्ती' में मधुरिमा की मनस्थिति को प्रस्तुत किया गया है। मधुरिमा चालीस साल की स्त्री हैं। उसके दो बच्चे हैं। बच्चे बड़े होने के बाद वह अकेलापन महसूस करती है। मानसिक तनाव से गुजरते हुए उनकी मुलाकात एक युवक से होती है। उसके प्रति उनका आकर्षण बढ़ता जाता

है। “अकेलापन? मानसिक प्रक्रिया है यह दरअसल तुम चीजों को जरूरत से ज्यादा महत्व देते हो। दूसरे को उसका दाय दो, पर उसके साथ बंध क्यों जाती हो?”[41]

‘मामला का घर’ कहानी में उम्मी मानसिक रूप से प्रताड़ित है। उसका पालन पोषण मामा के यहाँ होता है। वहाँ उससे उठते-बैठते उम्र के बीस साल तक यही ताने सुनने पड़े कि वह मनहूस है। उसके माँ- पिता, भाई की मृत्यु का कारण वे उसे मानते हैं।उसके मानसिक स्तर पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ता है।

मानसिक तनाव एक बीमारी बनती जा रहा है। जो धीरे-धीरे सभी को अपनी गिरफ्त में ले रही हैं। भावनाएं संकुचित होने का एक कारण यह भी है। हम अपनी जिंदगी में इतने व्यस्त रहते है कि अपनों की भावना को समझ नहीं पाते। यदि परिवार का साथ हो, तो इस मानसिक तनाव को परास्त किया जा सकता है।

2.1.9 पाश्चात्य जीवन के प्रति आकर्षण

भारत से बहु संख्या में लोग विदेश जाते हैं, इसमें युवा पीढ़ी का समावेश अधिक होता हैं। शिक्षा एवं नौकरी प्राप्त करना ही इनका मुख्य उद्देश्य रहा हैं। समय के साथ विदेश जाने वालों की संख्या में भी वृद्धि हुई हैं। विदेशी यात्राएं बढ़ने के कारण भारतीय समाज पर पाश्चात्य जीवन का प्रभाव पड़ने लगा। उनका विदेशी संस्कृति के प्रति झुकाव बढ़ता गया। नौकरी की खोज में गयी युवा वर्ग धीर-धीरे विदेश में ही अपनी दुनिया बसाने लगते हैं, जिससे उनका अपने देश की सभ्यता के प्रति लगाव छूटता चला जाता है। आज की युवा पीढ़ी आधुनिकता के नाम पर

भारतीय जीवन संस्कृति को तुच्छ मानने लगी हैं और विदेश में व्यतित जीवन को सर्वश्रेष्ठ मानकर उन्हीं की जीवनशैली को आत्मसात करने लगी हैं। चंद्रकांता की कहानियों में युवा वर्ग का यह पाश्चात्य जीवन के प्रति आकर्षण साफ झलकता है।

'चक्रव्यूह' कहानी में मनु का पाश्चात्य जीवन के प्रति लगाव को प्रस्तुत किया गया है। मनु चार वर्षों के बाद भारत लौटा है। उसे कुछ भी बदला हुआ नजर नहीं आता। वह देखता है- "उबड-खाबड सड़के, पसीना, दुर्गंध और गंदगी एक साथ हमला करने लगे। घर तक पहुंचते जगह-जगह बने अवरोध, नीम अंधेरे रास्ते पशुओं, वाहनों और मनुष्यों की मिली- जुली भीड़ से गुजरते मन कैसा तो 'डिप्रेस' हो गया। आश्चर्य हुआ क्या इसी माहौल में वह पला है?"[42] जिस देश में उसका बचपन बिता वही आज उसे गंदा लगने लगा। यहाँ का खान-पान, रहन-सहन सबकुछ उसे खटकने लगता है। "मां मुझे यह तली- भुनी चीज खायी नहीं जाती। दसेक दिन में ही लगता है मेरी पलकों से भी तेल घी चुने लगा है। कितना तेल खाते हो आप? थोड़ा हेल्दी फूड लिया करो, फल सब्जी....! बारह घंटे चौकी में घुसना छोड़िए।"[43] 'शिकायते' कहानी में अमेरिका में प्राप्त सुख- सुविधाओं का उल्लेख किया गया हैं। जीतू और उसकी पत्नी अमेरिका में रहते हैं। वे पिताजी से मिलने अस्पताल जाते हैं। वहाँ की स्थिति देख वे हैरान रह जाते हैं। रोगियों को अपना सारा सामान लेकर अस्पताल आना पड़ता था। डॉक्टर का अपने रुग्ण के प्रति तटस्थ भाव रखते हैं। सभी जगह गंदगी है। अमेरिका में अस्पताल की सुविधाएं बहुत अच्छी हैं। इस संदर्भ में लिना का संवाद है-"उधर की बात। नो कंपैरिजन! यहां इस माहौल में तो अच्छा भला आदमी बीमार हो जाय। जिप्पी जब हुई तो मैं चाहती थी, दो-चार दिन ज्यादा

अस्पताल में रहूं। वहां के अस्पताल तो स्वर्ग दिखते हैं। यहां से तो भागने का मन करता है। वे लोग कितना आराम देते हैं बीमार को। आल यू हैव टूडू, इज तो पे दि बिल। दैटस ऑल।"[44]

'तुमने कोशिश तो की' कहानी में अर्जुन अपने मां-पिता को समझाता है कि वह अमेरिका में कंप्यूटर टेक्नोलॉजी की पढ़ाई कर वापस लौट आएगा। लेकिन उन्हें पता है कि अर्जुन पढाई के बाद वापस लौटकर नहीं आएगा। वह विदेश में ही नौकरी करेगा। पैसे कमाने के लिए वह वही रहेगा जिससे उनकी मदद कर सके। "उनकी महत्वाकांक्षो का आकाश इतना विस्तृत हो जाता है कि उसमें उनका घर, परिवार, जमीन सब कुछ खो जाता है।"[45] भारत में बेरोजगारी तथा भृष्टाचार बहुत बढ़ रहा हैं। जिस कारण युवा विदेश में काम करने के लिए उन्मुक्त हो रहे हैं। इस कहानी का राजन कहता है- "यहां चौतरफ भ्रष्टाचार नजर आता है - निकम्मी सरकार, निकम्मे लोग, धूल, धूप और पसीना। क्या है यहां? सरकार एक हाथ से देती है, दूसरे से छीन लेती है... ।" 'देशकाल' कहानी में विदेश जाकर मदन की जिंदगी में बदलाव आ जाता है। वह नया मकान बनवाता है तथा पत्नी के लिए कार भी लेता है। विदेश में उसकी आर्थिक स्थिती में सुधार आ जाता है। वह सोचता है कि यदि वह भारत में होता ऐसी आरामदायक जिंदगी नहीं बिता पाता। इसके संदर्भ उसका संवाद है-" वही दो हज़ार की नौकरी होती। औसत मध्यवर्गीय जीवन के सौ टंटे होते। बहुत होता तो एक सेकेंड हैंड खटारा गाड़ी को रोज सुबह धकियाने का सुख भोग रहे होते और लीज पर मिले किसी कॉलोनी में, दो कमरों के फ्लैट में सपरिवार रो- झीक कर गुजर कर रहे होते......।"[47] विदेश के प्रति आकर्षण का प्रमुख कारण आर्थिक तंगी है। अधिक तर लोग पैसा कमाने के लिए ही विदेश जाते हैं। 'हाऊ

सिल्ली' कहानी पाश्चात्य संस्कृति पर आधारित है। जिसमें एक परिवार का उन्मुक्त जीवन चित्रित है। 'तुमने कोशिश तो की' कहानी में प्रणय और शान्नो दोनों विदेश में नौकरी करते हैं। वहाँ की वातावरण की तुलना में उन्हें भारतीय परिवेश सुहाता नहीं हैं। वे भारत में लौटकर नहीं आना चाहते। 'बात ही कुछ और' कहानी में संदीप डॉक्टर बनकर अमेरिका में ही रहने लगता है। वही की लड़की से शादी करता है। उसे घर लौटने की इच्छा नहीं होती।

एक बार शहर की ओर उन्मुक्त होने के उपरांत मनुष्य वापस अपने देश लौटकर नहीं आता। यदि आता भी हैं, तो सीमित समय के लिए। वह विदेशी जीवन शैली का आदी हो जाता है। आर्थिक तंगी इसका प्रमुख कारण हैं। आज भी बहुत प्रतिशत लोग विदेश में जाकर नौकरी करते हैं। एक आश्चर्य की बात यह है कि जो लोग विदेश जाते हैं, वे भारत में कम दर्ज़े का काम करने से कतरातें है। किंतु उससे भी कम दर्ज़े का काम वे विदेश में करने के लिए तुरंत राज़ी हो जाते हैं।

2.1.10 मातृत्व की भावना

स्त्री के की जीवन सार्थकता मातृ रूप में है। भारतीय संस्कृति में माँ को सर्वोत्तम स्थान दिया जाता है। माँ का व्यक्तित्व इतना उदार होता है कि वह स्वयं का त्याग कर दूसरों के लिए जीवन व्यतीत करती है। "जिस प्रकार नदी निरंतर बहती रहती है और उंचाईयों के मुँह को छोड़कर बहुत निचली ढलान की ओर बढ़ती है। उसी प्रकार से धीरे- धीरे अपने पिता अपने पति से संतान की ओर अधिक अभिमुख होती हुई उसी के सुख के लिए जीती है और इसमें ही नारी अपनी पूर्ण सार्थकता पाती है।"[48] माँ का जीवन बहुत ही संघर्षमय होता है। संतान की

परवरिश अधिकतर माँ के हाथों में ही होती है। वह अपनी संतान के लिए असंभव को भी संभव कर सकती है। माँ की इच्छा में दृढ़ शक्ति होती है। माँ की ममता की तुलना किसी भी मूल्यवान वस्तु से नहीं की जा सकती। वह ईश्वर का दूसरा रूप है जो, अपने परिवार को संकटों से बचाकर उनकी रक्षा करती है तथा उल्लासपूर्ण वातावरण प्रदान करती है। इस संदर्भ में डॉ. सुरेश सिन्हा कहते हैं- "पालन, पोषण, स्नेह, वात्सल्य तथा सेवाभाव आदि मातृरूप नारी की सर्वप्रमुख विशेषताएं होती हैं जिससे वह संसार में सुख, संतोष एवं उल्लासपूर्ण वातावरण का निर्माण करती है और मानवता उसके बंधन में सुख प्राप्त करती है, विकसित होती है और अपनी सार्थकता सिद्ध करती है।"[49]

'दहलीज पर न्याय' कहानी में रुक्की अपने बच्चे को न्याय दिलाने के लिए महंत गांववालों, पुलिस तथा अतरसिंह का भी सामना कर लेती है। उसे ज्ञात है कि जिसके विरुद्ध वह लड़ रही हैं, उनसे जितना संभव नहीं है। लेकिन फिर भी अपने बच्चे के लिए किसी भी कठिन परिस्थिति का सामना वह करने के लिए तैयार है। अंत में अपने बच्चे को बचाने के लिए वह स्वयं के स्वाभिमान को दांव पर लगाकर अतरसिंह को अपना चीर हरण करने देती है। "वो ऊपर वाला नहीं है तो जनता है की अब तक तेरी यह कीड़े पड़ी देह ठंडी पड़ गई होती। मैं सती सावित्री नहीं हो रहे पाखंडी पर तुझ पापी कंस की आज इस मरियल पिल्लै ने ही जान बख्शी दी रुक्की, आज अपने इस कोक जने के कारण ही मार खा गई।"[50]

'बावजूद इसके' कहानी में सीमा अपने परिवार के प्रति सदैव कार्यरत रहती है। सुबह उठते ही दैनिक क्रियाकलाप काम में व्यस्त हो जाती है, जिसमें ज़रा सी ढील होते ही घर भर में

तहलका मच जाता है। बच्चों के टिफिन, पति का मनपसंद नाश्ते के लिए भाग दौड़ प्रारंभ हो जाती हैं। वह हमेशा अपने परिवार के लिए पिसती रहती है। “नंदी को दैनंदिन व्यवस्था ही रास आती है। अब छोटी छोटी व्यवस्तताओं के बीच चक्करघिन्नी की तरह घूमती, वह अपने भीतर की नंदी को भूलना सीख गई है। सुबह से शाम तक यंत्रवत काम करते नंदी किसी यंत्रवत का पुर्जा बनकर रह गई है।” [51] मां का जीवन आजन्म घर का काम करते-करते ही बीत जाता है। वह हमेशा अपनी इच्छीओं का गला घोटती आई हैं। लेकिन वर्तमान युग में मां की स्थिति में परिवर्तन दिखाई देते है। आज अधिकतर स्त्रियां अपनी आकांशाओं को न मारकर उन्हें पुरा करती हैं तथा घर को भी संभालती है।

माँ अपनी संतान को सबसे बढ़कर प्रेम करती है। वो हमेशा उसे किसी भी कठिन परिस्थिति से बाहर निकालती है, उस पर कोई आंच देने नहीं देती। ‘दुर्गी देखेगी छब्बीस जनवरी’ में जब भारत पाकिस्तान युद्ध चल रहा था, तो बम गिरने के धमाके सुनाई दे रहे थे। ऐसे भयानक वातावरण में सुजाता ने अपनी छोटी सी पुत्री स्मिथ को छाती से भींच लिया था। ममता की बहार उसकी दूध से बाहर छाती में उमड़कर बाहर आ गई थी। इस संदर्भ में दुर्गी के अंतर्मन का संवाद है, “नन्ही बेटी तुझे मैं हर आंच से बचाऊंगी।”[52]

‘पुनर्जन्म’ कहानी में माँ के पुत्र प्रेम को व्यक्त किया है, वह वृद्धावस्था के कारण थक चुकी है। आंखो से ठीक से दिखाई नहीं देता। उसे अपने बेटे गोपाल की फिक्र थी। उसे चाहिए था कि गोपाल पढ़ लिखकर नौकरी करे। उसके भविष्य की चिंता उसे हमेशा सताती रहती थी। उसकी चिंता करते-करते उनकी मृत्यु हो जाती है। “गोपाल को विश्वास नहीं आया था। यह माई

इतनी कठोर, इतनी बदजबान, इतनी करुणामयी उसे अकेला छोड़ कर मर सकती है?.....थरथराते हाथों से कटोरा पकडाते माई के बोल कानों में गूंजे -तू मैट्री? कर ले गुपाला! कैसे भी परीक्षा देकर पास हो जा। मैं जिया चाचे के सामने हाथ जोड़े तेरे लिए नौकरी मांगूगी। तो कलरक, मास्टर हो जाएगा… ।"[53]

'तुमने कोशिश तो की' कहानी में सावित्री अपने बेटे से मिलने के लिए तरसती है। जब भी प्रणव उसे फ़ोन करता है, उसके अंतर्मन में सुख का झरना फूट पड़ता है। "फ़ोन पर बात करते हर माह की तरह भीतर भी उसी आदि ममता का एहसास उगा जहाँ अपने जायों की खातिर अपने आप को उस अदृश्य शक्ति के आगे दुआ उठते है। और वह बेटे की आवाज सुनने, उसे पास महसूस करने के लिए उतावली हो उठी"[54]

माँ का प्रेम सर्वोपरि है। वह अपनी संतान के लिए किसी भी परिस्थिति का निडर होकर सामना करती है। उसके लिए उसका बच्चा ही पूरी दुनिया होती है। उसे किसी भी मुसीबत से बचाने के लिए वो कोई भी हद पार कर सकती है। माँ के इस स्त्री शक्ति तथा ममता की मूरत का वर्णित रूप लेखिका की कहानियों में प्राप्त होता है।

2.1.11 वृद्धावस्था की पीड़ा

वृद्धावस्था एक जीवित समस्या है। लोकभारती राजभाषा शब्दकोष (हिन्दी-अंग्रेजी) के अनुसार- "वृद्ध का अर्थ old person होता है।"[55] "अंग्रेजी हिन्दी कोश के अनुसार वृद्ध शब्द को old शब्द का हिन्दी पर्याय माना गया है। old का अर्थ-बूढ़ा, वृद्ध, पुराना आदि होता है।"[56]

जब से संयुक्त परिवार का एकल परिवार में परिवर्तन हुआ है, तब से इस समस्या ने जन्म लिया है। जिस उम्र में मनुष्य को अपनों की जरूरत होती है, उसी समय अपने साथ छोड़ देते हैं। वृद्धावस्था उम्र का वह पढ़ाव है, जहाँ मनुष्य अपनों का प्रेम, सहारा पाने की चाह रखता हैं। किंतु युवावर्ग वृद्धों की पीड़ा को समझ नहीं पाता। उनको अपनी जिंदगी में बोझ समझता है। आदर- सम्मान तो छोड़ दो, उनसे सीधे मुँह बात तक नहीं करते। उनकी स्थिति दयनीय हो गयी हैं।

'एक वर्तमान युग में वृद्धों की स्थिति और युद्ध' कहानी में मनोहर चाचा अकेले रहते है। दो महीने पूर्व उनकी पत्नी का निधन हुआ है। वे अकेलेपन की स्थिति से गुजरते है। इस उम्र में उन्हें साथी की जरूरत थी। लेकिन उनके पास कोई भी नहीं है। वे कहा करते थे "जवानी में पत्नी का महत्व आदमी महसूस करे न करे, बुढ़ापे में संगिनी का महत्व बढ़ जाता है।"[57] इस उम्र में हर किसी को अपनों का साथ चाहिए होता है। बिना किसी के साथ के जीवन उबाऊ सा प्रतीत होता है।

'शेष होता साम्राज्य' कहानी में माँ अपने बच्चों के साथ शहर में रहना नहीं चाहती, वह पति के साथ गाँव लौटना चाहती है। इस संदर्भ में कथन है- ""बेटे-बहूएँ समझते हैं कि बुढ़ापे में घर की ममता कुछ ज्यादा ही बढ़ जाती है। मन में मौत का डर भी हावी रहता है। क्या पता आज है कल नहीं होंगे। तब क्या एक नजर न देख पाएँगे, प्यार व श्रम से रचाये-बसाये उस आत्मीय घरौंदे को जहाँ जवानी के सपने परवान चढे, जिनकी दरो-दीवारों पर खुशी-गमी की कहानियाँ अंकित है। जन्म-मरण की सच्चाईयों की साँझी संवेदनाओं की गवाह वे दीवारें हाथ

बढ़ाकर ज्यों गले लगाती है, पराये शहरों में आधी उम्र बीतनेपर भी अपनेपन की वह सोंध मिलती है?"[58] बुजुर्गों के लिए अपना घर ही सबकुछ होता हैं। उनकी मिठी-खट्टी यादें सभी उनके घर में समाही होती है। इसलिए उन्हें अपने घर के प्रति बहुत लगाव होता हैं।

'खून के रेशे' कहानी में पिता की वृद्धावस्था को दर्शाया है। पत्नी के मौत के बात पिता अपने बच्चों के कारण दूसरा विवाह नहीं करता। किंतु जब उन्हें अपने बच्चों की आवश्यकता होती है, तो वे उनकी उपेक्षा करते हैं। वे बहुत अकेले और कमजोर पड़ जाते है। हर समय उदास रहते है। बेटी जो उनका ध्यान रखा करती थी, उसकी भी मृत्यु हो जाती है। वे बहुत अकेले हो जाते है। इस संदर्भ में कथन है- "जिंदगी के जंग में आज वह शेर की तरह गुर्रानेवाला योध्दा हार गया था, गिर गया था और उसे उठने की इच्छा नहीं हो रही थी। पतझड़ में गिरते पत्ते की तरह पीला, कमजोर, अकेला और उदास।"[59] वृद्धावस्था में अकेले जीवन व्यतित करना बहुत ही त्रासदायक होता है। अपना सुख- दुःख बाटने के लिए कोई नहीं होता और जीवन बोझ सा प्रतीत होता है।

'फिलहाल' कहानी में बेटा और बहु माँ की उपेक्षा करते हैं। सारी जिम्मेदारी आरती पर डालकर, वे शहर की ओर रवाना होते हैं। उन्हें अपनी वृद्ध मां के प्रति दया का भाव भी उत्पन्न नहीं होता। 'रामबिल्ले की दस्तक' कहानी में एक वृद्ध स्त्री के जीवन को वर्णित किया है। उनके मन में नाते-रिश्तों के प्रति स्नेह है। किंतु वे बिल्कुल अकेली है। उनके गाँव में भी कोई नहीं है। सभी गाँव छोड़ शहर की तरफ रवाना हुए ही। "रामबिल्ला भी अब बड़े शहरों की ओर चला गया है निकी रानी, तुम लोगों के द्वारों पर दस्तक देने। वह मेरी तरह बूढ़ा थोड़े ही है पगली।"[60]

अर्थात गाँव के सभी बच्चे शहर चले गए है। अधिकतर बुजुर्गो के अकेलेपन का कारण यही है। सभी युवावर्ग शहर तथा विदेश की ओर उन्मुक्त होते है और माता पिता अपना गाँव छोड़कर जाना नहीं चाहते। उनकी सारी संपत्ति गाँव में बसी होती है। उन यादों को छोड़कर जाना संभव नहीं हो पाता। वृद्धों की यह समस्या बहुत भयानक रूप ले रही है।

2.2 सांस्कृतिक एवं धार्मिक बोध

संस्कृति मानवीय मूल्यों की स्थापना करती है। संस्कार शब्द से ही संस्कृति का निर्माण हुआ है। इंदिरा विद्यावाचस्पति लिखते हैं-"किसी देश की आध्यात्मिक, सामाजिक और मानसिक विभूति को उस देश की संस्कृति कहते हैं। संस्कृति शब्दों में देश के धर्म, साहित्य, रिति, रिवाज, परंपराओं, सामाजिक संगठन आदि सब आध्यात्मिक और मानसिक तत्वों का समावेश होता है। इन सब के समुदाय का नाम संस्कृति है।"[61] संस्कृति समाज की जीवन पद्धति है। संस्कृति के अनुरूप ही किसी समाज की व्यवस्था हुआ करती है। प्रत्येक देश की अपनी संस्कृति होती है। भारत की संस्कृति में अध्यात्म, भक्ति, धार्मिकता, दर्शन-विचार, अहिंसा, त्याग, विविध संस्कार, कला कौशल एवं राष्ट्रीयता एवं समन्वय समाहित है।

धर्म एक शक्ति तथा विश्वास है। धर्म को जीवन का एक अंग माना गया है। इससे मनुष्य अनुशासित होता है। डॉ. राधाकृष्णन् ने लिखा है- "धर्म वह अनुशासन है जो अंतरआत्मा को स्पर्श करता है और हमें बुराई और कुत्सितता से संघर्ष करने में सहायता देता है। काम, क्रोध

और लाभ से हमारी रक्षा करता है,नैतिक बल को उन्मुक्त करता है, संसार को बचाने के महान कार्य के लिए साहस प्रदान करता है।"[62] धर्म आंतरिक भाव है। धर्म से नैतिक बल और साहस प्राप्त होता है। व्यक्ति का सत्य एवं सच्चाई के रास्ते पर चलना ही धर्म है। धर्म वह अनुशासन है, जो व्यक्ति की अंतरात्मा को स्पर्श करता है और बुराई का विरोध करता है। डॉ. हरदेव बाहरी के मतानुसार, "धर्म वह मंदिर है जिसमें हमारे आदर्शों के दीप जलते हैं, जिनके प्रकाश में हम मन का संतोष, आत्मा का साक्षात्कार और जीवन के सुन्दर लक्ष्य का स्वरूप देखते हैं।"[63] संस्कृति और धर्म समाज के अविभाज्य अंग हैं। ये दोनों मिलकर समाज में एकरूपता लाते हैं।

2.2.1 भारतीय संस्कृति

संस्कृति से तात्पर्य सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों से संबंधित मान्यताओं और विचार प्रणालीयों से है। भारतीय संस्कृति प्राचीन धर्म संस्कृति है। "भारतीयों की संपूर्ण मानसिक निधि की अभिव्यक्ति का नाम भारतीय संस्कृति है। यह भारतीय लोगों के विविध साधनाओं की सुंदर परिणीति है।"[64] भारतीय संस्कृति अपनी विभिन्न रूपों तथा परंपराओं के कारण अत्यंत समृद्ध रही है। भारतीय संस्कृति शब्दों से रिती-रिवाज, परम्पराएं, रहन सहन आदि विचार हमारे मन में प्रवेश करने लगते हैं। भारतीय संस्कृति अपनी विविध रूपों तथा परंपराओं के कारण अत्यंत समृद्ध रही है। इस संदर्भ में साने गुरूजी कहते हैं- "भारतीय संस्कृति यानी मेल मिलाप। सभी धर्म, जाति, ज्ञान, विज्ञान काल आदि महान मिलाप करने वाली समग्र मानव जाति को मांगल्य की ओर ले जाने वाली यह महान संस्कृति है।[65] भारतीय संस्कृति भारतवासियों की पहचान हैं। यह मनुष्य को नैतिक मूल्यों की ओर अग्रसर करती है।

'मोह' कहानी में मगहर अष्टमी के बारे में बताया गया है। मगहर अष्टमी शुक्ल पक्ष में आती है। उस दिन का संक्षिप्त वर्णन इस कहानी में किया गया है। "जल्दी से माँ शारदा का नाम लेकर गुणी ने फिरन निकाल कर कीकर की झुकी डाल पर टिका दिया। ठंडे जल में उतरकर जल्दी- जल्दी दो तीन गोते लगाए। ऊंचे स्वर से देवी की स्तुति करके ठंड को नकार दिया। या देवी सर्वभूतेषु दया रूपेण संस्थिता.....।"[66] घर की दहलीज पर जब गुणी को अहदू मिल जाता है, तो उसे मुस्कुराकर उसका स्वागत करती है। यह भी हमारे भारत की संस्कृति रही है। जब भी हम किसी से मिलते हैं, तो हम उनका मुस्कुराकर स्वागत करते हैं। 'करीने के कायल' में दैनिक भारतीय संस्कृति को प्रस्तुत किया गया है। ईश्वर की पूजा-अर्चना करना हमारी संस्कृति का ही एक हिस्सा है। "निशा सुबह शाम धूप, दीप जलाना और भगवान की मूर्तियों के आगे शीश झुकाकर मंत्र मंत्र पढ़ना धार्मिक दायित्व समझती है।"[67]

'एक और युद्ध' में विवाह के दौरान गाए जाने वाले मधुर गीत के बारे में बताया गया है। "रंगोली वाले गोल घेरे पर घूमती महिलाएं एक दूसरे पर फूलों की वर्षा करती सदियों पुरानी गीत गाती है। स्नेह, सौहार्द और आत्मीयता के सराबोर संबंधों के मधुर गीत।"[68] 'मुक्ति प्रसंग' में पिता की मृत्यु के पश्चात श्राद्ध संस्कार की विधि दिखाई गई है। 'विदा गीत' में विवाह संस्कार का उल्लेख किया है। दुल्हन के ससुराल जाते समय यह गीत गाया जाता है। यह सारी हमारी भारत की संस्कृति रही है। जब भी हम किसी से मिलते हैं, उनका आदर- सम्मान करना, मुस्कुराकर उनका स्वागत करना हमारी संस्कृति का हिस्सा ही है। जिसे पूर्वजों ने संभाल कर रखा है। आगे चलकर हमें ही इस संस्कृति का निर्वाह करना होगा। यह हमारा कर्तव्य है।

2.2.2 अंधविश्वास

धर्म सत्य और सदाचार का निर्वाह करता है। किंतु समाज में कुछ लोग धर्म की आड में जनता का शोषण करते हैं। कई वर्षों से भारतीय समाज में धार्मिक आडंबर का रूप देखने के लिए मिलता हैं। जिस कारण अंधविश्वास की जड़ें इतनी गहरी हो गयी हैं, कि उन्हें उखाड़ कर फेंकना बहुत ही जटिल कार्य बन गया है। धार्मिक मान्यताओं, रूढ़ियों, परंपराओं के चलते समाज में तरह-तरह का अंधविश्वास देखने के लिए मिलता है। अंधविश्वास का मूल कारण निरक्षरता है। अधिकतर गांव के लोगों की आस्था तथा विश्वास का पाखंडी साधुओं द्वारा फायदा उठाया जाता है। लोग पाखंडियों की बातों पर बिना विचार-विमर्श किए तुरंत विश्वास करने लगते हैं, जिसका अंतिम में दुष्परिणाम गरीबों को भुगतना पड़ता हैं। अंधविश्वास परंपरा से चला आ रहा है। वह काला साया है, जो समाज को अंधकार की ओर ले जा रहा है।

'दहलीज पर न्याय' कहानी में अंधविश्वास का भयावह चित्र प्रस्तुत किया गया है। रुक्की को पाँच वर्षों बाद संतान का सुख प्राप्त हुआ था। किंतु महंत उसके बच्चे की बली चढ़ाने के लिए कहता है-"देवी माँ को तेरे इस छोरे की ज़रूरत है...इसकी बलि देगी तो दस गबरू जनेगी! अभी तो तू जवान है।"[69] गाँववाले आँख बंद कर महंत की बात मान लेते है और रुक्की को ही गलत ठहराते है। "रुक्की की कोख से जरूर किसी नाग ने जन्म लिया है, नहीं तो महंत को क्यों ऐसा सपना आता, महंत देवी का भक्त है। देवी जो आदेश देगी, वह करके ही रहेगा। रुक्की-राधे की मर्जी होने-न-होने से क्या फर्क पड़ता है?"[70] गाँववालों में विचार करने की क्षमता नही थी। जो कुछ महंत बोलते, वे उन पर तुरंत विश्वास कर लेते।

'हत्यारा' कहानी की पृष्ठभूमि भी इसी प्रकार से है। नथ्यासिंह स्वयं को अवतार मानने लगता है। उसे चाहिए था कि सारा गाँव उसकी बातों पर विश्वास करें। वह गाँव में अफवाएं फैलाता है। लोग तो तुरंत उस पर विश्वास करने लगते है। "सौ-एक घरों के गाँव में फूस की आग की तरह नत्थासिंह के औतार बनने की अधोर बात फैल गयी। नत्थासिंह 'दीवान' लगाकर जन्म-जन्मांतरों के हाल बता रहा है। माथे को छूकर 'तीन लोक' का दर्शन कराता है। रथी को तो वह घर भी बताया जिसमें वह पूर्वजन्म में रहती थी।"[71] वह लोगों को विश्वास दिलाने के लिए वीरा और सुखी के संतान की हत्या कर देता है और दावा करता है कि वह तुरंत जिंदा हो जाएगा। किंतु संतान की मृत्यु हो जाती है। इस प्रकार ढोंगी महंतो के कारण आम जनता अपना सर्वस्व खो देती हैं।

'अकेली चार मीनार' कहानी समाज में व्याप्त अंधविश्वास पर आधारित है। राजू की बहन की शुद्धि की विधि करायी जाती है। "रिश्तेदार आकर उसे आशीष देंगे, मिठाइयाँ खिलायेंगे। और सातवें दिन उसे नये कपड़े दिये जायेंगे। फिर उसकी शुद्धि की जायेगी और वह छूने लायक हो सकेगी।"[72] राजू की बहन विजया बारह-तेरह साल की है। इस उम्र में उसकी शुद्धि की जाती है। इससे उनका अर्थ है की वह शादी के लायक हो जाएगी। आज भी इस तरह की कुरीतियाँ इस आधुनिक समाज में देखने के लिए मिलती है, जहाँ लड़की की शुद्धि करायी जाती है। राजू की बड़ी बहन मन्नत पूरी होने पर तिरुपति जाकर अपना सर मुड़वाकर आती है। "उसकी लड़की लक्ष्मी है न ! बी.ए. कर चुकी है। उसकी शादी के लिए मनौती मानकर आयी है।"[73] स्त्रियों को अपने बाल बहुत प्यारे होते हैं। लेकिन जब भी इस भाति अंधविश्वास पर

भरोसा करती हैं, तो अपनी प्रिय से प्रिय चीज दान कर देती हैं। “दीपा एक बार उसे सिर से पाँव तक देखती है और मन ही मन उसके पोस्ट ग्रेजुएट होने पर अफ़सोस ज़ाहिर करती है।”[74] शिक्षित होने के बावजूद भी आज की युवापीढि इस अंधविश्वास का हिस्सा बनती दिखाई दे रही है। आज न केवल अशिक्षित लोग अपितु शिक्षित लोग भी अंधविश्वास के शिकार हो रहे हैं। वे इन बातों पर ध्यानपूर्वक चिंतन नहीं करते और यही मात खा बैठते है।

‘सिद्धि का कटरा’ कहानी में समाज में व्याप्त अंधविश्वास प्रस्तुत है।। सिद्धि को अपने बेकार पति और दो संतानो का पालन- पोषण करती है। एक दिन सिद्ध बाबा के आदेश पर फेलु सिद्धि के पुत्र की बलि चढ़ाता है। सिद्ध बाबाने उस कहा था, कि लड़के की बलि देने से उसे बेटे की प्राप्ति होगी। इस अंधविश्वास के चलते फेलु के हात से अपराध हो जाता है। इससे वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठती है। उसका हृदय छलनी हो जाता है। “बच्चा चाहिए था तुझे ।... अरे सौ पचास खर्च करके ले लेता कहीं से। कितने तो मिलते। उधर कालाहांडी में तो बीसेक रुपये में लड़का मिल जाता तुझे हत्यारे। अपनी बीवी का ही चाहिए था तो बुलाता किसी को किराये पर, सुलाता रात-दो-रात .... मेरा बच्चा काटने से तू मर्द तो न बनेगा जनखे ।”[75] अंधविश्वास समाज में पनपता वह अंधकार है, जो समाज को पतन की और अग्रसर करता है।

चंद्रकांता की कहानियों में सामाजिक, संस्कृतिक एवं धार्मिक बोध का अध्ययन करने के पश्चात उनके युग का बोध हो जाता है। वे अपने युग के प्रति हमेशा सचेत रही है। उनके समय का समाज एवं आज के वर्तमान समय के समाज में अत्याधिक समानताएं दृष्टिगोचर होती है।

पारिवारिक, विवाह, वृद्ध विमर्श, मानसिक तनाव, स्त्री शोषण तथा मानवीय मूल्यों का विघटन ये सारी समस्याओं ने आज भयावह रूप धारण कर लिया है। आज की परिस्थिति बहुत ही बिकट बन गयी है। ऐसा प्रतीत होता है की जिन समस्याओं का प्रारंभ पहले ही हो चुका था, वह आज विक्राल रूप ले रही है।

समाज में न्याय व्यवस्था हमेशा से ही भ्रष्ट रही है। आम आदमी न्याय के लिए जीवन भर केवल संघर्ष ही करता रहता है। कोर्ट- कचेरियों के चक्कर काटने में ही सारी उम्र बीत जाती है। लेकिन इंसाफ नहीं मिल पाता। केवल पूंजीपतियों का ही शासन चल रहा है। समाज में परिवर्तन की किरण अब तक दिखाई नहीं दी है। समाज प्रगति तो कर रहा है किंतु केवल भौगोलिक स्तर पर। मानसिक स्तर पर अब भी मनुष्य पीछे ही है।

आधुनिकता का पहनावा पहने मनुष्य अपने मानवीय मूल्यों का भी खात्मा करता जा रहा है। मनुष्य के मन में प्रेम भावना, संवेदनशीलता, ईमानदारी, सच्चाई सब धीरे-धीरे नष्ट हो रही हैं। मनुष्य संवेदनहीन बनता जा रहा है। अपने नैतिक मूल्यों को कुरेदकर आधुनिकता का झंडा फहरा रहा है। साथ ही पाश्चात्य संस्कृति की ओर उन्मुक्त हो रहा हैं। अपनी संस्कृति के प्रति उसका लगाव कम होता जा रहा है। मॉडर्न विचारों का नारा लगाएं मनुष्य अपनी सभ्यता को भूलता चला जा रहा है। मॉडर्न कपड़े पहनने तथा हाई क्लास कपड़े पहनकर आधुनिक होने का प्रदर्शन कर रहा है। वह समझ नहीं पा रहा है कि आधुनिकता की जरूरत बाहरी दिखावे के लिए नहीं अपितु विचारों में लाना आवश्यक है। अपनी संस्कृति ही मनुष्य का एक मात्र गहना होती है, जो उसका निखार दुगना कर देती है। इसका एक कारण एकल परिवार भी है।

आजकल संयुक्त परिवार देखने के लिए मिलते ही नहीं। जिसके कारण युवावर्ग को अपनी संस्कृति के प्रति लगाव उत्पन्न नहीं होता। परिवार में सभी सदस्य मिलकर बच्चों पर अच्छे संस्कार करते थे, लेकिन एकल परिवार में बच्चों को यह सब सिखाने के लिए माता- पिता के पास समय ही नहीं होता। वे अपने काम में ही व्यस्त रहते है। जिससे बच्चे अपनी संस्कृति को जान नहीं पाते और पश्चिमी संस्कृति की ओर उन्मुक्त होते है।

आज स्त्री हर क्षेत्र में कार्यरत है। वह अपना जीवन स्वयं के बलबूते पर जीने का साहस रखती है। स्त्री की स्थिति में अवश्य ही परिवर्तन आया है। आज अधिकतर स्त्रियाँ अपने पैरों पर खड़ी है। स्त्रियों का प्रोत्साहन भी बहुत मात्रा में बढ़ाया जा रहा है, जिसके कारण उनमें कुछ कर दिखाने की हिम्मत समाने लगी है। लेकिन मानसिक स्तर पर आज भी स्त्रियों को कम लेखा जाता है। उनकी क्षमता पर संदेह किया जाता है। अब भी पूर्ण रूप से स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन नहीं आया हैं। लेकिन पहले से ज्यादा सुधार उनके जीवन में दिखाई देता है। शिक्षित होने के बावजूद भी लोग पाखंडियों के झांसे में आ रहे हैं। पंडितों की बातों पर तुरंत विश्वास कर लेते हैं। उस पर अपना तर्क भी नहीं लगाते। जब तक उन्हें सत्य पता चलता है, तब तक समय उनके हात से निकल चुका होता है। अधिकतर इसका शिकार निम्न वर्ग का आदमी होता है।

आज समाज संवेदनहीन बन रहा है। उसपर किसी के दर्द -दुःख का प्रभाव नहीं होता। वह अपने स्वार्थि वृति के आड़ में घृणा, अंहकार, द्वेष, हिंसा जैसी भावनाओं को जन्म दे रहा हैं। वह सिर्फ अपने आप को जिताना चाहता है और जितने के लिए वह कुछ भी करने को तैयार है। उसका अस्तित्व उससे छूटता जा रहा है। वह इस भूमंडलीकरण के जगत में क्रूर, निष्ठुर तथा स्वार्थी

बनता जा रहा है। उसे ज्ञात नहीं है कि जिस ओर वह अग्रसर हो रहा है, वहां उसका उज्वल भविष्य नहीं अपितु उसका नाश है। वह अपने पतन की ओर बढ़ रहा हैं।

70

संदर्भ

1. वर्मा, महादेवी, श्रृंखला की कड़िया, पृ. 129
2. पाण्डेय, डॉ. कमलाप्रसाद, हिंदी काव्य की सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, पृ. 19-20
3. शुक्ल, रामचंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 3
4. श्री नवल जी, नालंदा विशाल शब्द सागर, पृ. 803
5. सिन्हा, मृदुला, सामाजिक सरोकार, पृ. 18
6. सारडा, डॉ. पृ. 21
7. चंद्रकांता, सलाखों के पिछे, पृ. 15
8. चंद्रकांता, दहलीज पर न्याय, पृ. 61
9. चंद्रकांता, ओ सोनकिसरी, पृ. 14
10. चंद्रकांता, सूरज उगने तक, पृ. 142
11. चंद्रकांता, सूरज उगने तक, पृ. 97
12. चंद्रकांता, सूरज उगने तक, पृ. 200
13. भगवतसिंह जी – भगवद्गोमण्डल : भाग-५, पृ.४० ४४०७
14. त्रिपाठी, डॉ. शिवसागर, रामायण एवं महाभारत का शाब्दिक विवेचन, पृ.224
15. चंद्रकांता, ओ सोनकिसरी, पृ. 45
16. चंद्रकांता, सूरज उगने तक, पृ. 179

17. चंद्रकांता, सूरज उगने तक, पृ. 65

18. चंद्रकांता, दहलीज पर न्याय, पृ. 119

19. शास्त्री चतुरसेन, वैदिक संस्कृति और पौराणिक प्रभाव, पृ. 101

20. शर्मा, विरेन्द्रप्रकाश, भारतीय सामाजिक संस्थाएँ, पृ. 175

21. झां, डॉ. उषा, हिंदी कहानी और स्त्री विमर्श, पृ. 152

22. चंद्रकांता, ओ सोनकिसरी, पृ. 110

23. चंद्रकांता, सूरज उगने तक, पृ. 68

24. भारद्वाज, राहुल, नवें दशक की हिंदी कहानी में मूल विघटन, पृ.01

25. चतुर्वेदी, जगदीश्वर, स्त्रीवादी साहित्य विमर्श, पृ.21

26. मित्तल, डॉ. सुशीला, आधुनिक हिंदी कहानीयों में नारी की भूमिकाएं, पृ. 6

27. चन्द्रकांता, दहलीज पर न्याय, पृ. 124

28. यादव, डॉ. वीणा रानी, हिंदी उपन्यासों में स्त्री अस्मिता की अभिव्यक्ति, पृ. 30

29. चन्द्रकांता, दहलीज पर न्याय, पृ. 13

30. चन्द्रकांता, दहलीज पर न्याय, पृ. 137

31. चन्द्रकांता, काली बर्फ, पृ. 78

32. चन्द्रकांता, दहलीज पर न्याय, पृ. 73

33. चन्द्रकांता, दहलीज पर न्याय, पृ. 54

34. चन्द्रकांता, काली बर्फ, पृ. 28

35. हंस पत्रिका, अरविंद जैन, पृ. 96

36. चंद्रकांता, सूरज उगने तक, पृ. 42

37. चंद्रकांता, सूरज उगने तक, पृ. 158

38. चन्द्रकांता, काली बर्फ, पृ. 9

39. चन्द्रकांता, दहलीज पर न्याय, पृ. 20

40. चंद्रकांता, सलांखो के पीछे, पृ. 22

41. चंद्रकांता, सूरज उगने तक, पृ. 208

42. चंद्रकांता, सूरज उगने तक, पृ. 268

43. चंद्रकांता, सूरज उगने तक, पृ. 268

44. चन्द्रकांता, दहलीज पर न्याय, पृ. 91

45. चंद्रकांता, सूरज उगने तक, पृ. 89

46. चंद्रकांता, सूरज उगने तक, पृ. 89

47. चंद्रकांता, सूरज उगने तक, पृ. 90

48. मिश्र, विद्यानिवास, नदी नारी और संस्कृति, पृ. 11

49. सिन्हा डॉ. सुरेश, हिंदी उपन्यासों में नायिका की परिकल्पना, पृ. 79

50. चन्द्रकांता, दहलीज पर न्याय, पृ. 20

51. चन्द्रकांता, दहलीज पर न्याय, पृ. 71

52. चन्द्रकांता, दहलीज पर न्याय, पृ. 96

53. चन्द्रकांता, दहलीज पर न्याय, पृ. 130

54. चंद्रकांता, सूरज उगने तक, पृ. 86

55. बाहरी, डॉ. हरदेव, लोकभारती राजभाषा शब्दकोष (हिन्दी-अंग्रेजी), पृ. 466

56. बुल्के, फादर कामिल, बाहरी, डॉ. हरदेव बाहरी 'अंग्रेजी- हिन्दी कोष' पृ.433

57. चन्द्रकांता, दहलीज पर न्याय, पृ. 63

58. चंद्रकांता, सूरज उगने तक, पृ. 95

59. चंद्रकांता, सलाखों के पीछे, पृ. 26

60. चन्द्रकांता, काली बर्फ, पृ. 67

61. विद्यावाचस्पति, इंदिरा, भारतीय संस्कृति का प्रवाह, पृ 01

62. डॉ. राधाकृष्णन, अनुवादक- विराज, धर्म और समाज, पृ. 23

63. बहारी (डॉ.) हरदेव, प्राचीन भारतीय संस्कृति कोश, पृ.4

64. पाटिल, डॉ.पांडुरंग, आंचलिक उपन्यासों में लोक संस्कृति, पृ. 65

65. साने गुरुजी, भारतीय संस्कृति पर, प्रस्तावना

66. चंद्रकांता, दहलीज पर न्याय, पृ. 39

67. चंद्रकांता, दहलीज पर न्याय, पृ. 44

68. चंद्रकांता, दहलीज पर न्याय, पृ. 67

69. चंद्रकांता, दहलीज पर न्याय, पृ. 8

70. चंद्रकांता, दहलीज पर न्याय, पृ. 12

71. चंद्रकांता, दहलीज पर न्याय, पृ. 27

72. चंद्रकांता, सलांखो के पीछे, पृ. 39

73. वही

74. चंद्रकांता, सलांखो के पीछे, पृ. 40

75. चंद्रकांता, ओ सोनकिसरी, पृ. 41

तृतीय अध्याय

चंद्रकांता की कहानियों में आर्थिक एवं राजनीतिक बोध

3. चंद्रकांता की कहानियों में आर्थिक एवं राजनीतिक बोध

अर्थ एवं राजनीति का एक-दूसरे से परस्पर संबंध होता है। अर्थ जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मनुष्य के जीवन में सुविधाओं तथा असुविधाओं का मूल सुत्र अर्थ है। आर्थिक परिस्थितियां राजनीति से प्रभावित होती है। राजनीति का संबंध शासन से है। लोगों द्वारा चयनित नेता राजनीति के सुत्र संभालता हैं। इसका उद्देश्य देश को विकास की ओर अग्रसर करना तथा उन्नति के शिखर तक पहुंचाना है।

3.1 आर्थिक युगबोध

युग की आर्थिक व्यवस्था पर सामाजिक तथा राजनीतिक व्यवस्था की नींव आधारित होती है। यह समाज एवं व्यक्ति के विकास का मूल सूत्र है। मनुष्य के जीवन की क्रियाकलापों को दिशा अर्थ के माध्यम से ही मिलती है। शिशु अवस्था से वृद्धावस्था तक के सभी कार्य अर्थ पर ही आधारित होते हैं। अतः समाज की संरचना का आधार अर्थ बन गया।

युगीन परिस्थितियों एवं अर्थ का परस्पर संबंध रहा है। समय के साथ आर्थिक व्यवस्था में परिवर्तन आ जाता है। अर्थ के अभाव में यह स्थितियां पतन की ओर तथा अर्थ की प्रचुरता में विकास की ओर अग्रसर होती दिखाई देती हैं। अर्थात धन के अभाव में लोगों का जीवन जटिल बन जाता है। जीवन का निर्वाह करने के लिए मूलभूत चीजें तक जुटा नहीं पाते। जिससे उनको अपना जीवन अभाव ग्रस्त परिस्थितियों में ही व्यतीत करना पड़ता हैं। दूसरी ओर जिन

लोगों के पास धन बहु मात्रा में है, वे सरल जीवन व्यतीत कर पाते हैं। इससे समाज के सभी स्तरों पर विकास होते दिखाई देता है।

प्राचीन काल में भारत को 'सोने की चिड़िया' नाम से संबोधित किया जाता था, किंतु ब्रिटिश के आगमन के पश्चात भारत की संपत्ति लुप्त हो गई। अर्थात ब्रिटिश सारा धन लूट कर चले गए। इस कारण सभी भारतवासियों की आर्थिक स्थिति दुर्गम हो गई। बदलते समय के साथ गरीब लोग अधिक गरीब तथा श्रीमंत लोग अधिक श्रीमत होते चले गए। आधुनिक समय के साहित्यकारों ने आर्थिक व्यवस्था से संबंधित समस्याओं को रेखांकित करने का प्रयास किया। अर्थ ने सभी स्थितियों पर अपना वर्चस्व दिखाना शुरू किया। उसने मानवीय मूल्यों को भी परास्त कर दिया। जो अपनी ईमानदारी बरकरार रखने का प्रयास करने लगे, उनकी स्थिति दयनीय हो गई। पेट की भूख ने लोगों को अपमानजनक जीवन गुजारने के लिए विवश कर दिया। चंद्रकांता की कहानियों में आर्थिक समस्याओं को उजागर किया गया हैं।

3.1.1 बेरोजगारी

बेरोजगारी आज की एक गंभीर समस्या है। इस समस्या की गति समाज में दुगनी रफ़्तार से बढ़ रही है। बेरोजगार यह 'बे' तथा 'रोजगार' दो उपसर्ग एवं प्रत्यय के मिलन से बना शब्द हैं। इसका अर्थ है- जिसके पास रोज़गार न हो। रोज़गार के माध्यम से परिवार एवं समाज में उन्नति होती है। यह आर्थिक व्यवस्था को बल देता है। किंतु यह रोज़गार जब बेरोजगार में तब्दील हो जाता है, तो अर्थ व्यवस्था घटती चली जाती है। यह प्रत्यक्ष रूप से परिवार के आर्थिक व्यवस्था पर प्रहार करती नज़र आती है। बिना रोज़गार के परिवार का पालन-पोषण

करना दुश्वार हो जाता है। आर्थिक तंगी उत्पन्न होती है। इसके कारण मनुष्य का विकास भी स्थिर हो जाता है। उसे अपनी प्रतिभा को प्रस्तुत करने का अवसर नहीं मिल पाता। बेरोजगारी के कई कारण हो सकते है- निरक्षरता, भ्रष्टाचार, आलस्य, बढ़ती लोगों की संख्या, आदि। अधिकतर बेरोजगारी के शिकार निम्न एवं मध्य वर्ग के लोग होते है।

'नुराबाई' कहानी में काम छुटने के कारण घर की दयनीय स्थिति को चित्रित किया गया है। सूफी बीमार पड़ने के कारण उसका काम छुट जाता है। घर में छः बच्चे तथा पत्नी थी। पति का काम छूट जाने से उनके घर में आर्थिक तंगी उत्पन्न हो जाती है। बेरोजगार होने के कारण घर में खाने के लाले पड़ जाते हैं। छः बच्चों का पेट पालने में कठिनाईयां पैदा होती हैं। सूफी के पत्नी का नाम नूरा था। वह अपने हात-पैर मार कैसे-तैसे घर की जिम्मेदारी उठाती है। निम्न वर्ग की तथा उम्र होने के कारण उसे काम भी ठीक से नहीं मिल पाता। मेहनत-मज़दूरी कर मुश्किल से दो वक्त का खाना वह जुटा पाती है।। अधिकतर आम-आदमी से रोज़गार छिनने के कारण घर की परिस्थितियों में बदलाव आ जाता है। सारी जिम्मेदारी नूरा के कंदे आ जाती हैं। उसे भी ठीक से काम नहीं मिल पाता। दिन-ब-दिन उनके हालत बिगड़ते जाते हैं। सूफी की बीमारी का भी खर्चा उठाने की क्षमता उनमें नहीं होती। निम्न वर्ग के परिवार में बेरोजगारी के भयावह परिणामों को इस कहानी में प्रस्तुत किया गया हैं।

'सूरज उगने तक' कहानी में भी रैना बेरोजगारी की समस्या से झुंझता दिखाई देता है। उससे रोज़गार छिननने का कारण उसकी ईमानदारी थी। रैना एक इंजीनियर था। जहां वह काम करता था, वहाँ पूंजीपतियों का ही शासन था। सभी रिश्वत खोर थे तथा रैना को भी अपने काम

में शामिल करना चाहते थे। किंतु रैना स्वांवलंबी था। वह उनका कहना नहीं मानता, जिसके कारण उसे बहुत कठिनाईयों का सामना करना पड़ता हैं। पग-पग पर उसके काम में रुकावटे आनी लगती है। अंत में गलत इलजाम लगाकर उसे काम पर से निकाल दिया जाता है। जब वह दूसरी नौकरी की तलाश में जाता है, तो वहाँ भी उसका काम इन्हीं पूंजीपतियों के कारण नहीं हो पाता। समाज में आज भ्रष्टचार बहुत बढ़ गया है। उसके हात जगह-जगह फैल गए है। यह भी बेरोजगारी का एक मुख्य कारण है। इसके वजह से आम आदमी को नौकरी की तलाश में भटकना पड़ता है। प्रतिभा होने के बावजूद काम नहीं मिल पाता। काम न मिलने के कारण घर में भी अवहेलना की जाती है। बेरोजगारी का बोझ ढोना पड़ता है, जो मनुष्य के आत्मशक्ति को कमजोर कर देता है।

'पापा तो बस' कहानी में भी रामकांत की नौकरी के प्रति विवशता को व्यक्त किया गया है। रमाकांत के पिता के देहांत के बाद सारी जिम्मेदारियों उसके कंदो पर आ जाती है। घर में सबसे बड़ा होने के कारण उसे ही अपनी मां तथा छः भाई- बहनों को संभालना पड़ता हैं। वह शिक्षित तो है, किंतु उसके पास नौकरी नहीं है। "तीन साल पहले बी. ए कर चुका है और तब से नौकरी की तलाश में भटक रहा है। यों प्राइवेट लॉ की पढ़ाई कर रहा है और घर खर्च के लिए कुछ लड़कों को पढ़ाता भी है। खर्चा थोड़ा तो चलता है पर तंगी बहुत है।"[1] रमाकांत निम्न-मध्य वर्ग का लड़का है। बी. ए के उपरांत वह लॉ की भी पढाई कर रहा है। किंतु बी. ए. की उपाधि होने के बावजूद भी उसे काम नहीं मिल पा रहा है। अंत में एक जगह उसे एक क्लर्क की नौकरी मिल जाती है, किंतु इंटरव्यू में जाने के लिए उसके पास पैसे नहीं होते। ऐसा दौर आ

गया है कि शिक्षित होते हुए भी युवा वर्ग को नौकरी नहीं मिल पाती है। स्वयं की आकांशाओं को दबाकर परिवार को संभालने के लिए मनुष्य दर-दर की ठोकरे खा रहा है। यह आज की यथार्थ स्थिति है।

आज हज़ारों शिक्षित युवा वर्ग नौकरी की तलाश में भटक रहे है। रोज़गार के चक्कर में भृष्टाचार तथा शारीरिक-मानसिक शोषण का भी शिकार हो रहे हैं। मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा होना चाहता है, किंतु उसे वह मौका नहीं दिया जाता। कड़ी मेहनत करनेवालों को कोई नौकरी नहीं देना चाहता, केवल पैसे खिलाने से तथा सिफारिशों से नौकरियाँ प्राप्त होती हैं। यह समस्या 'धाराशायी' कहानी में देखने के लिए मिलती है। वी. वी. नामक पात्र जी-तोड़ मेहनत करती है किंतु पदोन्नति केवल सिफारिश करनेवालो की ही होती हैं। जो लोग पूंजीपतियों की जी-हजुरी करते हैं तथा हर बात में हामी भरते हैं, उन्हें ही श्रेष्ठ पद से नवाजा जाता हैं। अक्सर नौकरी भी उन्हीं को प्राप्त होती है, जो पूँजीपति वर्ग के नौकर बने आगे-पीछे घूमते रहते हैं। आजकल प्रतिभा का कोई मूल्य नहीं रहा है।

साथ ही बढ़ती जन संख्या के कारण रोज़गार के क्षेत्र में प्रतियोगिताएं बढ़ रही हैं। सभी युवा वर्ग बड़ी-बड़ी उपाधियाँ प्राप्त कर निम्न स्तर की नौकरियों के लिए कतार में खड़े हैं। भले ही काम छोटा या बड़ा नहीं होता, किंतु आज की परिस्थितियों ने ही कुछ ऐसा मोड़ ले लिया है, कि शिक्षा का महत्व घट रहा है। माता-पिता कड़ी मेहनत कर तथा कर्जा लेकर बच्चों को पढ़ाते है, किंतु जब उन्हें कोई नौकरी प्राप्त नहीं होती, तो उन्हें उनकी मेहनत विफल लगने लगती है। 'पापा अब बस' कहानी में जब रामकांत पैसे मांगने दास बाबू के पास आता है, वे

सोचते है – "दास बाबू ने सरकारी लिफाफा देखा और अपनी नज़र से लड़के को जांचा परखा तो उसके चेहरे पर भूख-बेकारी और वक्त की मार के दिए बदनुमा ठप्पे ही नजर नहीं आए, उसके पीछे छिपी एक ईमानदार सिरद की भी झलक मिली जो उन महत्वाकांक्षी ग्रामीण युवकों की होती हैं, जिनके खेत कभी सूखे और कभी बाढ़ के प्रकोप के शिकार हो जाते हैं, जिसकी एक अदद मां रात- दिन खटती पहलौटी की आस को ग्रैजुएट बनाकर गंगा नहाने का सुख और भविष्य का आश्वासन पा लेती है…।"[2]

बेरोजगारी की समस्या जितनी भयावह है उतनी ही दर्दनाक भी है, क्योंकि इस समस्या का शिकार केवल एक मनुष्य नहीं होता अपितु पुरे परिवार को इस समस्या से झुंझना पड़ता है। समय के साथ यह समस्या फैलती जा रही है तथा विशाल रूप धारण कर रही है।

3.1.2 आर्थिक तंगी

भारत में आज भी अधिकतर लोग आर्थिक तंगी से ग्रस्त है। आर्थिक तंगी से तात्पर्य है- पैसों की कमी अथवा धन का अभाव। इसका मूल कारण गरीबी है। पूँजीपति वर्ग सदैव गरीबों का शोषण करता रहा है। न केवल शरीरिक अपितु मानसिक भी। इस कारण वे कभी आर्थिक रूपसे सक्षम नहीं बन पाए। हमेशा उन्हें अपने हालातों से समजौता कर ही जीवन यापन करना पड़ा। उनके जीवन में उत्पन्न हर समस्या का एक मात्र कारण आर्थिक तंगी है। जो उन्हें दो वक्त की रोटी से भी वंचित कर देती है तथा अपने दैनिक व्यवहारों में भी बदलाव लाना पड़ता है। इसी आर्थिक तंगी के कारण आम आदमी को अपनी इच्छाओं तथा आकांशाओं का गला घोटना पड़ता हैं। ताकि वे अपने परिवार का निर्वाह कर सके।

'पुनर्जन्म' कहानी में गोपाल द्वारा आर्थिक तंगी को परास्त करने का भाव दिखाई देता है। गोपाल और माई एक साथ रहते थे। माई गोपाल को मैट्रिक पास करवाना चाहती थी। किंतु गोपाल पलक झपकते ही धनवान बनना चाहता था। वह नहीं चाहता था कि गरीबी में ही उसका जीवन व्यतित हो। दो वक्त के खाने की भी चिंता उन्हें सताती रहती थी। उसे अपनी माँ की हालत पर्दाशत नहीं होती थी। माँ की सेहत का भी ख्याल वह नहीं रख पाता था। उसे पूंजीपतियों के प्रति घृणा थी। इस संदर्भ में उसका कथन है- "ये साले पैसेवाले, मुफ्तखोर, जब जो जी में आये, खरीद सकते है। पुराने कपड़ो की तरह कार्पेट, कारे और बंगले बदल सकते हैं और हम कुत्तों की तरह इनके टुकडों के सहारे जीते है। सोम भाई आउट ऑफ डेट पैंट-कोट यो फेंक देते है ज्यों पोचा लगाने का लीरा हो। विलायत से लौटा लाल भाई आये-दिन नीडोज में पार्टियाँ देता है, दस रूपये का लेमनज्यूस पीता है और दस रूपया फालतू टीप देता है। दो-तीन हजार से इनको क्या फर्क पड़नेवालो है माई?"[3] गोपाल के माध्यम से सभी शोषक जो अभाव ग्रस्त है उनकी मनोदशा व्यक्त हुई हैं। गोपाल को बचपन से ही उच्च वर्ग के लोगों के प्रति चिड़ उत्पन्न होती थी। यह स्वभाविक था। बचपन से ही वह निम्न-उच्च वर्ग का भेदवाव देखता आया था। गरीबी की पीड़ा से वह परिचित था।

कभी- कभी आर्थिक तंगी मनुष्य को इतना विवश कर देती है कि उसे सही और गलत के बीच का फर्क समझ में नहीं आता। वह अपने नैतिक मूल्यों का भी खून कर देता है। अपने पेट की भूख तथा लाचारी को वह सह नहीं पाता। अपने आप को दरिद्रता के चंगुल से मुक्त कराने के लिए वह सबसे छोटा रास्ता अपनाना चाहता है। इस हड़बड़ी में वह कुछ ऐसा कर

देता है कि उसे अंत में पछतावा होने लगता है। एक दिन गोपाल बीस हज़ार लाकर कमरें में रख देता है, तो यह देख दयाल जो उसके घर में काम करता था, उसका जी मचलाने लगता है। अपनी माँ तथा स्वयं को गरीबी से मुक्त करने के लिए वह चोरी करने का निर्णय लेता है, किंतु चोरी के दौरान वह पकड़ा जाता हैं। सुख-सुविधा की लालसा में वह अपने नैतिक मूल्यों को कुचल देता है। इस संदर्भ में उसका कथन है- "इतना पैसा साहब? कौन देता है? मैं बौरा गया था साहब! मैं सिनेमा देखना चाहता था, अच्छे कपड़े पहनना चाहता था साहब, और मेरी माई सर्दी में अकड़ जाती थी। उसके पास गरम ओढ़ना नहीं था.... मैंने कसूर किया है, मुझे जेहल-फांसी दे दो, मैं साहब बनना चाहता था....।"[4] इससे प्रतीत होता है कि उसकी दयनीय स्थिति ने उसे चोरी करने के लिए विवश किया है। इसी भाति बहुत से लोग अपनी अभाव ग्रस्त स्थितियों से समझौता नहीं कर पाते तथा चन सुख पाने की इच्छा के कारण वे चोरी करने का मार्ग अपनाते हैं। इसमें उन्हे कुछ गलत प्रतीत नहीं होता। उनका लक्ष्य केवल अपने परिवार की भूख मिटाना तथा उन्हें बेहतर ज़िंदगी देना होता हैं। उनके हालात उन्हें गलत काम करने के लिए मजबूर करते हैं।

'नि: संग' कहानी में मिस सूद के परिवार की आर्थिक दशा के बारे में बताया है। मिस सूद निम्न वर्ग परिवार की महिला है। उनका बचपन अत्यंत दरिद्रता में गुजरा है। उनकी आर्थिक परिस्थिति बहुत ही बिकट थी। झोपड़ी के भाति ही उनका घर था। मां, बहन तथा भाई की जिम्मेदारी उनपर ही थी। दो वक्त का खाना भी जुटाना मुश्किल था। निजी जरूरते भी पूरी नहीं होती थी। मिस सूद का बचपन अभाव ग्रस्त परिस्तिथियों में गुजरा है। "उसे धूप में तपी वर्षा में

आँसू बहाती अपनी छोटी-सी बरसाती याद आ जाती है। बरसाती में साँस लेनेवाले कीड़े-मकोड़े से बिलबिलाते भाई-बहन । दस टाँको जुड़ी मटियाली साड़ी में माँ का असमय ही झुर्रियाता चेहरा, पुरानी बदरंग निकर पहने फीस के लिए गिड़गिड़ाता भाई, दो फ्राकों को क्रम से धोती सुखाती उदास आँखों वाली बहन....।"[5] इस संदर्भ से ज्ञात होता है कि उनका बचपन बहुत कठिनाईयों से गुजरा है।

नौकरी परिवार को चलाने के लिए अनिवार्य होती है। लोग पैसे कमाने के लिए किसी भी प्रकार की नौकरी करने के लिए तैयार हो जाते है, क्योंकि उन्हें बहुत सारी जिम्मेदारियों का बोझ ढोना होता है। इसलिए अक्सर काम के सिलसिले में वे अपने परिवार से दूर रहने के लिए विवश हो जाते है। उन्हें अपने परिवार से दूर रहना पड़ता है, जो कि किसी भी सामान्य व्यक्ति के लिए खुशी की बात नहीं है। 'खुदा बाकी रहे' इस कहानी में भी मुजीब को आर्थिक तंगी के कारण पैसे कमाने के लिए परिवार से दूर होना पड़ता है। घर का मुखिया होने के कारण सारी जिम्मेदारी उसी पर होती है। बहन की शादी तथा बेटे का दाखिला करने के लिए पैसों की जरूरत थी। जिसके कारण वह जहाज पर काम करने लिए जाता है। "भैय्या को यूनिवर्सिटी में दाखला नहीं मिला। डोनेशन देना होगा। बहन की शादी तय हो गई, तैयारियाँ शुरू नहीं कर पा रहे। सोना तो इवर दो हजार से ऊपर हो गया........ उसके लिए टू-इन-वन, मिक्सी, कैमरा....ले आना।"[6] व्यक्ति पर परिवार की जिम्मेंदारी आ जाने से उसे, वह दायित्व किसी भी कीमत पर निभाना ही पड़ता है। इस कार्य में उसे अपनी निजी इच्छाओं का गला घोटना पड़ता हैं। जैसे मुजीब करता है। उसकी इच्छा थी कि निवृत्ति के पश्चात सुखी से जीवन बिताए किंतु परिवार की

आर्थिक तंगी के कारण वह अपनी इच्छाए दबानी पड़ती है। लेखिका के मतानुसार " ज्यादातर लोग आर्थिक कारणों से ही यहाँ आए हैं। दुनिया घूमने का शौक दूसरा कारण हो सकता है, पहला नहीं। पर बार में लौटना चाहकर भी समुद्र उन्हें आसानी से छोडना नहीं। यो सबके अपने-अपने कारण हैं।"[7] एक बार जहाज पर काम करने लगे की सेवा निवृत्ति के उपरांत ही घर वापस आ सकते हैं। साथ ही जान की झोकीम भी होती है। मुजीब अपने जीवन के उपर अपने परिवार को रखता है। उसका यह उदार भाव इस कहानी में दृष्टिगोचर होता हैं।

शादी- ब्याह का मामला बहुत ही पेचीदा होता ही। आर्थिक रूप से समर्थ मनुष्य ही शादी की जिम्मेदारी ले सकता है। यह केवल पूँजीपति वर्ग के लिए सरल कार्य होता है। परंतु निम्न वर्ग एक बोझ की तरह शादी की जिम्मेदारियां निभाते है। क्योंकि उनकी आर्थिक परिस्थिति बिकट होती है। उन्हें सदैव दहेज की चिंता सताए रहती है। एक-एक पाई जोड़कर वे पैसे बचाते है ताकि बेटी की शादी में कोई रुकावट पैदा न हो। 'सच और सच का फासला' इस कहानी में आर्थिक विषमता के कारण दहेज की मांग पूरी नहीं हो पाती। जिसके कारण तीन बहने कुँवारी रह जाती है। यह निम्न वर्ग की सबसे बड़ी समस्या है, जिसका कारण आर्थिक विषमता है। सदियों से यह समस्या चलती आ रही है। किंतु आज इसका प्रमाण कम दिखाई देता है।

आज के समय में अधिकतर लोग अपनी आर्थिक परिस्थिति देखकर ही कोई निर्णय लेते है। जिससे उन्हें आगे चलकर कोई परेशानी न हो। इससे वे भविष्य में आनेवाली भयावह समस्या से स्वयं को मुक्त कर देते है। 'करीने के कायल' कहानी में जुतशी अपनी आर्थिक दशा

के अनुसार जिंदगी के फैसले लेता हुआ नज़र आता है। उसकी सोच है कि वह तभी बच्चे की कामना करेगा, जब वह आर्थिक दृष्टि से संपन्न होगा। अर्थात अभी उसकी परिस्थिति उतनी अच्छी नहीं है कि वह और एक सदस्य का भार उठा सके। उसे भी पैसों की तंगी है जिसके कारण वह अभी बच्चा करना नहीं चाहता। एक प्रकार से उसका दृष्टिकोण भी सही है। क्योंकि बच्चे के उपरांत घर में अधिक जिम्मेदारियां आ जाती है। यदि आप उन जिम्मेदारियों को उठाने में सक्षम नहीं हो, तो उन्हें थोड़ी देर के लिए टालना ही सही होता है। जब लगे कि अब आर्थिक स्थिति अच्छी हो गयी है, तभी वे कार्य करने चाहिए नहीं तो 'नुराबाई' कहानी में सूफी के समान दशा होने का खतरा रहता है। सूफी बिना सोचे समझे छः बच्चे जन लेता है। लेकिन उसकी परिस्थिति उतने बच्चों को पालने की नहीं थी। इस कारण उसी चौगुनी मेहनत करनी पड़ती है। इस चक्कर में वह बीमार पड़ जाता है और नौकरी भी चली जाती है। दो वक्त का खाना भी मिलना दुश्वार हो जाता है।

'प्यारीयां तो बौरा गया' कहानी में प्यारेलाल जो घर का मुखिया है, वह तीन सौ रुपयों की क्लर्क की नौकरी कर अपने परिवार का निर्वाह करता है। इस दौरान उसे आर्थिक तंगी की समस्या से भी गुजरना पड़ता है। परिवार में सदस्य ज्यादा तथा वेतन कम होने के कारण जिम्मेदारियां निभाने में उन्हें बहुत दिक्कते आती हैं।

धन का अभाव कभी-कभी मनुष्य को इतना असहाय बनाता है कि हालातों के सामने परास्त होने के सिवाय उसके पास और कोई पर्याय नहीं बचता। स्त्री को अपना अस्तित्व सभी मूल्यवान वस्तुओं से अधिक प्रिय होता है। किंतु जब उसके परिवार पर कोई बिकट प्रसंग

उमड़ता है, तो वह अपना सर्वस्व लुटाने के लिए तैयार होती है। 'जंगली जलेबी' कहानी में लक्ष्मी पैसों की तंगी के कारण अन्य पुरुष से संबंध स्थापित करती है। गणेशी और लक्ष्मी निम्न वर्गीय परिवार के लोग है। वे ज्योति शर्मा के सर्वेंटस् क्वाटर में रहते थे। बड़ी मुश्किल से वे दो वक्त की रोटी जुटा पाते थे। किंतु जब पैसों की कमी के कारण अपने दूर के रिश्तेदार से शारीरिक संबंध स्थापित करती है, तो उसे बहुत बुरा-भला कहा जाता है। तब गणेशी भी उसे बहुत मारता है। तब लक्ष्मी का कथन है- "हाँ, करता है हम गन्दा काम, जाकर बोल दो। हमको परवा नहीं। सभीच करता, हम भी करता, वो बड़ा लोग है, वो क्या करता, हमकू मालूम नई? हम पेट के वास्ते करता बो मौज-मस्ती के लिए करता।"[8] लक्ष्मी ने गहरे यथार्थ का खुलासा करने का प्रयास किया है। निम्न वर्ग पेट की भूख मिटाने के लिए जो भी कार्य करते है, उसके आधार पर उन्हें परखा जाता है। किंतु जब वही काम पूँजीवादी वर्ग करता है, तो उन्हें कोई कुछ नहीं पुछता। अर्थात धन के वजन के अनुसार लोगों में भेद किया जाता है। जिसके पास अधिक धन वही राजा तथा जिसके पास कुछ नहीं वह महज उनका प्यादा। उच्च वर्ग द्वारा किया गया गलत कार्य भी अंत में सही ही कहलाता है। जब की गरीबों को गलत काम के लिए कड़ी से कड़ी शिक्षा दे दी जाती है।

आर्थिक तंगी आम आदमी को गुटनों पर गिरा देती है। उनसे उनकी सहन शक्ति के अंतिम हद तक काम करवाती है। इससे मनुष्य में सही और गलत को समझने की शक्ति खत्म हो जाती है। जहाँ उन्हें पेट की भूख ले जाती है, उसी ओर वे अग्रसर हो जाते हैं। उनकी सोचने

की क्षमता संकुचित हो जाती है क्योंकि सभ्य इंसान बनने से पूर्व उन्हें दो वक्त की रोटी के बारे में सोचना पड़ता है।

3.1.3 **आर्थिक शोषण**

आर्थिक शोषण मानवीय मूल्यों की आहुति दे देता है। आर्थिक शोषण से तात्पर्य है- पैसों के अभाव के कारण त्रस्त। यह शोषण दोनों स्तरों पर होता है- मानसिक एवं शारीरिक। बहुमात्रा में गरीब वर्ग इसका शिकार बनता है। उनकी गरीबी ही उनके शोषण का कारण बन जाती है। पेट की भूख तथा परिवार की जिम्मेदारी उन्हें शोषण से ग्रस्त जीवन व्यतित करने के लिए बाध्य करती है। उनके पास कोई अन्य पर्याय नहीं होता। जो है, उसी में ही गुजारा करना पड़ता है। जो भी काम मिले उसे करने के सिवाय उनके पास कोई रास्ता नहीं होता। इस दौरान वे स्वयं के अस्तित्व को भी मिटा देते है। उनकी अपनी आहुति से ही उनका घर चल पाता है। आर्थिक शोषण हर स्तर पर नज़र आता है। चाहें वह घर पर हो या काम पर। इसकी अधिकतर शिकार स्त्रियाँ होती हैं।

'दहलीज पर न्याय' कहानी मे रुक्की का आर्थिक शोषण होता है। अपने बच्चे का पालन- पोषण करने के उद्देश्य से वह अतरसिंह के पास जाती है, इस उम्मीद से की उसे कोई छोटा-सा काम मिल जाए, जिससे वह अपना तथा बच्चे का गुजारा कर सके। पैसों की तंगी के कारण वह घर का काम करने के लिए तैयार हो जाती है। किंतु इस गुजारे की किंमत उसके अपने देह के माध्यम से वसूल की जाती है। अतरसिंह उसका शरीरिक शोषण करता है। जिस आदमी को वह देवता मान बैठी थी, वह असल में एक राक्षस था। किंतु अपने बच्चे के लिए

वह सर्वस्व त्यागने के लिए तैयार हो जाती है। मनुष्य को अपना परिवार अधिक प्रिय होता है। उसकी लिए वह किसी से लढ़ भी सकता है तथा किसी के पैरों में गिर भी सकता है।

'नि:संग' कहानी में भी मिस सूद अपने अहसानों की पूर्ति करने के लिए मालिक से सबंध स्थापित करती है। मिस सूद की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। उन्हें इस दयनीय स्थिति से मालिक ने उन्हें बाहर निकला था। जिसके लिए वह उसके प्रति कृतज्ञ थी। मालिक विवाहित पुरुष था। लेकिन फिर भी मिस सूद उनके साथ रिश्ता जोड़ती है। यह संबंध जोड़ने के पीछे मालिक के एहसान है, जिसकी नीचे वह दबी हुई है। भले ही मालिक उनके साथ जबरदस्ती नहीं करता किंतु वह उसे अपने जाल में फँसाये हुए हैं। जब चाहे वह उनका फायदा उठाता है। कभी-कभार आर्थिक शोषण शोषक के मर्जी से भी होता है। लेकिन उस मर्जी में कहीं न कहीं विवशता छिपी रहती है। जिसका ज्ञान शोषक को नहीं होता। यह आज की यथार्थ स्थिति है।

'नुराबाई' कहानी मे नूरा तथा उसकी छोटी बेटी का आर्थिक शोषण किया जाता है। नूरा के कठिन समय में जद्देशाह एक मसीहा बनकर आता है। नूरा के बच्चों का ख़र्च तथा पति कि दवाईयों का खर्चा वह उठाता है। लेकिन बदले मे वह नूरा के साथ संबंध स्थापित करना चाहता है। जब वह मना करती ही तो कहता है "तूने ससुरी, मुझे समझ क्या लिया है, उल्लू? तेरे खसम के लिए दवाई ढोता फिरू मैं, तेरे टब्बरा के लिए खटता फिरूं मैं और तू पाकीजगी का राग अलापती रहे?"[9] पैसों के अभाव के कारण नूरा उसके साथ सोने के लिए तैयार हो जाती है। उसके समक्ष उसके पति तथा बच्चों की जिम्मेदारी थी, जिसके कारण वह अपने आत्म स्वाभिमान का त्याग करती है। आर्थिक तंगी मनुष्य को इस तरह विवश कर देती है, की न

चाहते हुए भी वही कार्य करने के लिए बाध्य हो जाते हैं। एक दिन नूरा बीमार होने के कारण वह अपनी बेटी को काम पर बेचती है ताकि पैसे कटने से बच जाए। लेकिन उसकी बेटी का ही जद्देशाह बलात्कार कर देता है। पैसों की कमतरता से बाल मजदूर तथा बाल शोषण जैसी समस्याएं उत्पन्न होती दिखाई देती हैं।

कलाकार अपनी कला तथा रचनाकार अपनी रचना के माध्यम से जीवन में एक नया दृष्टिकोण स्थापित करते हैं। जीवन को बेहतर बनाने का प्रयास करते है। किंतु अधिकतर उनका निजी जीवन आर्थिक तंगी की समस्या से गुजरता है। 'सफर में अकेले' कहानी में अमर नामक लेखक की दयनीय आर्थिक व्यवस्था के बारे में बताया गया है। जैसे पूँजीपति निम्न वर्ग का शोषण करता है, उसी भाति प्रकाशक लेखकों का शोषण करता है। सेठ दिनदयाल प्रकाशक है, वे सभी लेखकों को का खून चूसकर धनवान बने हैं। लेखक मेहनत से अपनी रचना लिखते हैं, लेकिन प्रकाशक उन्हें बहुत ही कम किमत अदा करते हैं। जिससे उनकी आर्थिक स्थिति बिगड़ जाती है। ठीक से खाने के लिए खाना भी मुनासिब नहीं होता। इस संदर्भ में कथन है-"रातभर कागज काले करके शरीर और दिमाग दोनों हलका न करने के बाद भी घर में साग बनता है तो दाल नहीं, दाल बनती है, तो दूध गोल करना पड़ता है। तब जाहिर है वे बड़ी निर्ममता से अगर जी से जवाब तलब करती, जो पहले तो भविष्य का आश्वासन देते, प्रकाशकों के गदे और कॉंट्रैट की ललचाने वाली शर्तें बता देते, पर बाद में अपनी मूरी खाली आँखों से पत्नी को देखते-भर रहते ।"[10] प्रकाशक केवल झूठे वादे लेखकों से करते हैं, जैसे नेता लोग चुनाव के समय करते हैं तथा बाद में वे अपने वादों से मुकर जाते हैं। आज के समय में यह कोई नयी बात

नहीं है। आज हर कोई नेता की जगह पर विराजित है और केवल झूठे आश्वासन देने लगा हैं। उनकी बातों से प्रतीत होता है, जैसे वे सच्चे इंसान है किंतु वे अंदर से खोखले होते हैं। सिर्फ अपने स्वार्थ के लिए लोगों का फायदा उठाते है। लेखकों के साथ भी यही व्यवहार किया जाता है। रचनाकारों की व्यथा का प्रतिनिधित्व करता अमर हमे इस कहानी में नज़र आता है।

आर्थिक तंगी, बेरोजगारी एवं आर्थिक शोषण यह तीनों अर्थ के अभाव का परिणाम है। आर्थिक दृष्टि से संपन्न वर्ग ही अपनी निजी आवश्यकताओं को पूर्ण कर सकता है तथा जो वर्ग संपन्न नहीं है, वह दरिद्रता में जीवन व्यतित करने के लिए बाध्य होता है। आज भी यह समस्याएं समाज में पनपति हमे नज़र आती हैं। आर्थिक तंगी तथा पैसों की लालच ने आज भयावह रूप ले लिया है। लोग चोरी तक ही सीमित नहीं रहे हैं। मनुष्य आनंदमय जीवन बिताने के लिए कुछ भी करने के लिए उतावला हो जाता है। उसकी मति भ्रष्ट हो जाती है। यह भी एक कारण है कि जिससे जुर्म की संख्या बड़ रही ही।

कोरोना महामारी के दौरान कई लोगों की नौकरियां चली गयी। खाने के लाले पड़ गए थे। इस समय पैसों की तंगी ने भयावह रूप ले लिया था। किसानों की मेहनत सब खराब हो गयी थी। इस दौरान सभी का बहुत नुकसान हुआ। इसलिए आज महंगाई बड़ती हुई दिखाई देती है। हर एक वस्तु के भाव आसमान को छु रहे हैं। जिससे आम आदमी त्रस्त है। समान रूप से चल रहे परिवेश में अचानक महामारी की लहर आने के कारण सब उलट पुलट हो गया। इसने प्रत्यक्ष रूप से आर्थिक व्यवस्था पर प्रहार किया। साथ ही बेरोजगारी की समस्या भी अधिक प्रमाण में आकार लेने लगी। आज हजारों लोग शिक्षित होते हुए भी बेरोजगार है। आज

परिस्थितियाँ ही ऐसी उत्पन्न हो गयी है कि आम आदमी अपने निजी खर्चे ठीक से नहीं उठा पाता। अत: परिस्थितियाँ कभी समान नहीं रहती। समय के बदलाव के साथ उनमें भी परिवर्तन होता है।

3.2 राजनीतिक युगबोध

किसी भी देश की राजनीति उसके विकास का प्रथम स्तर होती है। यदि राजनीति सुव्यवस्थित है, तो देश की जनता भी संतुष्ट होगी इसका अनुमान लगा सकते हैं। राजनीति की परंपरा राजा-महाराजा के समय से चली आ रही है। आज राजा के स्थान पर नेता लोग विराजमान है। इस गद्दी पर कई लोग आए और गए। राजा, ब्रिटिश, पूँजीपति वर्ग सभी ने इसका लुफ्त उठाया। इसका आनंद एकमात्र वर्ग नहीं ले पाया और वह है- निम्न वर्ग। नेता अपनी राजनीति के माध्यम से दुनिया पर शासन करता है। देश के हित के संबंधी कार्यों के साथ अपने निजी स्वर्थो की भी पूर्ति करता है। उनके द्वारा किये गए कार्य युगीन परिवेश को अधिक प्रभावित करते है। उनके भ्रष्टाचार, दुर्व्यवहार, अन्याय आदि कु-कार्यों को लोगों के समक्ष लाने का कार्य एक साहित्यकार करता है। वह सदैव अपने युगीन परिस्थितियों से सतर्क रहता है। वह अपने साहित्य के माध्यम से राजनीति को दिशा प्रदान करता है।

साहित्य में जनहित की दृष्टि समाहित होती है। साहित्य और राजनीति का परस्पर संबंध रहता है। इस संदर्भ में डॉ. विद्यानिवास मिश्र का कथन है- “राजनीति समझ के बिना साहित्य

जीवंत नहीं होता उसी प्रकार राजनेता साहित्य को बीच-बीच में न देखे, न पढ़े तो वह कुछ छोटा आदमी, कुछ बौना आदमी होकर ही रह जायेगा।"[11] राजनीति का मूल उद्देश्य जनहित है, किंतु नेता अपने निजी स्वार्थ के लिए उसका उपयोग करते हैं। इसलिए उन्हें उनके कर्तव्य का आयना दिखाना आवश्यक हो जाता है। यह कार्य साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से करता है। चंद्रकांता की कहानियों में राजनीतिक बोध का विवेचन किया गया है।

3.2.1 आतंकवाद

विश्व की सबसे जटिल समस्या आतंकवाद है। यह देश की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों को प्रभावित करता है। आतंकवाद से तात्पर्य है- धर्म की आड़ में आतंक या दहशत फैलाना। हिंदी मानक कोश के अनुसार-"भारी अत्याचार संकट के समय उसके भय से उत्पन्न वह विकलता पूर्ण मानसिक स्थिति जिसमें मनुष्य कुछ सोचने-समझने या करने धरने में प्रायः असमर्थ हो जाता है।"[12] आंतकवाद का जन्म धर्म और राजनीति के संबंध से स्थापित होता है। राजनीति धर्म को आधार बनाकर लोगों में आतंक की भावना का प्रसार करती हैं। लोगों में के दूसरे के प्रति घृणा उत्पन्न करती हैं, जिससे लोगों में फुट पड़ सके। अत: धार्मिक-सांप्रदायिकता के आधार पर संगठित समूह द्वारा लोगों को भयभीत करना तथा अपनी देहशत फैलाना ही आतंकवाद कहलाता है। इसके संदर्भ में डॉ. एन. मोहनन का कथन है- "साम्प्रदायिक ताकतें तथा तानाशाही शासन दोनों शक एवं आतंक के द्वारा मानव-मन में असुरक्षा उत्पन्न कर रहे है। इस मायने में दोनों का लक्ष्य एक हो जाता है। मानव मन में

शक और डर पैदा करके उसे अपने अधीन बनाये रखने की फासीवादी मानसिकता का परिणाम है- आतंक का वातावरण बनाये रखना।"[13]

"ऐतिहासिक दृष्टि से आतंकवाद व्यापक असंतोष विद्रोह भावना तथा अनुशासनहीनता की अभिव्यक्ति है। व्यावहारिक रूप में वह राजनीतिक स्वार्थपरता की प्राप्ति के अमोघ अस्त्र बन गया है।"[14] आतंकवाद की पृष्ठभूमि में स्वतंत्रता प्राप्ति का इतिहास निहित है। इसलिए कश्मीर हमेशा से ही वाद-विवाद का केंद्र रहा है। चंद्रकांता कश्मीर की रहिवासी होने के कारण उन्होंने आतंकवाद को समीप से देखा है। उनके परिणामों को भोगा है। इसलिए उन्होंने अपनी कहानियों में आतंकवाद का मार्मिक चित्रण किया है।

'बगावत' कहानी में उदय नक्सलवादी आंदोलन का शिकार होते हुए दिखाई देता है। वहां अपने साथ हुए शोषण का विरोध करने के लिए नक्सलवादी ग्रुप में शामिल हुआ था। वह अपने परिवार के साथ शोषण होते देख नहीं पाया। जमींदारों ने उनका निरंतर शोषण किया है। उनसे त्रस्त होकर उसने उन्हें सजा देने का जिम्मा अपने सर पर उठाया। कॉलेज में नक्सलवादी ग्रुप में शामिल होने के बाद उसे उसके साथियों के साथ जेल में डाल दिया गया, किंतु वह जेल की दीवार लांगकर वहां से फरार भी हो गया। नक्सलवादी बनने के पीछे का कारण बताते हुए वह पत्र में लिखना है- "मैं शोषण का विरोध करना चाहता था। मेरे माता-पिता, बहन-भाई तमाम उम्र जमीदार से शोषित होते रहे। छोटे-छोटे अहसानों की कीमत वे हाइतोड़ श्रम में अपनी हड्डिया गलाकर चुकाते रहे। मैं बागी निकला चार अक्षर पढ़ गया, भाईयों की ही कृपा से। वे लोग बंधुओं मजदूर बनकर जिस चक्रव्यूह में फँस गए थे, उससे मुझेबचाना चाहते थे।"[15]

वह जमींदार का अन्याय और सहन नहीं कर पाता तथा जमींदार की हत्या कर उसे पुलिस पकड़ लेती है। उसे फांसी की सजा भी सुनाई जाती है। इससे यह प्रतीत होता है कि आतंकवाद में सहभागी होने के लिए मनुष्य को उसकी आर्थिक स्थिति विवश कर देती है। उस पर हो रहे अन्याय, शोषण उसे विरोध करने के लिए बाध्य करते हैं। इस चक्कर में मनुष्य सही और गलत का फैसला नहीं कर पाता। उस पर अपने परिवार को न्याय दिलाने का जुनून सवार रहता है। किसी भी मनुष्य को यदि उसकी सहनशक्ति की सीमा को पार कर उसे दबोचा जाए, उसका शोषण किया जाए, तो वह सह नहीं पाता उसके मन में चल रहा तूफान एक दिन फूट कर बाहर अवश्य आता है।

'कित्थे जाणां पुत्तर?' कहानी में भी आतंकवाद का भयावह चित्र दिखाया गया है। आतंकवादियों द्वारा धमकियों से भरे रूक्के आने लगते हैं। लोगों को बताया गया था कि वे लोग गाँव छोड़कर चले जाए। किंतु लोगों की सभी संपत्ति उनके गाँव में थी। उसे छोड़कर वे भला कैसे जा सकते थे। प्रतिदिन भयानक तथा दर्दनाक समाचार सुनायी देते थे। खेत में बलवंत की लाश मिली, जोधेपिण्ड में पूरे परिवार की हत्या कर दी गई तथा जवान लड़कियों को उठाकर ले जाया गया। इससे लोगों में दहशत फैल जाती है। एक दिन बेजी के घर रूक्का आकर उन्हे गाँव छोड़कर चले जाने की धमकी देता है। किंतु उन्हें समझ में ही नहीं आता कि वे कहाँ जाए। लेकिन उसी रात बेजी की हत्या कर दी जाती है। "फिर किसी ने कोई हिसाब न रखा कि कितनी गोलियाँ चली, कितना खून बहा, किस-किस की चीखें रात के उस दूसरे प्रहर में फरियाद बनकर गूँज उठी। सुबह के हल्के उजास में आसमान हलका गुलाबी था पर बेजी के

घर की धरती खून से नहा उठी थी, लाल जवान खून धारों में बहकर जगह-जगह जम गया था। बाबू, गौरी, किशना, सावित्री और दरवाजे के बाहर बेडे में औंधा पड़ा सतिन्दर आश्चर्य ।"[16] आतंकवादियों के मन में किसी के प्रति उदारता का भाव नहीं होता, उनपर केवल लोगों को मारने का जुनून सवाँर रहता है। वे अपने जुनून के लिए खुद की कुर्बानी भी दे सकते है।

'रहमते बारान' कहानी में भी इसी प्रकार की घटना घटित होती है। शंकर आतंकवादियों के भय से गोदाम में छिप जाता है। किंतु उसे ढूंढकर वहीं पर मार दिया जाता है। जब उसकी पत्नी ने उस तथा बच्चे को भी मार देने की मांग की तो, आतंवादियों ने निर्दयता के साथ कहा की उस शंकर के लिए रोने वाला कोई तो चाहिए।

'वितस्ता का जहर' कहानी आतंकवाद भयावह दृश्य देखने के लिए मिलता है। दादी खिडकी में से रास्ते पर खून से लथपथ लाश देखती है, तो वह समझ जाती है कि कोई राक्षस यादी में घुस आया है। एक-एक कर लोगों को उठा रहा है। निरंजन को पता चलता है कि यह काम आतंकवादियों का है। जिन्हें यह सब पाकिस्तान में सिखाया गया है। उन्हें फुसलाया और गुमराह किया गया है। इनसे हिंदु ही नहीं मुस्लिम भी डरे हुए थे, क्योंकि वे लोग घरों में घुसकर मुस्लिम स्त्रियों को जुलूस में शामिल होने के लिए धमकाते थे। सभी घरों को आग लगाते थे।

आतंकवादियों का हमेशा से एक ही उद्देश्य रहा है कि कश्मीर को पाकिस्तान में शामिल करना। इससे संबंधित 'शरणागत दीनार्त' कहानी में कश्मीर पंडितों को धमकी दी जाती है कि उन्हें पाकिस्तान चाहिए। साथ ही पंडितों को अपनी पत्नियों को छोड़कर चले जाए। जब लसपंडित उसकी धमकी की उपेक्षा करता है, तो आधी रात को चार आतंकवादी उनके घर में

घुस जाते हैं। काशा ने जब उनका विरोध किया, तो उसे वहीं ढेर कर देते हैं। वे लसपंडित की पुत्री जया को उठाकर ले जाते हैं। इसी दहशत के कारण अनेक परिवार घर छोड़कर वहाँ से चले जाते है। क्योंकि यहाँ बहू-बेटियां सुरक्षित नहीं थी।

'आत्मबोध' कहानी के माध्यम से हिंदू-मुस्लिम के बीच होती लडाई पर चर्चा की गई है। इस संदर्भ में ईरान-ईराक युध्द में एक ही मजहब के लोग जो एक-दूसरे के खून के प्यासे होते हैं, उनके बारे में बताया गया हैं। इस पर मुंशी रामलाल को लगता है कि वास्तव में खुमैनी साहब देश के ही नहीं पुरे इस्लाम के शत्रु है। इनके इस मत पर सोहन भाई कहते है कि- "खुमैनी ने राजतंत्र के विरूध्द बगावत की। इस झंडाबरदारी में उसे सफलता भी मिली। पर वो कहते है न कि कामयाबी का एक सुखर, एक नशा होता है। यह नशा कभी अंगूर की बेटी के नशे से भी ज्यादा खतरनाक हो सकता है। उसके साथ ऐसा ही हुआ। एक मोनार्क को हटाकर वह खुद दूसरा मोनार्क बन बैठा।"[17] निहाल भाई की दृष्टि में युध्द खुमैनी का नशा है, इसलिए आज ईराण की हालात खस्ता हो गयी है। ईराक युध्दबंदी चाहता है परंतु खुमैनी मानता नहीं है। यहाँ की स्थिति बहुत बिकट होने के बावजूद बच्चों को युद्ध में शामिल किया जा रहा है। बशीरमियाँ अतीत के नेता एवं राजनीति के संदर्भ में कहते है- "एक जमाना था जब हमारे स्मरण नेताओं में दम था। लोग उनके इशारों पर जाने कुर्बान करने को तैयार रहते थे। आज कहाँ वह सत्याग्रह की आवाज बुंलद करनेवाला लँगोटी बाबा गांधी, और कहाँ 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा ? कहनेवाला वह दमदार सुभाष बोस ?'"[18] आज वे नेता नहीं रहे, जो देश के नाम पर स्वयं का बलिदान तत्पर रहते थे। देश को स्वतंत्र करने हेतु भगतसिंह, राजगुरू, चंद्रशेखर आजाद ने

अपना बलिदान दिया। किंतु आज स्थिति विपरीत हैं। सभी एक दूसरे के खून के प्यासे है। आज भाई-भाई में दुश्मनी पनप रही हैं। वे एक दूसरे का गला काँट काटने केलिए बेताब हैं। आज की राजनीति साम, दाम, दंड, भेद की नीति को अपना रही हैं।

चंद्रकांता की कहानियों में आतंकवाद की समस्या मुख्य पैमाने पर नजर आती है। आज आतंकवाद समाज को खोकला बना रहा है। आतंकवाद एक कैंसर है जो फैलता चला जा रहा है। इससे देश के विकास में रुकावट उत्पन्न होती है।

संदर्भ

1. चंद्रकांता, सूरज उगने तक, पृ. 213
2. वही, पृ. 214
3. चंद्रकांता, दहलीज पर न्याय, पृ. 133
4. वही, पृ. 132
5. चंद्रकांता, सलाखों के पीछे, पृ. 75
6. चंद्रकांता, ओ सोनकिसरी, पृ.. 74
7. चंद्रकांता, ओ सोनकिसरी, पृ. 68
8. चंद्रकांता, सूरज उगने तक, पृ. 184
9. चंद्रकांता, दहलीज पर न्याय, पृ. 123
10. चंद्रकांता, ओ सोनकिसरी, पृ. 100
11. मिश्र, डॉ. विद्यानिवास, साहित्य का खुला आकाश, पृ. 67-68
12. वर्मा, सं. रामचंद्र, मानक हिंदी कोश, पृ. 257
13. डॉ. एन. मोहनन, उत्तरशती का हिंदी उपन्यास, पृ. 4
14. सामान्य ज्ञान दर्पण पत्रिका
15. चंद्रकांता, काली बर्फ, पृ. 123
16. चंद्रकांता, सूरज उगने तक, पृ. 49
17. चंद्रकांता, ओ सोनकिसरी, पृ.. 43

18. वही, पृ. 44

चतुर्थ अध्याय

चंद्रकांता की कहानियों में भाषिक संरचना

4. चंद्रकांता की कहानियों में भाषिक संरचना

भाषा और शैली दोनों साहित्य की अनिवार्य शर्थ है। इनके बिना साहित्य की रचना संभव नहीं है। साहित्य की सफ़लता इन दोनों पर ही निर्भर होती हैं। इनके माध्यम से साहित्य अधिक प्रभावी बनता है। जिससे पाठकों की रुचि में भी वृद्धि होती है। साहित्यकार अपने समाज का अध्ययन कर उसके अनुरूप ही भाषा और शैली का प्रयोग करता है, जिससे वह पाठकों का संबंध उस परिवेश के साथ जोड़ सके। अत: भाषा और शैली साहित्यकार के दो अनमोल रत्न हैं, जिससे साहित्य एक सुनिश्चित रूप ग्रहण करता है।

4.1 भाषा

भाषा एक इकाई है, जो लोगों को एक सूत्र में बांध कर रखती है। यह केवल अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं अपितु एक व्यक्ति को अन्य व्यक्तियों से जोड़े रखने का साधन भी है। भोलानाथ तिवारी के अनुसार-"भाषा उच्चारण-अवयवों से उच्चरित, मूलतः प्रायः यादृच्छिक ध्वनि-प्रतीकों की वह व्यवस्था है, जिसके द्वारा किसी भाषा समाज के लोग आपस में विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।"[1] विचारों की अभिव्यक्ति भाषा की सर्वश्रेष्ठ प्रवृत्ति है। इसके द्वारा ज्ञान के भंडार में वृद्धि होती है। साहित्यकार भाषा का आधार लेकर अपने भावों तथा विचारों का संप्रेषण करता है। "भाषा एक ऐसे शब्द समुह का नाम है, जो एक विशेष क्रम से व्यवस्थित

होकर हमारे मन की बात दूसरे के मन तक पहुँचाने और उसके द्वारा उसे प्रभावित करने में समर्थ होती है।"[2]

भाषा में कथ्य अथवा घटनानुसार शब्दों का चयन किया जाता हैं। जिससे विषय तथा शब्दों में साम्य उत्पन्न हो। इसके द्वारा हम विषय से सरल रूप संबंध जोड़ पाते हैं । डॉ. श्याम सुंदरदास के अनुसार- "भाषा का शाब्दिक अर्थ है - भाव प्रकाशन करने का साधन, जनसामाज में प्रचलित शब्दावली और उसके बरतने का ढंग, व्यक्तिविशेष का लिखने का ढंग।"[3] भाषा में स्थानीय परिवेश का चित्र आँखों के सामने उत्पन्न करने का सामर्थ्य होता है। साहित्यकार को भाषा के चयन के समय सावधानी बरतनी पढ़ती है, क्योंकि गलत भाषा या गलत शब्द विषय को दिशाहीन बना सकते हैं। इसलिए आवश्यक है की भाषा में शब्दों का चयन सतर्कता तथा सजगता से किया जाए। घटना के साथ-साथ भाषा पात्रानुकूल भी होनी चाहिए। इससे व्यक्ति की पृष्ठभूमि,आचार-विचार, भाव, स्वभाव, आदि का बोध होता है। जिससे मानवीय संबंध समझने में आसानी होती है।

4.1.1 शब्द

चंद्रकांता की कहानियों में भाषा का सुनिश्चित रूप प्राप्त होता है। विभिन्न शब्दों का प्रयोग उनकी कहानियों में दृष्टिगोचर होते हैं- तत्सम, तद्भव, देशज एवं विदेशी। इन शब्दों के प्रयोग से कथ्य का विषय अत्यधिक गरिमा प्राप्त करता है। कहानियों में आए विभिन्न शब्दों का विश्लेषण कुछ इस प्रकार है-

4.1.1.1 तत्सम शब्द

तत्सम शब्द का अर्थ है- संस्कृत शब्दों में परिवर्तन न करके उसी रूप में प्रयोग करना। इन शब्दों के प्रयोग से भाषा प्रौढ़ बनती हैं।अधिकतर विद्वानों द्वारा इन शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इसके उदाहरण कुछ इस प्रकार है-

सत्याग्रह, जल प्रपात, विसर्जन, शयन कक्ष, आभूषण, दैत्यकार, अवमूल्यन, साधन्यवाद, समारोह, आत्मीय, स्पर्श, क्लेशनाशिनी, निष्प्राण, साम्राज्य, सूर्य, उत्कृष्ट, विजयस्तंभ, प्रथम, प्रांगण, अनुष्ठान, उष्ण, स्नान, स्वीकृति, मंत्र, प्रति, सूर्योदय, सुर्यास्त, संकल्प, गृहस्थी, दृश्य, समर्पित, अखंड, भर्त्सना, कामधेनु, स्वार्थ, संपन्न, पवित्र, गृहस्वामी, अमृत, प्रश्न, प्रार्थना, पुरुषोत्तम, शरणार्थी, अग्निगंध, स्वादिष्ट, धर्मस्य, विद्युत, धन्वंतरि, श्राद्ध, सौष्ठत्व, इत्यादि।

4.1.1.2 तद्भव शब्द

तद्भव शब्द का अर्थ है- जो मूल संस्कृत शब्दावली है, किंतु बोलचाल में प्रयुक्त होने के कारण उनका सरलीकरण हो गया है। उच्चारण में कठिनाई न होने के कारण इन शब्दों का प्रयोग अधिकतम होता है। जन सामान्य अपने दैनिक जीवन में इन शब्दों का प्रयोग करते है। इनके उदाहरण कुछ इस प्रकार है-

सच्चा, सूरज, ब्याह, सात, माता- पिता, शाम, काम, साफ, घर, दुबेल, खीर, चौथी, जेठ, सोना, मरम, ब्याहता, मरद, कीड़ा, नारियल, नींद, बायां, जीभ, भैया, भीतर, बहन, माँ, आँसू, आधा, रात, सूखे, भगत, समंदर, इत्यादि।

4.1.1.3 देशज शब्द

देशज शब्द का अर्थ है- देशी। किसी भी देश में बोले जानेवाले शब्दों को देशज कहा जाता है। वे शब्द उसी देश या किसी स्थान में जन्म लेते हैं। अधिकतर उसी जगह के लोग इन शब्दों का प्रयोग करते हैं। यह शब्द बोलचाल की भाषा से बनते हैं। लोकभाषा में यह शब्द प्रचुर मात्रा में पाए जाते है। इनके उदाहरण कुछ इस प्रकार है-

ओढ़नी, झुग्गी, लू, कढी, ठसाठस, चक्करघिनी, छेड़ाछेड, हार, फोकट, पड़ाव, कड़ाही, घाघ, झोल, चन्नट, चटनी- अचार, झुरमुट, काढा, कीचड़, थप्पड़, जबड़े, हड़बड़ी, खटिया, झंझट, झापड़, फुसफुसाहट, लफड़ा, पचडा, धक्का, टोकरी, इत्यादि।

4.1.1.4 विदेशी शब्द

भारत में विविध शासकों ने राज्य किया है। सर्वप्रथम आगमन मुस्लिम शासकों का हुआ था। वे अरबी- फारसी भाषा का प्रयोग करते थे। उसके पश्चात ब्रिटिश ने भारत पर राज्य किया। ब्रिटिश के आने के पश्चात अंग्रेजी भाषा का प्रयोग बढ़ने लगा। इस कारण साहित्य में अधिक तौर पर अरबी-फारसी तथा अंग्रेजी भाषा का प्रभाव दिखाई देता है। पात्र, वातावरण तथा परिवेश जी अनुसार लेखिका ने इन शब्दों का चयन किया है। इनके उदाहरण कुछ इस प्रकार है-

i) अरबी- फारसी शब्द

तमीज, इंतजाम, दहशत, मनहूस, नजाकत, दरख़्त, इनायत, शिनाख्त, सलीकेदार, खुद, आराम, सूद, सरदार, दीवार, लेकिन, राह, रंग, यार, याद, मरहम, जोर, चेहरा, मुफ्त, मजा, बीमार, बेरहम, गरम, गुम, खूब, पेशा, नामर्द, कमीना, उम्मीद, आईना, आवाज, आवरा, खुश, इत्यादि।

ii) अंग्रेजी शब्द

नाइट शिफ्ट, एंबुलेंस, सन स्ट्रोक, स्विच ऑफ, ड्राइंग, टांसिल, आपरेशन, हाउ ऑफुल, रेस्पेक्ट, ज़ेबरा क्रोसिंग, हयूमन साइकोलॉजी, इमोशंस, किचन, सीनियरिटी, एलर्जी, डायवर्स, डाइनिंग टेबल, इंस्टिट्यूट, मैच्योर, एलर्जिक प्रॉब्लम, शॉपिंग मॉल, यूनीक, एडजेस्टमेंट, अटेंशन, अस्पताल, डॉक्टर, इत्यादि।

4.1.1.5 शब्द-युग्म

जब वाक्य में दो या दो से अधिक शब्दों का समूह होता है, जो साथ में आकार, अर्थ अथवा भाषा के आधार पर मिलकर पूर्ण अर्थ दर्शाते हैं, उसे शब्द युग्म कहा जाता है। यह वाक्यों को अधिक सुगम बनाते हैं।। इनके उदाहरण कुछ इस प्रकार है-

उठ-गिर, भूख-प्यास, दायें- बायें, आस-पास, कच्चा- चिट्ठा, बिच्छू-इच्छु, खाते-पीते, चोरी-छिपे, रफा-दफा, कटने-बहने, इक्का- दुक्का, सरदार-सरदारनी, चाचा- चाची, धर्मी- कर्मी, हट्टे-

कट्टे, दुहराओ-तिहराओ, यहाँ- वहाँ, अंगड- खंखड, लंबी-चौडी, उलट- सुलट दम-खम, इत्यादि।

इस प्रकार चंद्रकांता की कहानियों में तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशज शब्दों का प्रयोग किया गया है। साथ ही शब्द युग्म भी कहानियों में प्रयुक्त है।

4.1.2 मुहावरे, कहावते तथा लोकोत्तियाँ

रचनात्मक साहित्य में मुहावरे, कहावते तथा लोकोत्तियों का प्रयोग किया जाता है। ये भाषा अधिक प्रभावशाली बनाते हैं। ये संक्षिप्त, मार्मिक तथा सरस होते है। इनमें ही उनकी अर्थवत्ता होती है। डॉ. कुंदनलाल के अनूसार- "मनुष्य ने संसार में अपने लोक व्यवहार में जिन-जिन वस्तुओं एवं विचारों को बहुत कौतुहल में देखा समझा और बार-बार उनका अनुभव किया, उन्हीं के शब्दों में बांधा है, यही मुहावरे कहलाते है।"[4]

हिंदी विश्वकोश के अनुसार- "अपने कथन के पुष्टि में शिक्षा या चेतावनी देने के उद्देश्य से किसी बात को किसी आड़ में कहने के अभिप्राय अथवा उपालंभ देने और व्यंग्य करने आदि के लिए अपने में स्वतंत्र अर्थ रखनेवाली जिस लोकप्रचलित तथा सामान्यतः सारगर्भित, संक्षिप्त एवं चटपटी उक्ति का लोक प्रयोग करते हैं, उसे लोकोक्ति, कहावत नाम दिया जा सकता है।"[5] यह कथ्य में प्रयुक्त होने पर पाठकों की रचना के प्रति अधिक रुचि उत्पन्न होती है।

चंद्रकांता की कहानियों में विषय के अनुसार मुहावरे, कहावते तथा लोकोत्तियों का उपयोग किया गया है। इनके उदाहरण कुछ इस प्रकार है-

माँ के लिए तो काला अक्षर भैंस बराबर हैं, तरबूज तरबूज को देखकर रंग पकड़ गया, ओखली में सिर दे?, वीणा जी ने जीभ दाँतो तले दबा ली, अमरजी के कान पर जब जूँ नहीं रेंगती, हमें पैसे देते नानी मरती है..., जल में रहकर मगर से बैर करके तुम कब तक जिंदा रहोंगे?, शिबू द्राबी जैसा निम्न मध्यवर्गीय जीव किस खेत की मूली है , जिम्मेदारियों को सोचकर ही साँप सूँघ गया, इत्यादि।

4.1.3 सूक्ति प्रयोग

सूक्ति एक संक्षिप्त कथन है, जिसका प्रयोग पारंपरिक तथा महत्वपूर्ण सत्य को व्यक्त करने के लिए किया जाता है। यह कथन वास्तविक होता है तथा जीवन के सत्य को उजागर करता है। इसकी विशेषता यह कि ये कम शब्दों में अधिक आशय संप्रेषित करता है। लेखिका की कहानियों में प्रयुक्त सूक्तियाँ संक्षिप्त रूप में विषय की उदात्ता को प्रस्तुत करती हैं। इनके उदाहरण कुछ इस प्रकार है-

खाली दिमाग शैतान का कारखाना होता है, एक मंजिल की तलाश वाले साथ चलें, तो रास्ता जल्दी कटता है, जो भविष्य के सपने बुनते है, वे दरअसल जिंदगी जीते नहीं, जीने की योजनाएँ बनाते बनाते ही मर जाते है, प्रेम एक सार्वभौमिक अहसास है, इसमें देश-जाति, रंग-रूप कुछ भी आड़े नहीं आता....., यही शायद आज का सच है। तब या तो हम नियति को

समर्पित होकर समझौते करने लगते है या तटस्थ होकर बुध्द बन जाते है, आस्था, विश्वास ही तो पत्थर को भगवान बना देता है न ?, इत्यादि।

4.1.4. बिम्बात्मकता

बिंब से तात्पर्य है- चित्र। यह अंग्रेजी शब्द इमेज का रूपांतर है। इसका अर्थ- किसी भी पदार्थ या वस्तु को चित्र बद्ध करना या मूर्त रूप प्रधान करना है। कॉलरिज के अनुसार- "बिंब किसी दृश्य का चित्र, संवेदना की प्रतिच्छवि, एक विचार, मानसिक घटना, अलंकार अथवा दो अलग-अलग अनुभूतियों के तनाव में से निर्मित भाव की स्मृति है।"[6] सामान्य शब्द में अप्रत्यक्ष भाव तथा विचार की पूर्ण रचना ही बिंब है। यह एक ऐन्द्रिय शब्दचित्र है। इसके माध्यम से रचनाकार अपने भावों तथा विचारों को मूर्तरूप देता है। चंद्रकांता की कहानियों में भी बिंब परिलक्षित होते है। इसके उदाहरण कुछ इस प्रकार है-

'पहाड़ी बारिश' कहानी में प्रातःकाल के वातावरण का चित्र प्रस्तुत है- "आकाश लगभग साफ ही था। रात थोड़ी वर्षा जरूर हुई थी, पर सुबह बादल छूट गये। बुहारी लगे आसमान के बीच चटक नीला रंग निकल आया और सूरज की चमकदार किरणों की छुअन से धुली-धुली हरी पत्तियाँ खिलखिला उठी।"[7] कश्मीर का पतनीटाप स्थल अपने नैसर्गिक सौंदर्य के कारण आकर्षण का केंद्र रहा है। वहाँ के वृक्ष, पहाड़ियाँ, आकाश, बर्फ, सभी को आनंदित कर देते है- "पतनीटाप पर घने चीड़, देवदार व सरो के जंगलों से घिरी पहाड़ियों पर आकाश टुकड़ों में बँटा नजर आता था। सुरमई पहाड़ियों पर बर्फ की चादर सूर्य की गुनगुनी किरणों से पिघलती हुई धार बनकर जगह-जगह झरने बहा रही थी।"[8]

सूर्योदय के समय होनेवाले सुहाने वातावरण को चित्रित किया गया है। "खिडकी के पार बरामदे की जाली पर हवा के थपेडों से फूल पौधे लोट रहे हैं। पेड़ों की पुनगियों पर हल्की सुनहरी परत चढ़ आई है, शायद सूर्योदय हो रहा है।"[9]

4.1.5 प्रतिकात्मकता

प्रतिकात्मकता से तात्पर्य है- किसी संकेत के माध्यम से वस्तु की व्यंजना करना। प्रतिक के माध्यम से भाव तथा विचार को व्यक्त किया जा सकता है। डॉ. भगीरथ मिश्र के अनुसार - "अपने रूप, गुण, कार्य या विशेषताओं के सादृश्य एवं प्रत्यक्षताओं के कारण जब कोई वस्तु या कार्य किसी अप्रस्तुत वस्तु, भाव-विचार, क्रिया-कलाप, देश, जाति, संस्तुति आदि का प्रतिनिधित्व करता हुआ प्रकट किया जाता है, तब वह 'प्रतीक' कहलाता है।"[10] रचनाकार के भावों एवं विचारों को संक्षिप्त में अभिव्यक्त करने का यह सशक्त माध्यम है। इसके प्रयोग से कथ्य में बौद्धिकता का समावेश होता है। इसके उदाहरण कुछ इस प्रकार है-

'खून के रेशे' कहानी में पत्नी के देहांत के बाद पिताजी ने सशक्त रहकर अपने बच्चों का पालन पोषण किया। उनके बच्चों को किसी की कमी न होने दी। किंतु वृध्दावस्था में उनकी स्थिति दयनीय हो गयी। उनके बेटे उनकी उपेक्षा करने लगे। स्वयं की स्थिति को चित्रित करते हुए वे कहते है- "जिन्दगी के जंग में आज वह शेर की तरह गुर्राने वाला योध्दा हार गया था, गिर गया था, और उसे उठने की इच्छा नहीं हो रही थी। पतझड़ में गिरते पत्ते की तरह पीला,

कमजोर, अकेला और उदास।"[11] 'अभ्यस्त' कहानी में युवावस्था में तेजा की मृत्यु हो जाती है। परिवार के सभी लोग सदमें में थे। नायिका जब तेजा की माँ से मिलने जाती है, उस दौरान दोनों की मनःस्थिति को व्यक्त किया गया है- "आंटी की सूनी आँखों से पानी धार बनकर बहने लगा। मेरे भीतर काला समुद्र उफन रहा था। बाहर कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। एक भारी-भरकम अन्धेरी चट्टान के सिवा, जिसके नीचे में बराबर दवती जा रही थी।"[12]

'फिलहाल' कहानी में आरती के जीवन की त्रासदी को व्यक्त किया है- "आरती के जीवन को गुनगुनी धूप कब नहला गयी और कब तन-मन को झुलसाकर चली गयी, उसे कुछ भी याद नहीं आता। सांध्यकालीन उजास में जीती वह, अपनी जड़ होती आकांक्षाओं के विस्तार पर स्मृतियों के फाहे रखती, कुछ सोचने की चेष्टा करे भी तो लगता है कि उसकी यह झुलसन तो जन्म-जन्म से उसके साथ रही है।"[13]

'सूरज उगने तक' कहानी में चीफ साहब के क्रोध को 'ज्वालामुखी चधक रहा है' कहकर उनके क्रोध को ज्वालामुखी का प्रतीक देकर व्यक्त किया गया है। 'नौवें दशक की दोस्ती' कहानी में बच्चों के आने से मधुरिमा के घर में रौनक आ जाती है, किंतु जब वे वापस लौटते है, तो फिर आ सन्नाटा छा जाता है। मधुरिमा के अकेलापन को प्रतीकात्मक रूप में रेखांकित किया गया है- "मन तव दूहरे अकेलेपन में भटकने लगता है। सोये ताल को ज्यों कंकड़ फेंककर कोई बेचैन लहरें उठा कर जगा दे। फिर समय लगता है दुबारा उस शांत मनःस्थिति में लौटने तक।"[14] 'काली बर्फ' कहानी में धर्म के नाम पर दहशत फैल जाती है। कश्मीर में सभी ओर भय और हिंसा फैल जाती है- "वादी के आसमान पर जो काले बादल काफी दिनों से इकट्ठा

हो रहे थे, अचानक कहर बनकर बरस पड़े। किसी ने काले मेघ के छितरे टुकड़ो पर कभी गौर ही नहीं किया। सोचा भी नहीं कि इकट्ठा होकर वे सदियों की मजबूत इमारतों को पलक झपकते तहस-नहस कर देंगे। पर हुआ कुछ वैसा ही।"[15]

4.1.6 व्यंग्यात्मकता

व्यंग्यात्मक से तात्पर्य है- उपहास या ताना देना। व्यंग्य का अर्थ है- किसी वस्तु अथवा व्यक्ति की आलोचना करने के लिए हास्य, व्यंग्य, कटाक्ष या उपहास का प्रयोग करना। हरिशंकर परसाई के मतानुसार- "व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है, जीवन की आलोचना करता है, विसंगतियों, मिथ्याचारों और पाखण्डों का पर्दा काटा करता है। अच्छा व्यंग्य सहानुभूति का सबसे उत्कृष्ट रूप होता है।"[16] साहित्य में प्रतीक के माध्यम से व्यक्ति तथा समाज की विसंगतियों को उजागर किया जाता है। इसके द्वारा समाज में निहित विडंबनाओं तथा कुरीतियों पर प्रहार किया जाता है। डॉ. रवीन्द्रनाथ त्यागी के अनुसार- "समाज की कुरीतियों का भण्डाफोड़ करने का कार्य प्रमुखतः व्यंग्य द्वारा ही हो सकता है। यदि उसमें हास्य भी समाविष्ट हो जाय तो रंग और भी तेज हो जायेगा।"[17] प्रतिकों के माध्यम से साहित्य में रोचकता उत्पन्न होती है। मुख्यतः समाज मे व्याप्त विसंगतियों पर प्रहार कर समाज को सत्य से वाक़िफ़ करना इसका प्रमुख लक्ष्य है। यह चंद्रकांता की कहानियों में प्राप्त होते हैं। इनके उदाहरण कुछ इस प्रकार है-

आज समसामयिक साहित्य में विवाह केवल यौन संबंध, घुटन और संत्रास परिलक्षित होता है। उसमें केवल यौन संबंधों के प्रति आकर्षण दिखाई देता है। इस पर व्यंग्य प्रस्तुत किया गया है-"भई मुझे तो आज का हिंदी लिटरेचर जरा भी पंसद नहीं। क्या-क्या उटपटाँग रहता है कोई मॉरेल नही, ऑबजेक्ट नहीं, खाली सेक्स, घुटन और क्या कहते है उसे, संतरास ।ऐसा लिटरेचर नई पीढ़ी के मॉरल को चौपट करनेवाला है। हिंदी लेखकों में 'इन्फीरियोरिटी काम्पलैक्स' अधिक है।"[19] इस प्रकार आज की रचनाओं में केवल पाठको को आकर्षित करने के लिए यौन संबंधों के बारे में अधिक लिखा जाता है। उस कर लेखिका ने व्यंग्य किया है।

वर्तमान विसंगतियों पर व्यंग्य के माध्यम से मार्मिक प्रहार किया जाता है। आज के विज्ञापनों के संदर्भ में लेखिका का करती है – "मिस मदन बेचारी तो 'टिवेण्टीज' में ही मुझ गई है। फेमिना के फैसपैक आजमा आजमा कर हैरान हो गई है। मेकअप एडवरटाइजमेण्ट के पन्ने छाँटती रहती है। पौण्डस कोल्ड क्रिम की सात दिनों की योजना, जोन्सन्स कैसमेटिक्स की दस दिन, ऐन फ्रेंच की पन्द्रह....। फिर भी मुहाँसे, आइयाँ बराबर नजर आते हैं।"[19]

'मामला घर का' कहानी की शिब्बू त्रियाहठ से मजबूर था। इस हठ के आगे तो बड़े-बड़े पुरुषार्थी झंक जाते है- "सिया सुकुमारी के हठ पर श्रीराम स्वर्ण मृग के पीछे, जंगल-जंगल भटके कि नहीं? गौतम बुध्द ने तो त्रिया हठ की विकट स्थिति से बचने के लिए ही, गोपा को नींद में सोयी छोड़, रातों-रात राजमहल त्याग दिया।"[20] चंद्रकांता की कहानियों में समाज में व्याप्त विसंगतियों तथा अनैतिक मूल्यों पर व्यंग्य किया गया है।

4.2. शैली

साहित्य में भाषा के साथ उसकी शैली बही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। डॉ. गुलाबराय के मतानुसार- "शैली अभिव्यक्ति के उन गुणों को कहते हैं, जिन्हें लेखक या कवि अपने मन के प्रभाव को समान रूप से दूसरों तक पहुँचाने के लिए अपनाता है।"[21] प्रत्येक साहित्यकार की अपनी शैली होती है, जिसके माध्यम से वह अपने विचारों को पाठकों के साथ साझा करता है। वही शैली रचनाकार की पहचान बनती है। इसलिए उसमें रचनाकार का व्यक्तित्व भी समाहित होता है। डॉ. श्यामसुंदरदास के अनुसार- "किसी कवि या लेखक की शब्द योजना, वाक्यांशों का प्रयोग, वाक्यों की बनावट, और उनकी ध्वनि आदि का नाम ही शैली है।"[22] शैली के विभिन्न प्रकार होते हैं, जैसे- वर्णनात्मक, आत्मकथात्मक, पूर्वदीप्ति, आदि। चंद्रकांता की कहानियों में वर्णनात्मक, चित्रात्मक, पूर्वदीप्ति तथा संवादात्मक शैलियाँ दिखाई देती हैं।

4.2.1 वर्णनात्मक शैली

वर्णनात्मक परंपरागत शैली है। यह आमतौर पर साहित्य में पाई जाती है। इसमें किसी दृश्य, वस्तु अथवा व्यक्ति का वर्णन किया जाता है। इसके उदाहरण कुछ इस प्रकार है-

'अकेली चारमीनार' कहानी में एक कस्बे के मध्यवर्गीय परिवार की गतिविधियों का वर्णन किया गया है –"दरवाजे के सामने, आँगन में अंजम्मा गोबर-पानी छिड़क चुकी थी।

चुटकी में सफेद मुग्गू भर-भर डिजाइनों काली रंगोली बना रही थी। राजू नहा धोकर धुली हाफसारी पहन चुकी थी। आँगन में एक तरफ अँगीठी पर रक्खे गरम पानी के हंडे में बाल्टी से पानी डालती जा रही थी।"[23]

'खुदा बाकी रहे' कहानी में समुद्र मंथन के पौराणिक कथा को वर्णित किया गया है। "उद्वेलन ! जब देवों-दैत्यों ने समुद्र-मंथन किया था तो अमृत-कुंभ के साथ क्या-क्या निकला था सागर के गर्भ से ? गैस, अग्निगंध, विद्युत....हलाहल विष । विष पिया या शिव ने और वह नीलकंठ बन गए। आगे मंथन से निकली लक्ष्मी, रंभा, कामधेनु, चौदह रत्न... और धन्वंतरि अमृत-कुंभ ले का।"[24] 'बात ही कुछ और' कहानी में सदानन्द जी के कार्यकलाप का वर्णन किया गया है -"यह सदानन्द काका की कहानी है। धर्म के नाम पर घर के ठाकुरद्वारे में माथा नवाते, प्राणायाम करते, सन्ध्या-सूर्यवन्दना, गायत्री-वन्दना नियमित करते, पर दोस्तों की महफिले भी आबाद रहती। गप्प-गोष्ठियाँ, सैर-सपाटे, छोटे-मोटे हंगामे ! किश्तियों-हाऊसबोटों में दोस्तों, साजिन्दों समेत तफरीह होती।"[25] 'नुराबाई' कहानी में नुराबाई के नाम पर टिप्पणी की गई हैं। उनका वर्णन किया गया है- "मुंजल के लंब-तड़ंग तने से टिकी, टुकड़ा-भर छांह में सिमटी, माथे पर हथेली की ओट दे सड़क के दोनों छोर बेसब्री से निहारती हुई नूराबाई, सोचों के समुंदर में डूबी हुई। दूर से देखो तो लगे, ज्यों फसल-भरी खेत पर खड़ा डरौना बिजूका हो! चार-छः खपच्चियाँ जोड़ बना आदमी का ढाँचा, जिस पर लाल नीले छापे वाले चिंगुड़ी-मिंगुड़ी साड़ी डाल दी गयी हो। सूरत में औरतों वाली कोई बुनावट नहीं। बिल्कुल सीध -सपाट

छड़ी समझ लो। कमर, नितंब, छातियाँ-सभी एकसार, और धड़ के ऊपर जुड़ा गंदुभ झिल्ली मढ़ा नाक-नक्श का ढांचा, जो कभी धारदार रहा हो शायद, नहीं तो माँ नूरा नाम क्यों देती?"[26]

4.2.2 चित्रात्मक शैली

चित्रात्मक शैली में व्यक्ति तथा परिवेश का चित्रण किया जाता है। यह प्रभावोत्पादक शैली है। इसमें दृश्य निहित होने के कारण दृश्य विधान शैली भी कहा जाता है। लेखिका ने इस शैली का प्रयोग कहानियों में किया है। इसके उदाहरण कुछ इस प्रकार है-

'सलाखों के पीछे' कहानी में मछलियों का चित्रांकन किया गया है- "आगे समतल नीले पानी में हरी, नीली, लाल कितनी हो मछलियाँ तैर रही है। निःशब्द नहीं, छपाछप छीटे उछालती, मुँह से पानी के फव्वारे छोड़ती।"[27] 'अकेली चारमीनार' कहानी में हैदराबाद में स्थित चारमीनार के परिवेश तथा वहाँ के आकर्षण को चित्रित किया गया है - "चारमीनार की पुरानी इमारत। चमकती धूप में सीधी खड़ी। अपनी हल्की गहरी झाइयों पर गर्व करती। वक्त के दागों को सीने में उतारती और जीने की होड़ में सीना ताने खड़ी हुई, आस पास की घनी बस्ती और कुनमुनाती भीड़ में अकेली। व्यस्त बाज़ार में चूड़ियों की खनक को सूंघती। निर्निमेष नज़रों से बसों की कतारों और कन्धे से कन्धा छुआती बौने लोगों की भीड़ को देखती चारमीनार सचमुच बड़ी लगती है।"[28]

'अकृत्रिम' कहानी में अस्पताल के एक कमरे और वहाँ के वातावरण के बाहर का दृश्यात्मक चित्रांकन किया है- "रूम नंबर पन्द्रह। डॉक्टर कहते हैं कि सारे हास्पिटल में यही कमरा बढ़िया है। सुंदर फर्नीचर, नए यू फोम के गद्दे, चिकना दूधिया पलंग, हरे डिस्टम्पर वाली ताजी दीवारें। और सब से ज्यादा कमरे की खिड़की के पार की जाली..... जाली के बाहर पेड़ पौधों की हलचल...... फुनगियों पर सूर्योदय का अक्स। सीधी धूप तो आपकी आँखे चुंधिया देती।"[29] भारत के नगरों में स्थित उद्यानों में ऊँचे वृक्ष की छाया में आराम करते लोग देखे जा सकते है। 'बावजूद इसके' कहानी में भी इसी प्रकार के वातावरण का दृश्य चित्रित किया गया है।-"मार्केट के बीचोबीच बना यह गोलाकार पार्क अक्सर सुबह-शाम झुंड-के-झुंड लोगों से भरा रहता है। बूढ़े लोग फुरसत में ठंडी हवा खाते, देश की राजनीति पर बहस करते रहते हैं। असमय मुटियाने लोग दौड-दौडकर जागिंग करते रहते हैं और जवान जोड़े झाड़ियों के बीच छिपे वेंवों पर बैठ, सिर से सिर जोड़कर, बिलावजह खिलखिलाते रहते हैं।"[30]

लेखिका ने 'अनार के फूल' कहानी में चन्द्रभागा नदी के किनारे बने मकानों, झोपड़ियों के चित्र अंकित किए हैं। जिसमें एक चित्रकार की कला की सराहना की गई है- "यहाँ, चन्द्रभागा के किनारे बैठ, ऊँचे टीलेनुमा धरती पर इधर उधर छितरे कच्चे पक्के मकानों को देखकर लगता है, ज्यों अचानक किसी गर्जन भरी घटाटोप रात्री में, धरती की कोख से कुकुरमत्ते फूट आये हो, चूना पुत्ते छोटे-छोटे घर या खड़िया-मिट्टी-गोबर लिपी दीवारो पर, कहीं भूरी-गहरी लाल मिट्टी कही फूस पातर-फाड़-झंखाड़ो से छवायी छतें, रूई के ढेरों बीच झाँकते नीले आकाश के नीचे हरिया में कालीनों पर मुँह मारते ढोर डंगर और हिमालय की ऊँची

बर्फिली चोटियों की विस्मय से देखती चन्द्रभागा की बैचेन हरहराहट। यों कहें, किसी अदृश्य चित्रकार की बेजोड़ चित्रकारी।"[31]

4.2.3 पूर्वदीप्ति शैली

इस शैली के कथ्य को वर्तमान से अतीत में ले जाने हेतु प्रयोग किया जाता है। इसमें पूर्व प्रसंग का चित्रण किया जाता है। यह पात्र के स्मृति के द्वारा किया जाता है। "पात्रों के मानसिक संघर्ष को दिखलाने के लिए कहानीकार (उपन्यासकार) उन्हें अतीत की स्मृतियों से जोड़ता है और वर्तमान परिवेश के प्रति व्यक्त प्रतिक्रियाओं का आकलन करता है।"[32] इसके उदाहरण कुछ इस प्रकार है-

'खून के रेशे' कहानी के पापा का जीवन पूर्वदीप्ति शैली में प्रस्तुत किया गया है- "आज सत्तर साल की आयु में जब वे पीछे की ओर देखते हैं तो अँधेरा ही नजर आता है। भूली-बिसरी बातें शीशा लगे माँजे की तरह हृदय में अब? यादों की लाशें। नहीं, नहीं वह भी नहीं। लाशों की राख।"[33] 'निःसंग' कहानी की मिस सुद के परिवार की विवशता चित्रित है- "उसे धूप में तपी वर्षा में आँसू बहाती अपनी छोटी-सी बरसाती याद आ जाती है। बरसाती में सास लेनेवाले कीड़े-मकोड़े से बिलबिलाते भाई-बहन। दस टाँकों जुडी मटियाली साड़ी में माँ का असमय ही झुर्रियाता चेहरा, पुरानी बदरंग निकर पहने फिस के लिए गिड़गिड़ता भाई, दो फ्राकों को क्रम से धोती सुखाती उदास आँखों वाली बहन....।"[34]

4.2.4 संवादात्मक शैली

यह शैली कहानी के कथ्य को गति प्रदान करती है। यही इसकी प्रमुख विशेषता है। चंद्रकांता की कहानियों में इस शैली का प्रयोग किया गया है। इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार ही-

'दहलीज पर न्याय' कहानी में रुक्की की संवेदना को समझते हुए, उसकी मदद करने की इच्छा से एक औरत कहती है- "अबा जाओ, शाम तक नेडे के गाँव पहुँच जाओगी। वहाँ सरदार अतरसिंह की कोठी है। उधर जाओ, कुछ काम-धाम देगा। खाता-पीता आदमी है, धर्म-कर्म में विश्वास है। सुना है, सच्चा आदमी है।" कंधे पर हाथ रखकर वह स्नेह से बोली, "भगवान और इंसान दोनों ने तेरे साथ बेइंसाफी की है। तू घर से निकल पड़ी है अकेली औरत की हर तरफ से मार है। मैं नहीं जानती, तुझे न्याय मिलेगा या नहीं, पर गिद्ध-चीलें तुझे नोचेंगे जरूर। मर्द जात पर मेरा भरोसा नहीं है, पर हो सकता है, इस छोरे की किस्मत से तुझे कोई भगवान मिल जाये।"[35]

'नुराबाई' कहानी में जब जद्देशाह नूरा के साथ जबरदस्ती करने की कौशिश करता है, तब वह उसका विरोध करती है। तब जद्देशाह कहता है- "नूराबाई, तुझे गुमान किस बात का? चार हरुफ तू पढ़ी नहीं। कोई कस्ब हाथ में होता तो सी-पिरोकर कुछ कमा लेती। दो घर वर्तन घिसने से तू हांफने लगती है। गुस्सा-हेकड़ी उसे सोहते हैं, जिसके पल्ले पैसा धेला हो। तू मेरे कहे रह और बच्चों को बढ़ाकर, खाबंद की दवा दारू कर और बची-खुची ठस्से से गुजार।"[37]
'सूरज उगने तक' कहानी में जब विमल नौकरी पर वापस जाने से इंकार करता है, तब पिताजी

का संवाद है- “मेरी मानो तो अब भी कुछ नहीं बिगड़ा, जाकर दर साहब से अपनी बद- तमीजी के लिए माफ़ी माँग लो। भले आदमी हैं, माफ़ कर देंगे। कहो, तो मैं तुम्हारे साथ चलूं।”[38]

चंद्रकांता की भाषिक संरचना में भाषा और शैली में समन्वय दिखाई देता है। उन्होंने तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशज शब्दों का प्रयोग प्रसंग एवं पात्र को केंद्र में रखकर किया हैं। साथ ही मुहावरे, कहावते तथा लोकोत्तियों का भी प्रयोग उनकी कहानियों में परिलक्षित होता है। कहानियों में प्राकृतिक बिम्बों तथा व्यंग्य का भी उपयोग किया है, जिससे उनकी कहानियाँ अधिक प्रभावी दिखाई देती है। उन्होंने वर्णनात्मक, संवादात्मक, पूर्वदीप्ति तथा चित्रात्मक शैली का प्रयोग किया है। अत: चंद्रकांता की भाषिक संरचना उनके साहित्य को चरम सीमा तक पहुँचाती है।

चंद्रकांता की भाषा सरल तथा सटीक है। उनकी भाषा मन को छू जाती है। उनकी वाक्य रचना में केवल शब्द नहीं होते, उनमें एहसास होता है। वे शब्द आत्मा को स्पर्श करते हैं। उनकी भाषा सरल होने के साथ-साथ उसमें गहन अर्थ भी छीपे होते हैं। उनके लिखावट के माध्यम से उनका युगीन परिवेश आंखों सामने उमड़ पड़ता है। अत: लेखिका की भाषा संवेदनशील तथा मनमोहक है।

संदर्भ

1. तेजपाल चौधरी, भाषा और भाषाविज्ञान, पृ. 185
2. प्रसाद, प्र. संपादक कालिका, बृहत हिंदी कोश, पृ. 259
3. डॉ. श्यामसुंदरदास, साहित्यलोचन, पृ. 259
4. उप्रेती, डॉ. कुंदनलाल, लोकसाहित्य के प्रतिमान, पृ. 182
5. वर्मा, प्र.सं. धीरेंद्र, विश्व हिंदी कोश खंड-2, पृ.408
6. सिंह, डॉ. केदारनाथ, आधुनिक हिंदी कविता में बिंब-विधान, पृ. 13
7. चंद्रकांता, सूरज उगने तक, पृ. 28
8. चंद्रकांता, ओ सोनकिसरी, पृ. 88
9. चंद्रकांता, सलाखों के पीछे, पृ. 145
10. मिश्र, डॉ. भगीरथ, काव्यशास्त्र, पृ. 294
11. चंद्रकांता, सलाखों के पीछे, पृ. 20
12. चंद्रकांता, सलाखों के पीछे, पृ. 14
13. चंद्रकांता, दहलीज पर न्याय, पृ. 81
14. चंद्रकांता, सूरज उगने तक, पृ. 201
15. चंद्रकांता, काली बर्फ, पृ. 127
16. परसाई, हरिशंकर, सदाचार की ताबीज, पृ. 10

17. त्यागी, रवींद्रनाथ, प्रतिनिधि व्यंग्य रचनाएँ, पृ. 320

18. चंद्रकांता, सलाखों के पीछे, पृ. 101

19. चंद्रकांता, सलाखों के पीछे, पृ. 128

20. चंद्रकांता, सूरज उगने तक, पृ. 72

21. डॉ. गुलाबराय, सिद्धांत और अध्ययन, पृ. 180

22. डॉ. श्यामसुंदर दास, साहित्यलोचन, पृ. 9

23. चंद्रकांता, सलाखों के पीछे, पृ. 45

24. चंद्रकांता, ओ सोनकिसरी, पृ. 62

25. चंद्रकांता, सूरज उगने तक, पृ. 105

26. चंद्रकांता, दहलीज पर न्याय, पृ. 119

27. चंद्रकांता, सलाखों के पीछे, पृ. 8

28. चंद्रकांता, सलाखों के पीछे, पृ. 38

29. चंद्रकांता, सलाखों के पीछे, पृ. 145

30. चंद्रकांता, दहलीज पर न्याय, पृ. 76

31. चंद्रकांता, सूरज उगने तक, पृ. 228

32. रश्मी, डॉ. इंदु, नई कहानी का स्वरूप विवेचन, पृ.-169

33. चंद्रकांता, सलाखों के पीछे, पृ. 13

34. चंद्रकांता, सलाखों के पीछे, पृ. 145

35. चंद्रकांता, सलाखों के पीछे, पृ. 90

36. चंद्रकांता, दहलीज पर न्याय, पृ. 17

37. चंद्रकांता, दहलीज पर न्याय, पृ. 123

38. चंद्रकांता, सूरज उगने तक, पृ. 18

उपसंहार

साहित्य, साहित्यकार तथा समाज तीनों एक दूसरे के पूरक होते हैं। साहित्यकार द्वारा सृजित साहित्य उनके युगीन परिवेश का बोध करवाता है। युगीन परिवेश का अध्ययन करने के लिए उसके विविध आयामों के बारे में जानना आवश्यक हैं। सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों के बोध से ही संपूर्ण युग बोध का परिचय हो पाता है। युगबोध का आधार स्तंभ समाज होता है। समाज में व्याप्त मान्यताएं, विचारधारा, समस्याएँ, रूढ़ियाँ यह सभी घटक हमे युगबोध को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। किसी काल की समसामयिक परिस्थितियों के परिज्ञान को ही युगबोध कहा जाता है। साहित्यकार अपने युगबोध को अपने साहित्य के माध्यम से लोगों के समक्ष उजागर करता है।

किसी भी युग में विभिन्न प्रकार की घटनाएं घटित होती हैं। उनमें से कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं के आधार पर युग का नाम भी रखा जाता है, जैसे- महाभारत युग। मानव तथा समाज युग के केंद्र बिंदु होते हैं। युगबोध न केवल घटनाओं से परिचीत करवाता है, अपितु संस्कृति, विचारधारा, चली आ रहीं रुढियां, मान्यताएं, इन सभी का सटीक दृश्य हमारे सामने प्रस्तुत करता है।

परिवर्तनशीलता युगबोध की प्रमुख विशेषता रही है। बदलते समय के साथ युगीन परिस्थितियों में भी परिवर्तन आ जाता है। मनुष्य द्वारा निर्मित तथा उद्देश्य रहित संस्था समाज एवं समाज से संबंधित स्थितियाँ,व्यक्ति तथा घटनाएँ सामाजिक कहलाती है। किसी भी युग की सामाजिक स्थिति पर उसके सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक तथा राजनीतिक परिवेश का प्रभाव

रहता है। संस्कृति एवं धर्म समाज की निर्मिति के महत्वपूर्ण अंग हैं। समाज में चली आ रही परंपरा, रीति रिवाज, त्यौहार, मर्यादा, इन सभी को संस्कृति के नाम से संबोधित करते हैं। धर्म मनुष्य द्वारा निर्मित होता है। धर्म से तात्पर्य ईश्वर के प्रति श्रद्धा के साथ-साथ कर्तव्य, दायित्व भी है। सर्वश्रेष्ठ मानवता का धर्म होता है। यही समाज को विकास की ओर अग्रसर करता है। आर्थिक तथा राजनीतिक बोध का संबंध घनिष्ट होता है। समाज हमेशा ही आर्थिक परिस्थिति से प्रभावित रहा है। अर्थ से तात्पर्य धन है। अर्थ व्यवस्था ही लोगों में भेद-भाव उत्पन्न करती है। इस भेद-भाव का मूल कारण भ्रष्ट नेता की स्वार्थी वृत्ति होती है। अपनी राजनीति को चलाने के लिए वे लोगों को मोहरे के समान उपयोग करते है। लोगों की एकता को भंग कर देते है। राज्य को संचालित करनेवाला नियम राजनीति कहलाता है। इसका मुख्य उद्देश्य देश को विकास की ओर ले जाना है। किंतु नेता इस राजनीति को अपने स्वार्थ के अनुसार चलाते है। सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक तथा राजनीतिक समस्याओं तथा उनके परिणामों को लोगों से अवगत कराने का कार्य एक साहित्यकार करता है। उसका एक ही उद्देश्य होता है कि लोगों को उनके परिवेश से परिचित करवाना तथा भविष्य में उत्पन्न होनेवाली समस्याओं के प्रति जागरूक कराना।

चंद्रकांता एक चर्चित समकालीन लेखिका है। उनके साहित्य में उनके परिवेश की समसामयिक परिस्थितियों का ज्ञान परिलक्षित होता है। उनका साहित्य उनके समय क साक्ष्य है। उनकी कहानियों का मुख्य केंद्र समाज रहा है। उनकी कहानियों में सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक तथा राजनीतिक समस्याएं परिलक्षित होती हैं। इन समस्याओं के माध्यम से

उनके समय के समाज का चित्र हमारे सामने उमड़ता है। उनकी मान्यताएं, विचारधारा तथा रूढ़ियों से परिचित हो पाते हैं। इससे हमे उन समस्याओं का परिणाम, समाधान तथा उन समस्याओं की वर्तमान स्थिति का ज्ञान प्राप्त होता है। इसके माध्यम से भविष्य को केंद्र में रखकर समाज के विकास के लिए विचार-विमर्श किया जा सकता है। अत: चंद्रकांता की कहानियों में उनके समय का संपूर्ण युगबोध हमे दृष्टिगोचर होता है।

समाज की सर्वश्रेष्ठ इकाई परिवार है। भारतीय समाज में संयुक्त परिवार की मुख्य भूमिका रही है। लेकिन आज संयुक्त परिवार एकल परिवार में परिवर्तित हो रहे है। मानवीय संबंधों में तनाव का माहौल उत्पन्न हो रहा है। परिवार के सदस्यों के विचार एक-दूसरे से मेल नहीं खा रहे है, जिस कारण परिवार बिखर रहे है। आज का युवावर्ग अपनी जिम्मेदारियों से पीछे हट रहा हैं। परिवार को एकजुट रखने के बजाय उन्हें अपनों से दूर ले जा रहे हैं।

आज मनुष्य मूल्यहीन बनता जा रहा है। नैतिक मूल्य जैसे लुप्त ही हो गए हैं। उनकी जगह घृणा, हिंसा, क्रोध, स्वार्थ, घमंड, इन सभी ने ले ली हैं। मनुष्य अपने अहं के चक्कर में अपना सब कुछ तबाह कर रहा है। रिश्ते-नातों का महत्व घट रहा हैं और पैसों से रिश्ता जुड़ रहा हैं। इसका प्रमुख कारण पश्चिमी संस्कृति हैं। लोग अपनी संस्कृति को तुच्छ एवं विदेशी संस्कृति को मॉडर्न नाम देते है। उनके अनुसार मॉडर्न कपड़े पहनना ही सबकुछ है। अपने घर के बुजुर्ग लोगों से उन्हे शर्मिंदगी महसूस होती है। बच्चों पर भी टी. व्ही. का प्रभाव अधिक हो रहा है। वे टी. व्ही पर जो भी देखते है, उसे सच मान लेते है और उसी के अनुरूप व्यवहार करने लगते है।

विवाह जैसा पवित्र रिश्ता भी आज एक खेल बनकर रह गया है। विवाह के तुरंत पश्चात तलाक लिया जाता है। विवाहित होते हुए पुरुष या स्त्री अन्य स्त्री या पुरुष से संबंध स्थापित करते है। आज की यह एक गंभीर समस्या बन गयी है। उन्हें अपने बच्चों का भी ख्याल नहीं आता। बच्चों पर इसका क्या परिणाम हो सकता है, इसका विचार भी वे नहीं करते। इस कारण परिवार का माहौल बिगड़ जाता है। पति-पत्नी के बीच मन-मुटाव पैदा हो जाता है और रिश्ता टूट जाता है।

पुरुष प्रधान समाज की जड़े बहुत गहरी है। आज तक उसमें अधिक परिवर्तन नज़र नहीं आता। भले ही स्त्रियों को आगे बढ़ने की बात हो रही है, किंतु यह केवल एक दिखावा है। मानसिक रूप से आज भी स्त्री को काबिल नहीं समझा जाता। अधिकतर पुरुषों के विचार संकुचित है। स्त्री की प्रगति उन्हें अपने सफर में रुकावट सी महसूस होती है। आज स्त्री हर एक क्षेत्र में तरक्की करती दिखाई देती है। लेकिन आज भी ऐसी स्त्रियाँ हैं, जिन्हें अपने विचारों को साझा करने की अनुमती नहीं है। शिक्षित होने के बावजूद भी पुरुष के नीचे दबकर रह जाती है। इसका एक कारण हमारी रूढ़िवादी धारणा भी रही है। बचपन से ही हमें हमारी सीमा से अवगत कराया जाता है। पुरुष को सभी हक्क बचपन में ही दे दिए जाते हैं, किंतु स्त्रियों को बचपन से ही उनके हक्क से वंचित कर दिया जाता है।

आज स्त्री का शोषण बहुमात्रा में हो रहा है। बच्ची से लेकर बुढी औरत तक इसका शिकार हो रहे है। हर जगह मानसिक तथा दैहिक शोषण होता नज़र आता है। आज स्त्री का अकेले घूमना भी दुश्वार हो गया है। हर जगह उसे प्रताड़ित किया जाता है। लेकिन आज न

केवल स्त्रियों का अपितु पुरुषों का भी शोषण होता नज़र आता है। स्त्रियाँ अपने अधिकारों का गलत फ़ायदा भी उठाती हैं। पुरुषों को मानसिक रूप से ही नहीं शारीरिक रूप से भी प्रताडित करती हैं। आज न केवल स्त्रियों का शोषण हो रहा है बल्कि पुरुष भी इसका शिकार होते नजर आते है।

धार्मिक आडंबर भी बहुत बढ़ रहा है। शिक्षित लोग भी इसका शिकार हो रहे है। इससे यह प्रमाणित हो जाता है कि केवल निरक्षरता ही इसका मूल कारण नहीं है। आज युवा पीढ़ी शिक्षित है तथा सही और गलत के बीच का अंतर जानने की क्षमता उनमें हैं। लेकिन फिर भी वे अंधविश्वास से प्रभावित हैं। शायद इसका कारण परंपरा से चली आ रही मान्यताएं है, जिनसे वे पीछा नहीं छूटा पा रहे हैं।। परिवार के चलते वे भी इनपर भरोसा करने लगते हैं। उनपर विचार विमर्श करने की जरूरत नहीं समझते। कभी-कभार उनके मन में डर भी उत्पन्न हो जाता है, कि यदि वे नहीं मानेंगे तो कही उनके साथ बुरा तो नहीं होगा? इस दौर से भी आज की युवा पीढी गुजरती है।

आज आतंकवाद ने एक भयावह रूप धारण कर लिया है। बच्चा-बच्चा उसमें सहभागी होता दिखाई देता है। उन्हे सही गलत का अंतर समझ में नहीं आता। केवल धर्म के नाम पर वे यह सब करते है। बचपन से ही उन्हे मानसिक तौर पर प्रताड़ित किया जाता है। जिसके द्वारा विपरीत धर्म के प्रति उनके मन में घृणा जागृत होती है। यही कारण है कि आंतकवाद बहुत तेजी से देश में फैल रहा है। आंतकवादी बनने का अन्य कारण है कि वे अपने उपर होते अत्याचार सह नहीं पाते। उनकी सहनशक्ति दम तौड देती है। जिसके चलते वे आंतकवाद का रास्ता चुन लेते है।

चंद्रकांता की कहानियों में सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक तथा राजनीतिक समस्याएं दृष्टिगोचर होती है। इन समस्याओं के परिणाम एवं समाधान भी परिलक्षित होते है। उनकी कहानियों के माध्यम से उनके युगबोध का अध्ययन किया गया हैं।। साथ ही उनके समय के युगबोध तथा वर्तमान युगबोध के साथ तादाम्य स्थापित होता है। समकालीन परिस्थितियाँ आज परिवर्तित होकर विक्राल रुप धारण करती नजर आ रहीं है।

संदर्भ-सूची

आधार ग्रंथ

1. चंद्रकांता, ओ सोनकिसरी, अमन प्रकाशन, कानपुर, 2013
2. चंद्रकांता, काली बर्फ, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013
3. चंद्रकांता, दहलीज पर न्याय, अमन प्रकाशन, कानपुर, 2015
4. चंद्रकांता, सूरज उगने तक, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1994
5. चंद्रकांता, सलाखों के पीछे, अमन प्रकाशन, कानपुर, 2014

सहायक ग्रंथ

1. अग्रवाल, डॉ. वासुदेवशरण, कला और संस्कृति, प्रभात प्रकाशन, 2020
2. उप्रेती, डॉ. कुंदनलाल, लोकसाहित्य के प्रतिमान, भारत प्रकाशन मंदिर, अलिगढ़, 1986
3. चतुर्वेदी कुमार संतोष, भारतीय संस्कृति, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली, 2011
4. चतुर्वेदी, जगदीश्वर, स्त्रीवादी साहित्य विमर्श, अनामिका पब्लिशर्स ऐंड डिस्ट्रिब्यूटर्स, ली. दिल्ली, प्र. स. 2000
5. चौधरी, तेजपाल, भाषा और भाषाविज्ञान, विकास प्रकाशन, कानपुर
6. झां, डॉ. उषा, हिंदी कहानी और स्त्री विमर्श, साक्षी प्रकाशन, जयपुर, सं. 2005

7. डॉ. श्यामसुंदरदास, साहित्यलोचन, इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, 1961
8. डॉ. गुलाबराय, सिद्धांत और अध्ययन, प्रतिमा प्रकाशन, दिल्ली
9. डॉ. एन. मोहनन, उत्तरशती का हिंदी उपन्यास, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2004
10. डॉ. राधाकृष्णन, अनुवादक- विराज, धर्म और समाज, राजपाल अण्ड सन्स, दिल्ली, सं. 1975
11. डॉ. गुलाबराय, भारतीय संस्कृति, रविंद्र प्रकाशन , ग्वालियर, 1974-75
12. त्यागी, रवींद्रनाथ, प्रतिनिधि व्यंग्य रचनाएँ, राजकमल प्रकाशन, 2014
13. परसाई, हरिशंकर, सदाचार की ताबीज, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणासी, 1967
14. पाटिल, डॉ.पांडुरंग, आंचलिक उपन्यासों में लोक संस्कृति, विद्या प्रकाशन, कानपुर, 2015
15. पाण्डेय, डॉ. कमलाप्रसाद, हिंदी काव्य की सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, रचना प्रकाशन, इलाहबाद, प्र. सं. 1992
16. भगवतसिंह जी – भगवद्गोमण्डल : भाग-५
17. भारद्वाज, राहुल, नवें दशक की हिंदी कहानी में मूल विघटन, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 1999
18. मिश्र, डॉ. भगीरथ, काव्यशास्त्र, विश्वविध्यालय प्रकाशन, वाराणासी, 1984
19. मिश्र, डॉ. विद्यानिवास, साहित्य का खुला आकाश, विकास प्रकाशन, कानपुर, 2007

20. मिश्र, विद्यानिवास, नदी नारी और संस्कृति, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 1988

21. मित्तल, डॉ. सुशीला, आधुनिक हिंदी कहानीयों में नारी की भूमिकाएं, अनुपमा प्रकाशन, बंबई, प्रथम सं. 1974

22. यादव, डॉ. वीणा रानी, हिंदी उपन्यासों में स्त्री अस्मिता की अभिव्यक्ति, अकादमिक प्रतिभा, दिल्ली, 2006

23. रश्मी, डॉ. इंदु, नई कहानी का स्वरूप विवेचन, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, 1992

24. राजपाल, डॉ. हुकुमचंद, आधुनिक काव्य में जीवन मूल्य, पब्लिकेशन भारतीय संस्कृत भवन, जालंदर

25. राधाकृष्णन, सत्य की खोज, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1963

26. वर्मा, महादेवी, मेरे प्रिय संभाषण, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, 1989

27. वर्मा, महादेवी, श्रृंखला की कड़िया, लोक भारती प्रकाशन, इलाहबाद, प्र. सं. 1999

28. विमल, प्रसाद, गंगा, आधुनिक हिंदी कहानी, ग्रंथालोक, 2002

29. विद्यावाचस्पति, इंदिरा, भारतीय संस्कृति का प्रवाह, गोविंदराम हासानंद, 2020

30. शर्मा, विरेन्द्रप्रकाश, भारतीय सामाजिक संस्थाएँ, पंचशील प्रकाशन जयपुर, सं. 1997

31. शर्मा, डॉ. महादेव प्रसाद. राजनीति के सिद्धांत, किताब महल, इलाहबाद, 1967

32. शर्मा, डॉ. रामविलास, आस्था और सौंदर्य, राजकमल प्रकाशन, 1950

33. शास्त्री चतुरसेन, वैदिक संस्कृति और पौराणिक प्रभाव, समार्थ प्रकाशन, 1986

34. शुक्ल, रामचंद्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्राचारिणी सभा काशी, 2007

35. साने गुरुजी, भारतीय संस्कृति पर, पब्लिट डोमॅन बुक्स, 2016

36. सारडा, डॉ. विटठलदास, सातवे दशकोत्तर कहानियों में पारिवारिक संबंध, अन्नापूर्ण प्रकाशन, कानपुर, 1999

37. सिंह, दिनकर, रामधारी, साहित्यमुखी, उदयांचल प्रकाशन, दिल्ली, 1968

38. सिंह, डॉ. मंजुलता, हिंदी कहानी में युगबोध, पराग प्रकाशन, दिल्ली, 1994

39. सिन्हा, मृदुला, सामाजिक सरोकार, यश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रिबूटेर्स, नई दिल्ली, 2017

40. सिन्हा डॉ. सुरेश, हिंदी उपन्यासों में नायिका की परिकल्पना, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली, 1964

41. सिंह, डॉ. केदारनाथ, आधुनिक हिंदी कविता में बिंब- विधान, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली

42. क्षेमचंद सुमन, साहित्य विवेचन, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, 1952

43. त्रिपाठी, डॉ. शिवसागर, रामायण एवं महाभारत का शाब्दिक विवेचन देवनागर प्रकाशन, जयपुर, 1986

प्रत्रिकाएं

1. सामान्य ज्ञान दर्पण, सं- मार्च 2008
2. हंस पत्रिका, अरविंद जैन, मई 1998

शब्दकोश

1. श्री नवल जी, नालंदा विशाल शब्द सागर, आदर्श बुक डिपो, कैरालबाग, नई दिल्ली, 1989
2. नवलजी, नालंदा विशाल शब्द सागर, आदर्श बुक डिपो, दिल्ली, 1998
3. प्रसाद, कालिका (संपा.). बृहत हिंदी कोश, ज्ञानमंडल लिमिटेड, बनारस, 2001
4. बहारी (डॉ.) हरदेव, प्राचीन भारतीय संस्कृति कोश, विद्या प्रकाशन, दिल्ली, 1988
5. बाहरी, डॉ. हरदेव, लोकभारती राजभाषा शब्दकोष (हिन्दी-अंग्रेजी), लोकभारती प्रकाशन
6. बुल्के, फादर कामिल, बाहरी, डॉ. हरदेव बाहरी 'अंग्रेजी- हिन्दी कोष' एस. चन्द एण्ड कम्प्नी प्रा. लि. नई दिल्ली
7. बाहरी, डॉ. हरदेव, राजपाल हिंदी शब्दकोश, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 2013
8. बाहरी, डा. हरदेव, शिक्षार्थी हिंदी शब्दकोश, राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली, 1990
9. वर्मा, धीरेंद्र, हिंदी साहित्य कोश, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वारणासी, 1993

10. वर्मा, रामचंद्र, हिंदी मानक कोश, खंड-4, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1965

11. सक्सेना, सं. राम प्रकाश, वर्धा हिंदी शब्दकोश, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविध्यालय, 2013

12. त्रिपाठी, डॉ. रामप्रसाद, विश्व हिंदी कोश, नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी